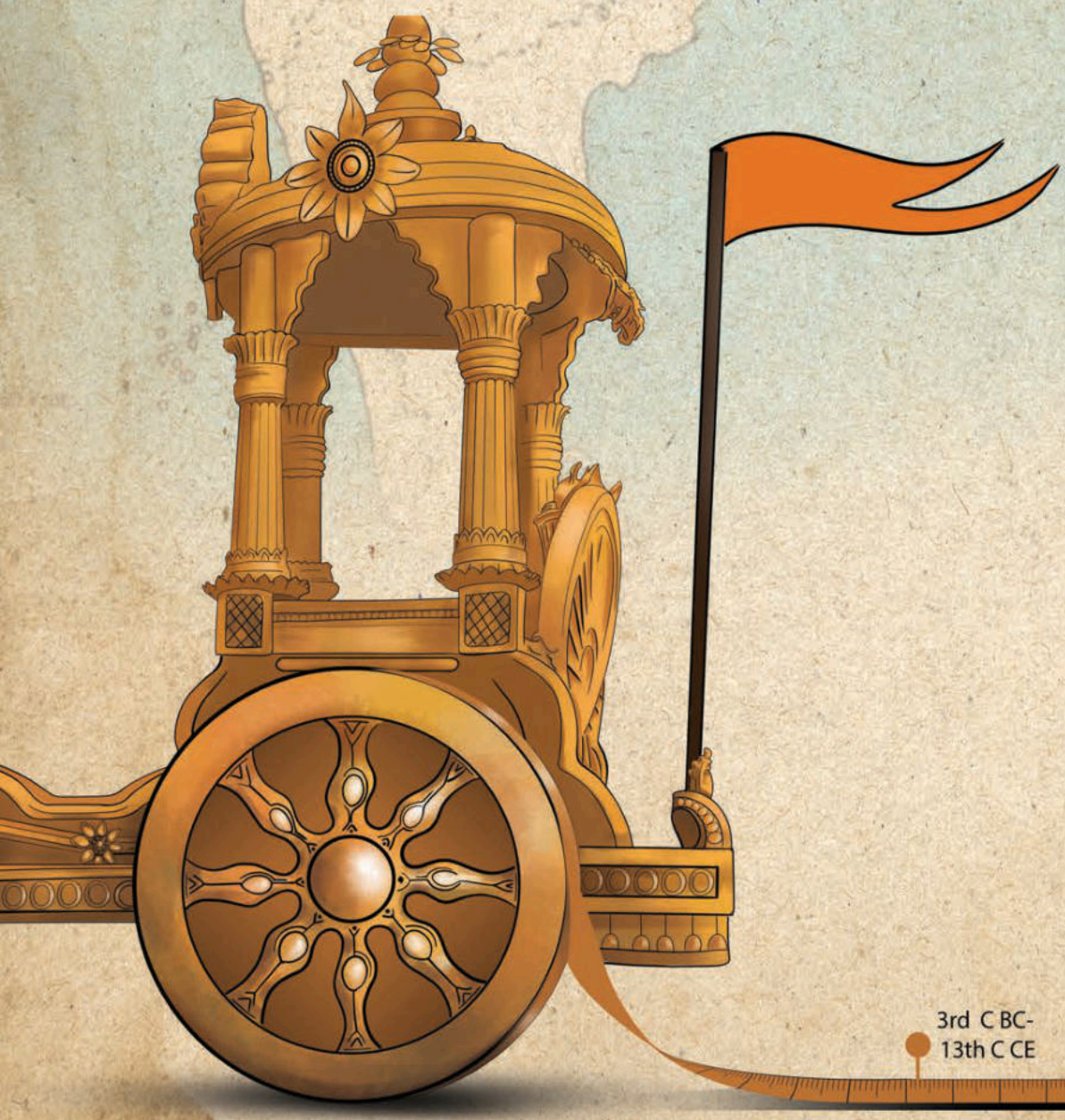


मध्यकालीन भारत MEDIEVAL INDIA EXHIBITION

'**Glory of Medieval India**: Manifestation of the Unexplored-Indian Dynasties, 8th - 18th Centuries'

30th jan 2023



Samay ka Pahiya

Yudh Rath





परिचय

INTRODUCTION

प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता के गौरव ने बहुत ध्यान आकर्षित किया है। यात्रियों और विद्वानों ने भारत की सभ्यता और संस्कृति पर अपार साहित्य की रचना की है। यद्यपि युवा पीढ़ी को देश के गौरवशाली अतीत से परिचित कराने का प्रयास किया गया है, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। 'मध्यकालीन भारत का गौरव: अज्ञात भारतीय राजवंशों पर आधारित प्रदर्शनी, 8वीं -18वीं शताब्दी तक' इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है, जिससे सभी आयु वर्ग के लोगों को लाभ होगा, विशेष रूप से इस प्रदर्शनी का उद्देश्य युवाओं को आकर्षित करना है। ताकि वह भारतीय गौरव एवं ज्ञान परंपरा से अपने आपको परिचित कर सकें, हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक इतिहास के साथ संबंध स्थापित कर सकें।

आधुनिक यूरोप में पुनर्जागरण एवं ज्ञानोदय के साथ ही मध्य युग को अक्सर अंधविश्वास, अज्ञानता और किसी भी सांस्कृतिक या वैज्ञानिक प्रगति की कमी के 'अंधेरे युग' (डार्क एज) कहा गया था। इसी प्रकार की धारणाएँ भारत के मध्यकालीन अतीत के सम्बन्ध में भी अपनाई गई थीं। जिसे 'पूर्वी निरंकुशता' और राजतंत्र की धारणा करार देते हुए भारतीय राजनीतिक परम्पराओं में इसे जोड़ा गया।

हालाँकि, बहुत गंभीरता से परीक्षण करने पर पता चलता है कि यह विचार सही नहीं है। भौतिक और गैर-भौतिक संस्कृति दोनों के संदर्भ में, भारत की सभ्यता राजनीतिक, धार्मिक, कलात्मक और वैज्ञानिक पहलुओं में अपने प्राचीन अतीत के साथ निरंतरता बनाए रखती है।

निरंतर हुए आक्रमणों और संसाधनों की लूट, और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों के विनाश के बावजूद, देश अपनी अधिकांश भौतिक और अध्यात्मिक विरासत को संरक्षित करने में सफल रहा है। मध्य काल में भारत पर शासन करने वाले राजवंशों ने कलात्मक रचनात्मकता, बौद्धिक विकास, वैज्ञानिक प्रगति, और सबसे बढ़कर, लोकतंत्र की भावना और विचार के विभिन्न प्रकारों की सहनशीलता की संस्कृति को बढ़ावा दिया।

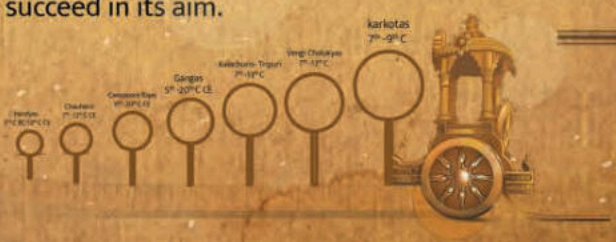
यह उनके शासन काल में ही संभव था कि राष्ट्र ने वास्तुकला और धातु विज्ञान जैसे विभिन्न विज्ञानों में पर्याप्त प्रगति की। चिनाई, वास्तुकला, धातु-ढलाई के चमत्कार इस युग में की गई वैज्ञानिक प्रगति का संकेत देते हैं। इस अवधि के दौरान निर्मित मूर्तियां, पेंटिंग और कला और साहित्य के अन्य कार्य वर्तमान समय तक अपने आप में चमत्कार बने हुए हैं। इतना कहना पर्याप्त होगा कि इस अवधि के कई स्मारक यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हैं। इन सबसे ऊपर, लोकतांत्रिक स्थानीय स्वशासन की दिशा में सफल प्रयोग किए गए, और विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक विचारों को मानने वाले न केवल शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में रहे, बल्कि इन शासक राजवंशों द्वारा उन्हें संरक्षण और प्रोत्साहन भी दिया गया। यह भारत की सभ्यता की अंतर्निहित लोकतांत्रिक भावना को उजागर करता है।

8वीं से 18वीं शताब्दी ईस्वी तक, एक हजार वर्ष के कालखंड को शामिल करते हुए, इस प्रदर्शनी का उद्देश्य भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के शासक राजवंशों के अधीन हर किसी को और विशेष रूप से हमारी युवा पीढ़ी को भारत की भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की बहुआयामी प्रगति -- कलात्मक, वैज्ञानिक या साहित्यिक और बौद्धिक -- से परिचित कराना है।
यदि यह विनम्र प्रयास अपने उद्देश्य में सफल होता है, तो यह हमारे लिए बड़ा संतोषजनक होगा।

Since time immemorial, the glory of the Indian civilization has attracted much attention. Travelers and scholars have produced an immense amount of literature on India's civilization and culture. Although attempts have been made to acquaint the younger generations with the nation's glorious past, a lot yet remains to be done. This exhibition, entitled 'Glory of Medieval India: Manifestation of the Unexplored- Indian Dynasties, 8th - 18th Centuries', is a humble attempt in this direction, and while open to one and all, it especially focuses on youngsters, aiming to acquaint them with the history of our civilization and culture in a manner with which they can relate, and appreciate.

With the advent Renaissance an Enlightenment in modern Europe, the middle ages were often branded as a 'dark age' of superstition, ignorance, and lack of any cultural or scientific progress whatsoever. Similar notions were adopted regarding India's Medieval past too. The notion of 'Oriental Despotism' and autocracy was applied to Indian political traditions. However, a closer examination reveals that this is hardly the case. In terms of both material and non-material culture, India's civilization has a great measure of continuity with its Ancient past, in political, religious, artistic and scientific aspects. Despite invasions and plunder of her resources, and destruction of indigenous knowledge systems, the country managed to preserve much of its material and non material heritage. The dynasties that ruled India in the Medieval period fostered a culture of artistic creativity, intellectual growth, scientific progress, and above all, a spirit of democracy and toleration of various strands of thought. It was under their rule that the nation made substantial strides in various sciences such as architecture and metallurgy. Marvels of masonry, architecture, metal-casting indicate the scientific advances made in this phase. Sculptures, paintings and other works of art and literature produced during this period continue to be wonders in their own right up to the modern times. Suffice it to say that many of the monuments dating from this period are UNESCO world heritage sites. Above all, successful experiments were made in the direction of democratic local self-government, and various religious and philosophical schools of thought not merely coexisted peacefully, but were even given patronage and encouragement by these ruling dynasties, highlighting the underlying democratic spirit of India's civilization.

Covering a span of thousand years, from the 8th to 18th Century AD, this exhibition aims to acquaint everyone, and especially our younger generation, with the multi- dimensional progress, both material and spiritual, whether artistic, scientific or literary and intellectual, made under the ruling dynasties from various regions across the Indian subcontinent during this period. It will be the object of our greatest satisfaction, should this humble endeavour succeed in its aim.





मणिपुर साम्राज्य का ध्वज
Flag of Manipur Kingdom



निंगथौजा राजवंश
Ningthoujas

पहली से 20वीं शताब्दी ई. लगभग 2000 वर्षों तक शासन किया
(first-20th Century CE – reigned for nearly 2000 years)

निंगथौजा राजवंश, जिसे मंगंग वंश के रूप में भी जाना जाता है, में मणिपुर के राजाओं के वंशज शामिल हैं। निंगथौजा का शाब्दिक अर्थ है राजा की संतान। इसकी स्थापना 33 CE में राजा नोंगडा लैरेन पखंगबा ने की थी।

The Ningthouja dynasty, also known as Mangang dynasty, comprises the descendants of the kings of Manipur. Ningthouja literally means progeny of King. It was founded by King Nongda Lairen Pakhangba in 33 CE.



इम्फाल में कंगला किले में पाखंगबा मंदिर के अंदर पखंगबा और उनकी दिव्य पत्नी की पवित्र मूर्तियाँ रखी हुई हैं। नोंगडा लैरेन ने पखंगबा शीर्षक का प्रयोग किया, और वह साहित्य और पौराणिक कथाओं में भगवान पाखंगबा के मानव अवतार के रूप में प्रकट होता है।

The sacred idols of God Pakhangba and his divine consort kept inside the Pakhangba Temple in the Kangla Fort in Imphal. Nongda Lairen used the title Pakhangba,and he appears in literature and mythology as a human incarnation of God Pakhangba.

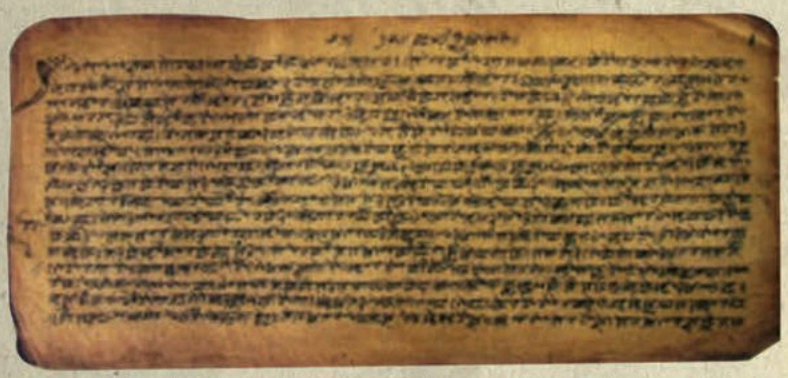


भेग्यचंद्र महाराज का स्मारक
Monument of Bheigyachandra Maharaj



निंगथौ चिंग-थांग खोम्बा (राजर्षि भाग्य चंद्र भी) (1748-1799) 18वीं शताब्दी ईस्वी के मेइती सम्राट थे। उन्होंने मणिपुरी रास लीला नृत्य का आविष्कार किया। उन्हें मणिपुर राज्य में वैष्णववाद फैलाने का श्रेय भी दिया जाता है, जब उनके दादा पम्हीबा ने एकीकृत मणिपुर बनाने के लिए हिंदू धर्म को आधिकारिक धर्म बनाया था।

Ningthou Ching-Thang Khomba (also Rajarshi Bhagya Chandra) (1748–1799) was a Meitei monarch of the 18th century CE. He invented the Manipuri Raas Leela dance. He is also credited with spreading Vaishnavism in Manipur State after his grandfather Pamheiba made Hinduism the official religion for creating a unified Manipur.



पूया का एक पत्ता, चैनारोल (युद्ध की कला)। पूयास मैतेई भाषा की पाण्डुलिपियाँ हैं। वे वंशावली, साहित्य, इतिहास, रॉयल्टी, प्रशासन, निर्माण और ब्रह्मांड विज्ञान, दर्शन, कविता, धार्मिक विश्वासों आदि सहित विषयों की एक विस्तृत श्रेणी को शामिल करते हैं।

A leaf from the puya, Chainarol (The Art of Warfare). The Puyas are Meitei language manuscripts. They encompass a wide spectrum of themes including genealogy, literature, history, royalties, administration, creation and cosmology, philosophy, poetry, religious beliefs, etc.



निंगथौजा राजवंश के मोइरम्बा, बेल मेटल 2 आने, ओबीवी: प्रोटो-मैथिली किंवदंती "श्री राम", रेव: अवैध शिलालेख, 1.84g, 14.00 मिमी (केएम में असूचीबद्ध), बहुत ठीक, अत्यंत दुर्लभ। सेल के रूप में जाने जाने वाले बेल धातु के सिक्के, जो आकार में बहुत छोटे होते हैं, वजन में लगभग 1.3 ग्राम मणिपुर साम्राज्य में मेइडिंगु खगेम्बा (1597-1652) द्वारा पेश किए गए थे, जिन्हें चीनी विजेता के रूप में भी जाना जाता है।

Moiramba of Ningthouja Dynasty, Bell Metal 2 Annas, Obv: proto-Maithili legend "sri ram", Rev: illegible inscription, 1.84g, 14.00mm (Unlisted in KM), about very fine, Extremely Rare. The Bell metal coins Known as Sel, which are very small in size, approx 1.3 gms in weight were introduced in Manipur kingdom by Meidingu Khagemba (1597–1652), also known as the conqueror of Chinese.



सांगगई युम्फम इम्फाल में कंगला किले के अंदर मेइतेई राजघरानों का एक मजबूत शाही निवास (गढ़) है। इम्फाल में कंगला किले के गढ़ का निर्माण 1611 ईस्वी में मेइतेई राजा खगम्बा के काल में शुरू हुआ था।

The Sanggai Yumpham was a fortified royal residence (citadel) of the Meitei royalties inside the Kangla Fort in Imphal. The construction of the Citadel of the Kangla Fort in Imphal started in the year 1611 A.D. during the era of Meitei king Khagemba.



मनुंग कांगजीबंग (मेतेई में 'इनर पोलोग्राउंड') इंफाल में कंगला किले के अंदर गढ़ के दक्षिण पश्चिम में स्थित एक पुराना पोलो मैदान है। पुयास के रूप में जानी जाने वाली प्राचीन पांडुलिपियों के अनुसार, "मनुंग कांगजीबंग" सबसे पुराने पोलो ग्राउंड्स में से एक है।

The Manung Kangjeibung (Meitei for 'Inner Pologround') is an old polo field located to the south west of the citadel inside the Kangla Fort in Imphal. In accordance to the ancient manuscripts known as the Puyas, the "Manung Kangjeibung" is one of the oldest pologrounds.

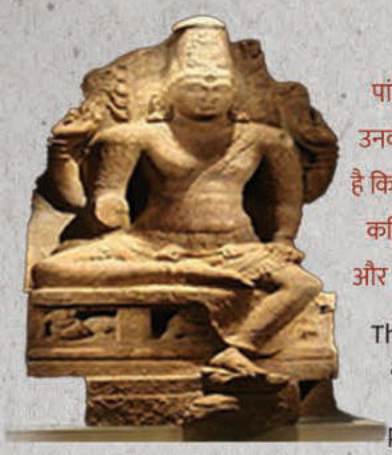


पांड्य राजचिन्ह, दो मछलियाँ, एक चित्र
Pandya emblem, two fishes, illustration



पाण्ड्य राजवंश
Pandyas

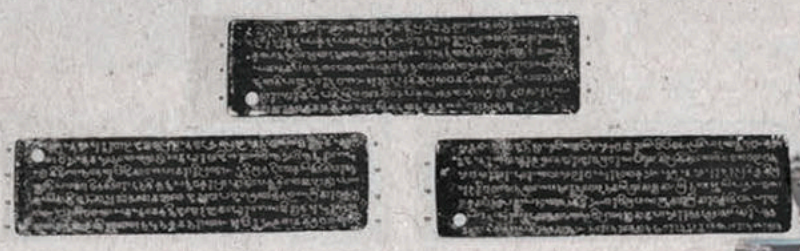
3वीं ई.पू. से 14वीं शताब्दी ई. लगभग 1700 वर्षों तक लगातार शासन किया
(3rd Century BCE- 14th Century CE- reigned for nearly 1700 years)



विष्णु की मूर्ति, 8वीं से 9वीं सदी सी.ई.
Statue of Vishnu, from 8th to 9th Century CE.

पांड्यों ने दूसरी शताब्दी से शासन किया। ईसा पूर्व से 14 वीं शताब्दी तक तमिलनाडु और श्रीलंका के कुछ हिस्सों वाले राज्य पर शासन किया। उनकी राजधानी मदुरै थी, जो कला और संस्कृति का एक समृद्ध केंद्र भी बन गया। वे साहित्य के महान संरक्षक थे, और तमिल परंपरा का मानना है कि संगम, मदुरै में संतों, कवियों और विद्वानों की साहित्यिक सभाओं की अध्यक्षता पांड्य राजाओं द्वारा की जाती थी, जिनमें से कई स्वयं कुशल कवियों के रूप में जाने जाते थे। उन्होंने शैव नयनार और विष्णु अलवर संतों दोनों को भी संरक्षण दिया था। उन्होंने मिस्र, रोम, मध्य पूर्व, सुदूर पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे बाहरी देशों के साथ घनिष्ठ व्यावसायिक संपर्क बनाए रखा। पांड्य लोग पड़ी पर्ल डाइविंग के लिए भी विश्व प्रसिद्ध थे।

The Pandyas reigned from the 2nd Cent. BCE to 14 th Cent. CE over a kingdom comprising parts of Tamil Nadu and Sri Lanka. Their capital city was Madurai, which also became aflourishing centre of art and culture. They were great patrons of literature, and Tamil tradition holds that Sangams, the literary assemblies of saints, poets and scholars at Madurai were presided over by Pandya kings, many of whom were known to be skilled poets themselves.They patronized both Shaiva Nayanar and Vaishnava Alvar saints. They maintained close commercial contacts with outside countries like Egypt, Rome, the Middle East, the Far East and Southeast Asia. The Pandyas were also world famous for pearl diving.



वेल्विकुडी शिलालेख, 8वीं शताब्दी सीई, ताम्र-प्लेट पर खुदा हुआ तमिल और संस्कृत भाषाओं में पांड्य राजा नेदुनजदैयन वरगुणवर्मन प्रथम द्वारा वेल्विकुडी गांव के अनुदान के नवीनीकरण को रिकॉर्ड किया गया है। तांबे की प्लेट सूचना का प्रमुख स्रोत है जो शाही आदेशों, राजाओं की वंशावली की सूची, शत्रु पर उनकी जीत आदि की जानकारी देती है।
Velvikudi inscription, 8th Cent.CE, copper-plate inscribed in Tamil & Sanskrit languages records the renewal of a grant of the Velvikudi village by the Pandya king Nedunjadaiyan Varaguna-varman I. The copper plates are major source of information that inform the essence of royal orders, genealogical list of the kings, their victory over the enemies etc.



मीनाक्षी मंदिर से देवताओं - विष्णु, मीनाक्षी और शिव– की मूर्तियाँ, जो हमें पांड्यों के अधीन मूर्तिकला में विकास की अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।यहाँ बारीक नक़्क़ाशीदार आभूषण तथा कढ़ाईदार वस्त्र देखे जा सकते हैं।
Marriage of Shiva and Parvati (Meenakshi) witnessed by Vishnu, the lavish ornamentation gives us an insight into developments in craftsmanship, textiles and jewellery under the Pandyas.





जटावर्मन सुंदर पांडियन I, ने 1250-1268 सीई के बीच शासन कि
Jatavarman Sundara Pandyan I, ruled between 1250–1268 CE



मीनाक्षी- सुंदरेश्वर मंदिर, मदुरै। इसकी मुख्य संरचना पांड्य सम्राट सदयवर्मन कुलसेकरन प्रथम द्वारा बनाई गई थी, 12 शताब्दी (शुरुवात) -13 शताब्दी (अंत) तक।
Meenakshi-Sindareshwar Temple, Madurai. Its main structure was constructed by the PandyaEmperor Sadayavarman Kulasekaran I, late-12 th -early-13 th Cent CE.



सिक्का जिसमें दो मछलियों का उभरा हुआ शाही प्रतीक चिन्ह है।
Coin containing royal emblem of two fishes



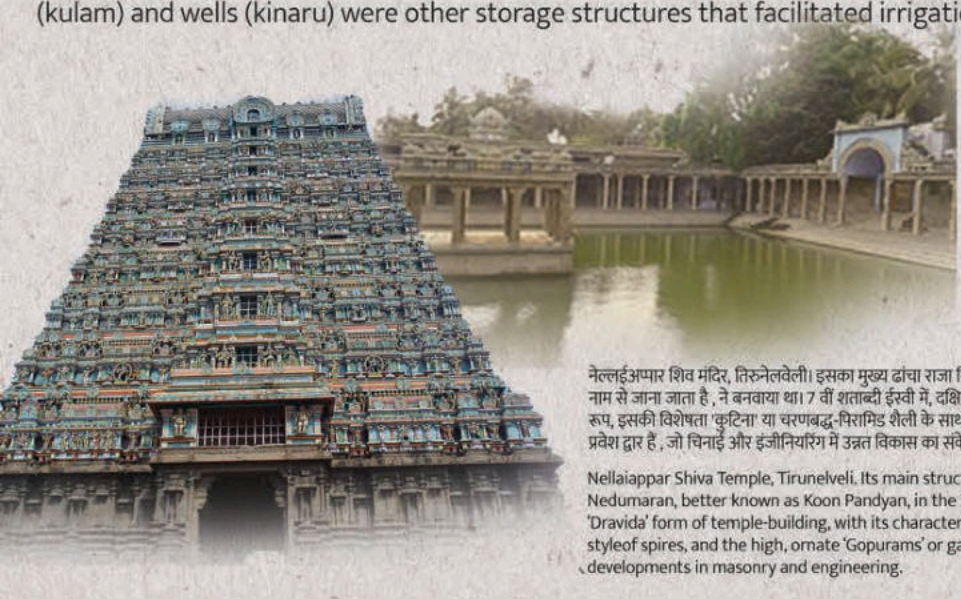
ताँबे का सिक्का जिसमें एक तरफ एक खड़े आदमी और दूसरी तरफ मछली की एक जोड़ी का प्रतीक है, 13वीं शताब्दी सीई।
Copper coin cointaining symbols of a standing man on one side and a pair of fish on the other side, 13th Cent CE.

मणिक्कवचकर, शैव कवि-संत और पांड्य राजा वरगुण द्वितीय के मंत्री , 12वीं शताब्दी से सीई। तिरुवसकम और थिरुक्कोवैयार उनके द्वारा रचित दो शिव कृतियाँ हैं।
Manikkavachakar, the Shaiva poet-saint and minister to the Pandya king Varaguna II, from the 12th Century. Tiruvasakam and Thirukkoyaiyar are the two Shivite works composed by him.

दलवयपुरम तांबे की प्लेट से हमें तीन कुओं की मदद से साल भर में उगाई जाने वाली फसलों की जानकारी मिलती है। अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए नदियों, नहरों, तालाबों, कुओं और झरनों के माध्यम से सिंचाई की जाती थी। प्रारंभिक तमिल क्षेत्र के सिंचाई अभ्यास के लिए जलाशय प्रणाली मौलिक थी। छोटे टैंक (कुलम) और कुएँ (किनारू) अन्य भंडारण संरचनाएं थीं जो सिंचाई की सुविधा प्रदान करते थे।

Dalavaypuram copper plates inform us the cultivation of land throughout the year with the help of three wells. Irrigation that was carried through rivers, canals, tanks, wells and springs to obtain a good harvest. The reservoir system was fundamental to the irrigation practice of the early Tamil region. Small tanks (kulam) and wells (kinaru) were other storage structures that facilitated irrigation.





रॉक-कट जैन मंदिर, राजा जटिला परांतक नेदुनजदाईयन द्वारा लगभग 8वीं शताब्दी सीई में निर्मित हालांकि वे स्वयं आस्थावान शैव थे , पांड्यों ने वैष्णवों और जैनियों को भी संरक्षण दिया था। यह उनके द्वारा पोषित लोकतंत्र और सहनशीलता की भावना को दर्शाता है।
Rock-cut Jain shrine, built by king Jatila Parantaka Nedunjadaiyan, 8th Cent. CE. Although staunch Shaivas, the Pandyas extended patronage to the Vaishnavas and the Jainstoo, indicating a spirit of democracy and toleration fostered by them.

नेल्लईअप्पार शिव मंदिर, तिरुनेलवेली। इसका मुख्य ढांचा राजा निंद्रसीर नेदुमारन, जिसे कून पांडियन के नाम से जाना जाता है , ने बनवाया था। 7 वीं शताब्दी ईस्वी में, दक्षिण भारतीय या 'द्रविड़ मंदिर-निर्माण का रूप, इसकी विशेषता 'कुटिना' या चरणबद्ध-पिरामिड शैली के साथ शिखर, और उच्च, अलंकृत 'गोपुरम' या प्रवेश द्वार हैं , जो चिनाई और इंजीनियरिंग में उन्नत विकास का संकेत देते हैं।

Nellaiappar Shiva Temple, Tirunelveli. Its main structure was built by king Nindraseer Nedumaran, better known as Koon Pandyan, in the 7 th Century AD, in the South Indian or 'Dravida' form of temple-building, with its characteristic 'Kutina' or stepped-pyramidal styleof spires, and the high, ornate 'Gopurams' or gateways, indicating advanced developments in masonry and engineering.



राजा सदावर्मन पराक्रम पांड्या ने 1422-1463 सीई के बीच शासन किया
King Saadavarman Parakrama Pandya, ruled between 1422-1463 CE



पूर्वी गंगा का राजचिन्ह, एक चित्र ।
Eastern Gangas emblem, an illustration

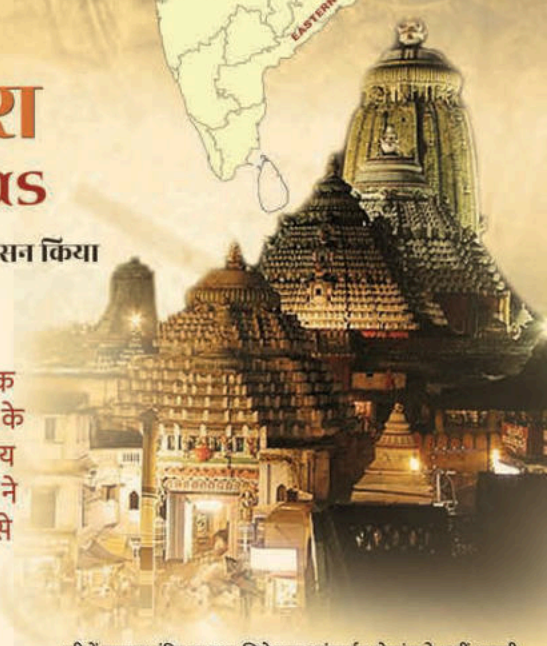


पूर्वी गंगा राजवंश
Eastern Gangas

5वीं से 20वीं शताब्दी ई लगभग 1600 वर्षों तक लगातार शासन किया
(5th- 20th Century CE- reigned for nearly 1600 years)

गंगा राजवंश, जिसे पूर्वी गंगा या पूर्व गंगा के रूप में भी जाना जाता है, ने 5 वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक एक ऐसे राज्य पर शासन किया, जिसमें आधुनिक पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों के साथ वर्तमान उड़ीसा राज्य के अधिकांश भाग शामिल थे। इसलिए, वे भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले राजवंशों में से एक थे। कलिंग क्षेत्र उनकी शक्ति का आधार था। इस वंश के शासकों ने मुस्लिम शासकों के लगातार हमलों से अपने राज्य की रक्षा की। यह राज्य व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से समृद्ध हुआ और धन का उपयोग ज्यादातर मंदिरों के निर्माण में किया गया।

The Eastern Gangas or the Purba Gangas, ruled over a territories mostly from the modern Orissa, along with parts of modern West Bengal, Chhattisgarh and Andhra Pradesh, 5th - 20th Century CE. They were one of the longest reigning dynasties in the Indian subcontinent. The Kalinga region was the base of their power. The rulers of this dynasty defended their kingdom from the constant attacks of the Muslim rulers. This kingdom prospered through trade and commerce and the wealth was mostly used in the construction of temples.



पुरी में जगन्नाथ मंदिर का दृश्य, जिसे राजा अनंतवर्मन चोडगंगा ने 12वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व के प्रारंभ में बनवाया था। यह मंदिर, कोणार्क सूर्य मंदिर के साथ, मंदिर वास्तुकला की विशिष्ट कलिंग शैली के शुरुआती नमूने हैं, जिसने प्रारंभिक मध्यकालीन उड़ीसा में आकार लिया था।

Jagannatha Temple at Puri, built by king Anantavarmana Chodaganga, 12 th Cent. CE. Along with the Konark Sun Temple, it is an early specimen of the distinctive Kalinga style of temple architecture that developed in early-Medieval Orissa.



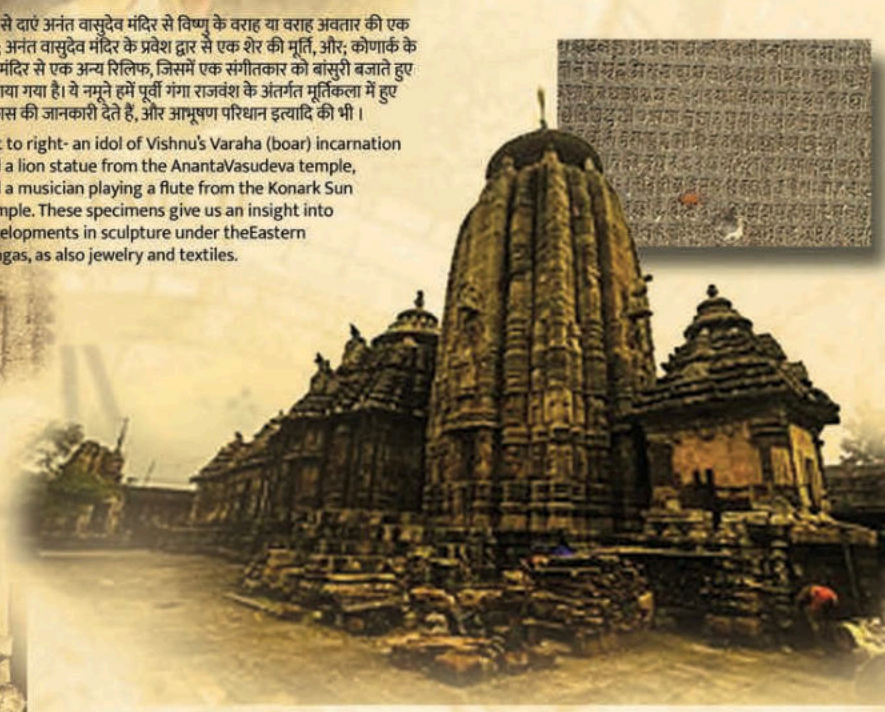
बाएं से दाएं अनंत वासुदेव मंदिर से विष्णु के वराह या वराह अवतार की एक मूर्ति; अनंत वासुदेव मंदिर के प्रवेश द्वार से एक शेर की मूर्ति, और; कोणार्क के सूर्य मंदिर से एक अन्य रिलिफ, जिसमें एक संगीतकार को बांसुरी बजाते हुए दिखाया गया है। ये नमूने हमें पूर्वी गंगा राजवंश के अंतर्गत मूर्तिकला में हुए विकास की जानकारी देते हैं, और आभूषण परिधान इत्यादि की भी ।

Left to right- an idol of Vishnu's Varaha (boar) incarnation and a lion statue from the AnantaVasudeva temple, and a musician playing a flute from the Konark Sun Temple. These specimens give us an insight into developments in sculpture under theEastern Gangas, as also jewelry and textiles.



1128 सी.ई. के दौरान राजा अनंतवर्मन चोडगंगा द्वारा जारी सोने के सिक्के जिन्हें 'फैनम' कहा जाता था।

Gold coins, called 'fanams', of king Anantavarmana Chodaganga, c. 1128 CE depicts the Eastern Ganga emblem- bull (Nandi),



भुवनेश्वर में अनंत वासुदेव मंदिर का दृश्य इसके संबंधित शिलालेख भी देख सकते हैं। यह मंदिर पूर्वी गंगा के राजा अनंगभीमदेव ||। की बेटी राजकुमारी चंद्रिका देवी के संरक्षण में 13वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व में निर्मित किया गया। राजकुमारियों द्वारा प्राप्त उच्च स्थिति एक लोकतांत्रिक और समतावादी लोकाचार को दर्शाती है, जो उस वक्त प्रचलन में थी।

Ananta Vasudeva temple at Bhubaneshwar, along with its associated inscription, early-13 th Century CE, built by princess Chandrika Devi, the daughter of king Anangabhimadeva III. The high status enjoyed by princesses indicates a democratic and egalitarian ethos that prevailed.



चोडगंगा देव (1077-1150 ई.) की मूर्ति, चुडांगसाही, पुरी।

Sculpture of Anantavarman Chodaganga Deva (1077–1150 CE) at Chudangasahi, Puri



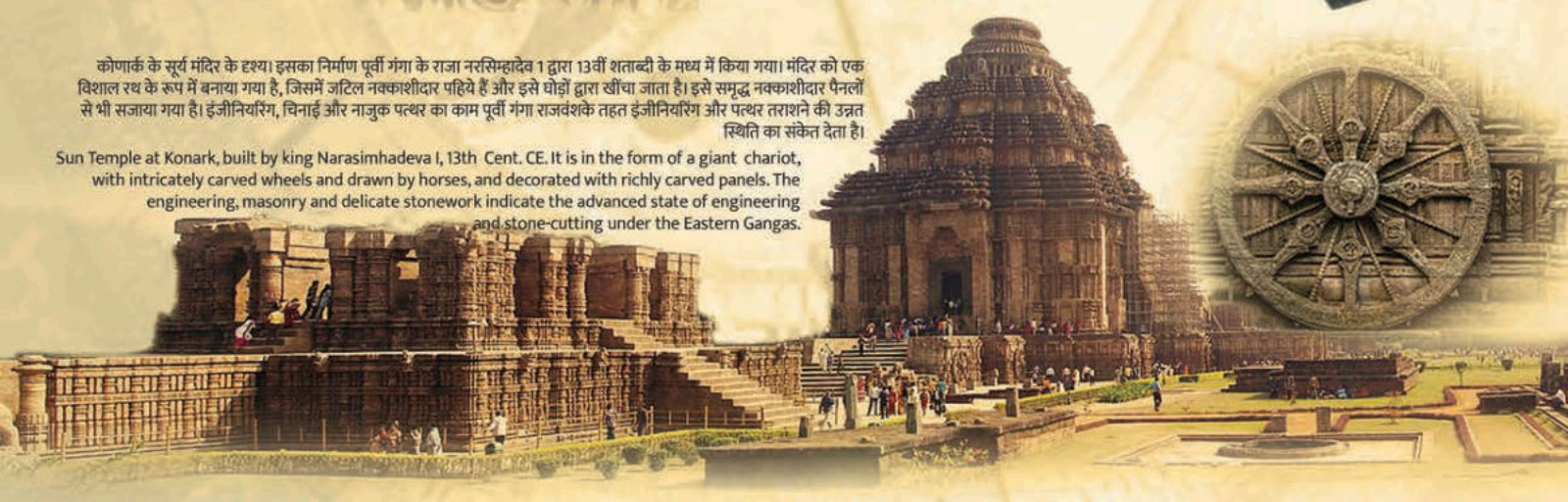
नरसिंह देव प्रथम तीरंदाजी का अभ्यास करते हुए, कोणार्क पैनल, 1238-1264 ई.।

Panel from Konark depicting Narasingha Deva I practicing archery, 1238–1264 CE



राजराजा देवेंद्रवर्मा, 1077-1150 ई. देवेंद्रवर्मा (गंगा), मिश्रित कलिंग लिपि में संस्कृत, 9वीं शताब्दी ईस्वी, तांबे की प्लेटें।

Rajaraja Devendravarma, 1077–1150 CE Devendravarma (Ganga), Sanskrit in Mixed Kalinga script, 9th century AD. Copper plates.



कोणार्क के सूर्य मंदिर के दृश्य। इसका निर्माण पूर्वी गंगा के राजा नरसिम्हादेव 1 द्वारा 13वीं शताब्दी के मध्य में किया गया। मंदिर को एक विशाल रथ के रूप में बनाया गया है, जिसमें जटिल नक्काशीदार पहिये हैं और इसे घोड़ों द्वारा खींचा जाता है। इसे समृद्ध नक्काशीदार पैनलों से भी सजाया गया है। इंजीनियरिंग, चिनाई और नाजुक पत्थर का काम पूर्वी गंगा राजवंशके तहत इंजीनियरिंग और पत्थर तराशने की उन्नत स्थिति का संकेत देता है।

Sun Temple at Konark, built by king Narasimhadeva I, 13th Cent. CE. It is in the form of a giant chariot, with intricately carved wheels and drawn by horses, and decorated with richly carved panels. The engineering, masonry and delicate stonework indicate the advanced state of engineering and stone-cutting under the Eastern Gangas.

कन्नानोर के कोलाथिरिस

Kolathiris Of Cannanore

6वीं से 20वीं शताब्दी ई. लगभग 1500 वर्षों तक लगातार शासन किया

(6th – 20th Century CE- – reigned for nerly 1500 years)

कोलाथिरी एक राजवंश थे, जो उत्तरी मालाबार क्षेत्र में चंद्रगिरि और कोरापुझा नदियों के बीच की भूमि क्षेत्र पर शासन करते थे। वर्तमान कन्नूर जिले में स्थित एझिमाला उनकी राजधानी थी। विदेशी यात्रियों के वृतांतों में, उन्हें कैनानोर के राजा के रूप में जाना जाता है। उनके राज्य को शाही परिवार के नाम पर ही कोलथुनाडु के नाम से जाना जाने लगा। यह प्राचीन मुशिका वंश की एक शाखा थी, जिनका प्रारंभिक इतिहास अस्पष्ट है। हालांकि, वे 12 वीं से 14 वीं शताब्दी सी.ई. तक विदेशी वृतांतों में उल्लेखित हैं, और उसके बाद मध्यकालीन केरल के चार सबसे शक्तिशाली राज्यों -- कालीकट, क्विलोन और कोचीन -- में से एक के रूप में रहे हैं। यह साम्राज्य 1947 के बाद रियासतों के भारतीय संघ में विलय तक अस्तित्व में रहा।

कृषि और सिंचाई: काली मिर्च प्रमुख फसलों में से एक थी। सिंचाई के साधन ज्यादातर झीलें और टैंक थे।व्यापार और वाणिज्य: लंबे समय तक, मालाबार साम्राज्यों ने अरब दुनिया के साथ व्यापार किया था। 15वीं शताब्दी के अंत में पुर्तगालियों ने मालाबार के व्यापारिक नेटवर्क में प्रवेश किया। कोलाथिरिस ने शासन के दौरान समुद्री व्यापार का विकास किया।

The Kolathiris kingdom known as 'Kolathunadu' roughly comprised theNorth Malabar region. Their capital was Ezhimala, within the modern district of Kannur. They were descendent of the ancient Mushika dynasty, their early history is unclear. However, they figure prominently in foreign records from the 12 th to 14 th Century CE and thereafter, as one of the four most powerful kingdoms of medieval Kerala, alongside Calicut, Quilon and Cochin. The kingdom lasted until theintegration of princely states into the Indian Union after 1947.

Agriculture and Irrigation: Pepper was one of the chief crops. Means for irrigation were mostly lakes and tanks. Trade and Commerce: For a long time, the Malabar kingdoms had traded with the Arab world. The Portuguese entered Malabar's trading network in the late-15th Century. The Kolathiris developed maritime trade during the regime.

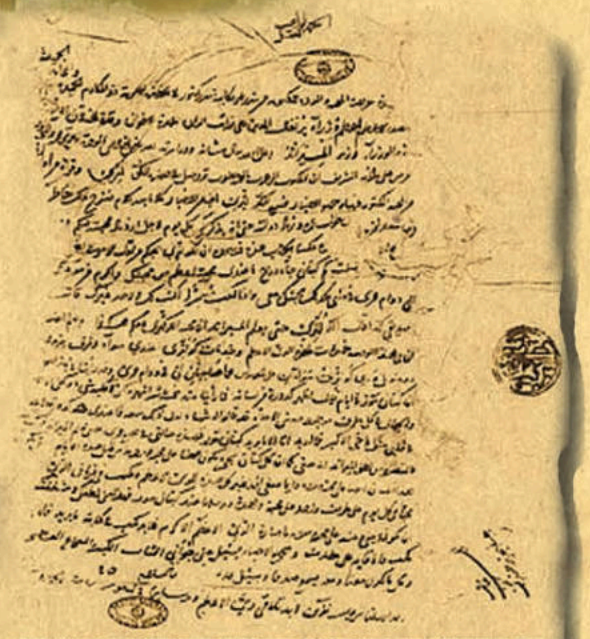
18वीं शताब्दी सीई में त्रावणकोर में अनिझम थिरुनल मार्तंड वर्मा सत्ता में आए।
Anizham Thirunal Marthanda Varma came to power in Travancore, 18th Cent. CE.





केरल के कासरगोड जिले के कुमला में अनंतपुरा झील मंदिर के दृश्य, जो पुरातात्विक दृष्टि से 14 वीं शताब्दी सी.ई. के हैं। यह विष्णु मंदिर, एक झील के बीच में स्थित है, जो कोलाथिरी के तहत मंदिर-वास्तुकला का मूल्यांकन करता है। ऐसे मंदिर इंजीनियरिंग और चिनाई के वैज्ञानिक उदाहरण हैं

Ananthapura Vishnu Lake Temple, Kumla, Kasargod district, Kerala, circa 14 th Cent. CE. Situated in the middle of a lake, shows advances within temple-architecture under the Kolathiris, such temples being scientific marvels of engineering and masonry.



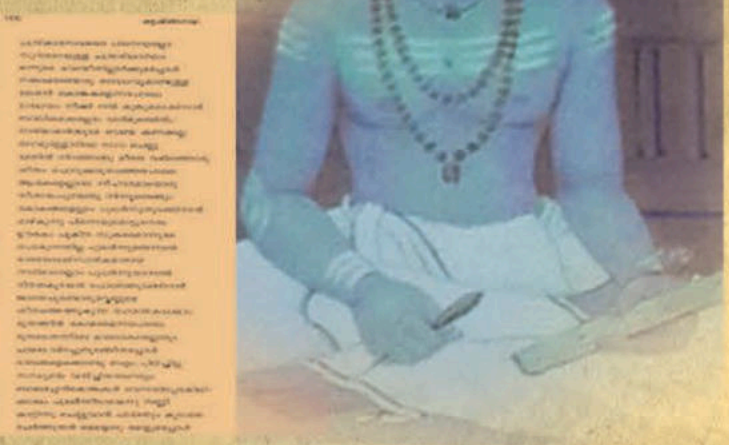
A letter (October, 1524) from the minister of Kolattiri, a certain Kuruppu, directed to the viceroy Vasco da Gama
(AN/TT, Casa Forte, 189, Maço 1, Documentos Orientais, Doc. 47)

अरबी में एक पत्र, अक्टूबर, 1524, में कोलाथिरी मंत्री कुरुप्पु द्वारा वास्को डी गामा को लिखा गया। मालाबारी रजयों के दीर्घकालिक व्यावसायिक संबंध अरब दुनिया से थे। पुर्तगालियों ने मलाबार के व्यावसायिक जगत में 15 वीं सदी के आखिर में प्रवेश किया। इन विविध धार्मिक सांस्कृतिक समुदायों का मालाबार में स्वागत किया जाना लोकतान्त्रिक और सहनशील दृष्टिकोण का प्रतीक है।

A letter in Arabic, written by the Kolathiri minister Kuruppu to Vasco da Gama, October, 1524. For a long time, the Malabar kingdoms had traded with the Arab world. The Portuguese entered Malabar's trading network in the late-15th Century. The welcoming of such diverse ethno-religious groups in Malabar indicates a spirit of toleration and democracy fostered by its rulers.

कृष्ण-गाथा का एक भाग, जो 15वीं शताब्दी सी.ई. के प्रसिद्ध मलयालम कवि, चेरुसेरी नंबूदरी, जो कोलाथिरी राजा उदय वर्मन के दरबार में कवि थे, द्वारा लिखित है। कृष्ण-गाथा, जिसे कृष्णपट्टु के नाम से भी जाना जाता है, भगवान कृष्ण के जीवन के प्रसंगों का वर्णन करने वाली एक भक्तिपूर्ण कविता है। यह मलयालम साहित्य के विकास में एक प्रमुख प्रारंभिक मील का पत्थर है।

Krishna-Gatha, a devotional epic authored by the famous 15th Century CE Malayalam poet, Cherusseri Namboothiri, poet laureate in the court of the king Udaya Varman (1446-1475). It is a major early landmark in the development of Malayalam literature.



तमिलनाडु के तिरुप्पुडिमरूथुर मंदिर में एक भित्ति चित्र में विजयनगर के राजा अच्युतदेव राय के दूतों को दिखाया गया है, जो त्रावणकोर के शासक भूतल वीरा उदय मार्तंड वर्मा को सम्मान देने के लिए अल्टीमेटम दे रहे हैं।

A mural at the Tiruppudaimaruthur temple, Tamil Nadu, shows the emissaries of the Vijayanagara king Achyutadeva Raya serving an ultimatum to the Travancore ruler Bhoothala Veera Udaya Marthanda Varma to pay tributes to him.







चौहान (चाहमान)
Chauhans (Chahamanas)

6वीं से 12वीं शताब्दी ई लगभग 700 वर्षों तक शासन किया
(6th-12th Century CE – reigned for nearly 700 years)



विग्रहराज IV
Vigraharaja IV

एक राजपूत राजवंश जिसने 6वीं से 12वीं शताब्दी ई के दौरान पूर्वी राजस्थान और कुछ आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया। उनकी राजधानी शाकंभरी (सांभर) थी, जो 12 वीं शताब्दी की शुरुआत में अजयमेरु (अजमेर) में स्थानांतरित हो गई थी। इसीलिए, उन्हें अजमेर के चौहान के नाम से जाना जाता है। विग्रहराज चतुर्थ और पृथ्वीराज तृतीय, जिन्हें पृथ्वीराज चौहान के नाम से जाना जाता है इस राजवंश के प्रसिद्ध राजा हुए हैं।

A Rajput dynasty who ruled over areas in Eastern Rajasthan, and some adjoining regions, 6 th to 12 th Cent. CE. Their capital city was Shakambhari(Sambhar), which shifted to Ajayameru,(Ajmer), in the early-12 th Cent., and hence they came to be known as the Chauhans of Ajmer. Vigraharaja IV and Prithviraja III, better known as Prithviraja Chauhan, are the best known kings of the dynasty.

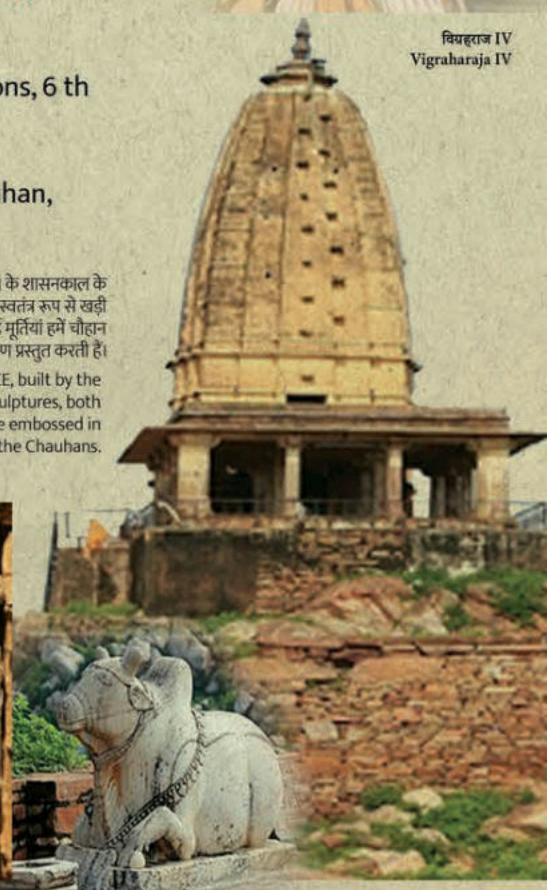


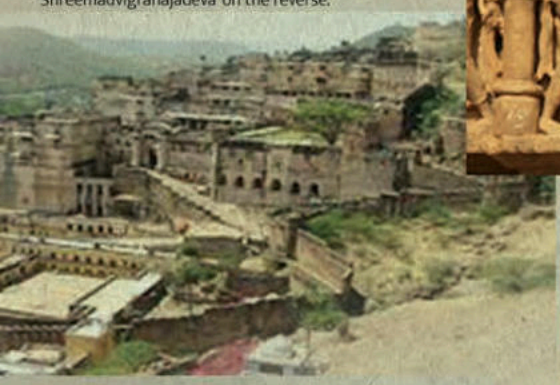
राजा विग्रहराज चतुर्थ द्वारा जारी चौहान सिक्के, 12वीं शताब्दी सी ई, जिसके अग्रभाग पर धनुष के साथ भगवान राम की छवि है, और पीछे की ओर राजा का नाम, श्रीमद्विग्रहराजदेव' है।
Chauhan coin, issued by king Vigraharaja IV, 12 th Cent. CE, containing the image of Lord Rama with the bow on the obverse, and the king's name, 'Shreemadvigrahajadeva' on the reverse.

हर्षनाथ मंदिर, सीकर जिला, राजस्थान के दृश्य। चौहान राजा विग्रहराज 1 के शासनकाल के दौरान शैव संत, भावरक्त द्वारा 10 वीं शताब्दी सी.ई. में निर्मित, मूर्तियां, दोनों स्वतंत्र रूप से खड़ी मूर्तियां, जैसे कि नंदी प्रतिमा, तथा साथ ही साथ पैनलों में उभरी हुई मूर्तियां हमें चौहान शासनकाल में मूर्तिकला की कला का एक जीवंत चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

Harshnath Temple, Sikar district, Rajasthan, 10 th Cent. CE, built by the Shaiva saint, Bhavarakta, during king Vigraharaja I's reign. Sculptures, both free-standing such as this Nandi statue, as well as those embossed in panels, provide us an idea of the art of sculpture under the Chauhans.





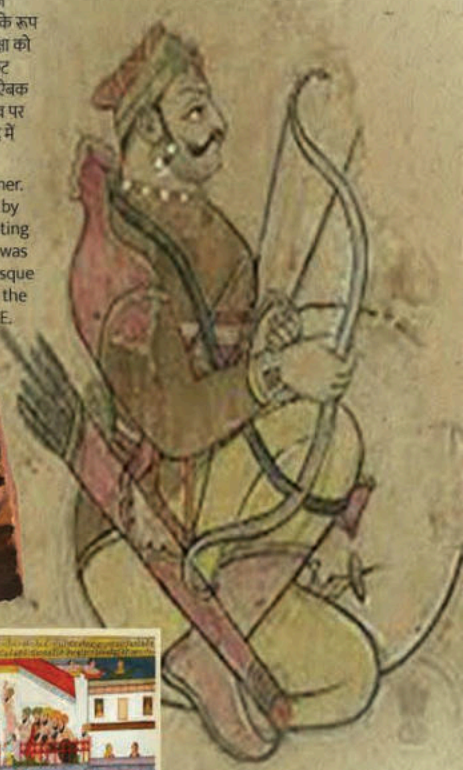


राजा अजयराज द्वारा निर्मित तारागढ़ किला, अजमेर, 8 वीं शताब्दी सीई। चौहानों ने पड़ोसी चालुक्यों, परमारों, तोमरों और चंदेलों और तुर्क गजनवियों के साथ कई युद्ध लड़े। इस तरह के किले रक्षा में महत्वपूर्ण कारक थे और इन लड़ाइयों में एक महत्वपूर्ण सैन्य संपत्ति थी।
Taragarh Fort, Ajmer, constructed by king Ajayaraja, 8 th Cent. CE. The Chauhans fought several wars with the neighbouring Chaulukyas, Paramaras, Tomaras and Chandelas, and the Ghaznavid Turks. Such forts were important factors in defence and a valuable military assets in these battles.



अढ़ाई दिन का झोंपड़ा, अजमेर के दृश्य। मूल रूप से राजा विग्रहराज चतुर्थ द्वारा एक संस्कृत कॉलेज के रूप में निर्मित था, जो इनके द्वारा शिक्षा को प्रोत्साहन दिए जाने का भाव प्रकट करता है। इसे बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा 1192 सी.ई. में चौहान प्रभुत्व पर घुरिद विजय के बाद एक मस्जिद में परिवर्तित कर दिया गया था।

Arhai Din Ka Jhompra, Ajmer. Built as a Sanskrit college by king Vigraharaja IV, indicating promotion of learning, it was later converted into a mosque by Qutbuddin Aibak after the Ghurid conquest in 1192 CE.

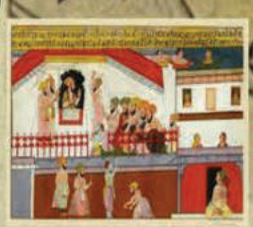


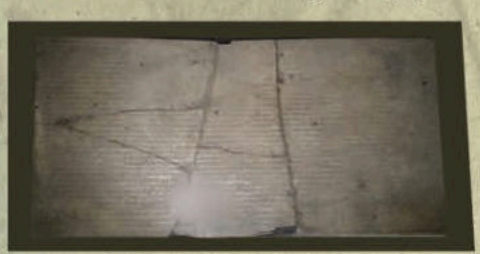


विजय दृष्य दर्शाता पट्ट, 10 वीं सदी , चौहान शैली, समकालीन अस्त्र शस्त्र दर्शाते हुए।
Panel depicting victory scene, Chauhan style, indicating contemporary weaponry.



सर्वाधिक लोकप्रिय चौहान शासक पृथ्वीराज चौहान, जिनकी जीवनी पर चंद बरदाई द्वारा रचित 16 वीं सदी का महाकाव्य पृथ्वीराज रासो आधारित है। पृथ्वीराज चौहान ने खेती के तहत अधिक भूमि लाने के लिए सिंचाई के लिए पश्चिमी यमुना नहर का निर्माण किया।
Prithviraj Chauhan, the best known Chauhan king, on whose life the 16th Cent epic Prithviraj Raso penned by Chand Bardai was based. Prithviraj Chauhan built Western Yamuna Canal for irrigation bringing more land under cultivation.





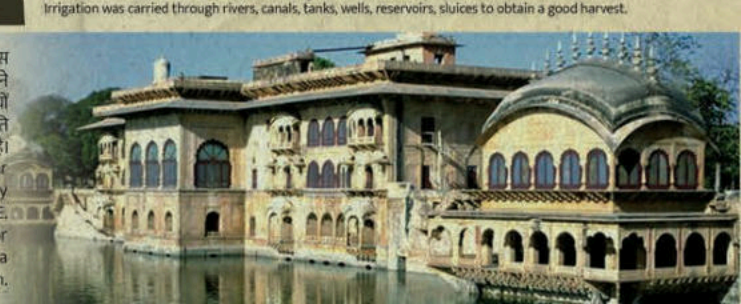
चौहान राजा विग्रहराज चतुर्थ द्वारा लिखित संस्कृत नाटक "हरिकेली नाटक" का एक अंश वाला शिलालेख। एक सक्षम शासक और कला और साहित्य के उदार संरक्षक होने के साथ-साथ, राजा विग्रहराज चतुर्थ एक साहित्यकार और स्वयं साहित्यिक प्रतिभा के धनी थे।

Inscription bearing a fragment of the Sanskrit drama 'Harikeli Nataka', authored by the kingVigraharaja IV. Besides being an able ruler and generous patron of art and literature, he was aliterary genius himself.

अच्छी फसलें प्राप्त करने के लिए नदियों, नहरों, तालाबों, कुओं, जलाशयों, नालों के माध्यम से सिंचाई की जाती थी।
Irrigation was carried through rivers, canals, tanks, wells, reservoirs, sluices to obtain a good harvest.

राजस्थान के नरहर से जैन तीर्थंकर, नेमिनाथ की एक प्रतिमा, 11वीं शताब्दी सी.ई.। चौहानों के अधीन मूर्तिकला के विकास की एक झलक देने के साथ-साथ, इस तरह की मूर्तियाँ हमें इस राजवंश के तहत जैन धर्म के फलने-फूलने का संकेत भी देती हैं। लोकतान्त्रिक और सहनशील दृष्टिकोण का प्रतीक है।
A statue of the Jain tirthankara, Neminatha, from Narhar in Rajasthan, 11 th Century CE,giving us an indication of the flourishing of Jainism under the dynasty, reflecting a spirit of toleration and democracy fostered by Chauhans.

आनासागर झील, अजमेर में तटबंध और मंडप। इस कृत्रिम झील का निर्माण राजा अरनोराज ने 1135-1150 सीई के बीच करवाया था। ऐसे जलाशयों का निर्माण और जल संरक्षण और सिंचाई के प्रति उनकी चिंता एक वैज्ञानिक भाव को दर्शाती है।
Embankment and pavilions at the Anasagar Lake, Ajmer. This artificial lake was built by theking Arnoraja beween 1135-1150 CE. Building of such reservoirs and concern for water conservation and irrigation indicates a scientific spirit among them.





नंदी (बैल) - कलचुरियों का राजचिन्ह ।
Nandi (bull) –the emblem of Kalachuris

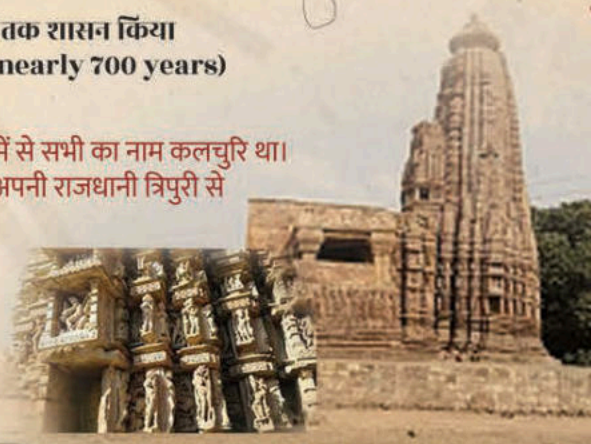


कलचुरि राजवंश
Kalachuris

7वीं से 13 वीं शताब्दी ई. लगभग 700 वर्षों तक शासन किया
(7th-13th Century CE – reigned for nearly 700 years)

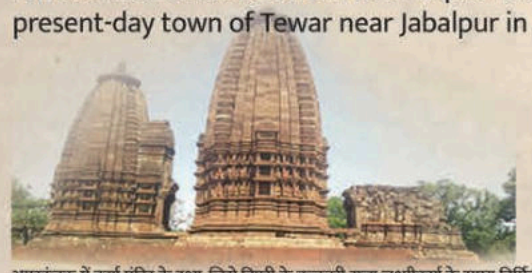
7वीं और 12वीं शताब्दी सी.ई. के बीच, मध्य भारत और उत्तरी दक्कन में तीन राजवंशों का उदय हुआ, जिनमें से सभी का नाम कलचुरि था। उनमें से सबसे पहले त्रिपुरी के कलचुरी, या चेदि के कलचुरी थे, जिन्होंने 7 वीं और 13 वीं शताब्दी के बीच अपनी राजधानी त्रिपुरी से शासन किया था, जिसे मध्य प्रदेश में जबलपुर के पास तेवर के वर्तमान शहर के रूप में पहचाना जाता है।

Between the 7th and 12th Centuries CE, three dynasties in Central India and the Northern Deccan arose, all bearing the name Kalachuris. The earliest of them all were the Kalachuris of Tripuri, or Kalachuris of Chedi, who reigned between the 7th and 13th Centuries from their capital city of Tripuri, identified with the present-day town of Tewar near Jabalpur in Madhya Pradesh.



सोहागपुर में विराटेश्वर मंदिर के दृश्य इस मंदिर का निर्माण राजा युवराजदेव द्वितीय द्वारा लगभग 10वीं शताब्दी के अंत में किया गया था। यह मंदिर त्रिपुरी के कलचुरियों के अधीन वास्तुकला का एक और प्रमुख नमूना है।

Virateshwar Temple at Sohagpur, built by the king Yuvarajadeva II circa late-10th Century CE, another major specimen of Tripuri Kalachuris architecture.



अमरकंटक में कर्ण मंदिर के दृश्य, जिसे त्रिपुरी के कलचुरी राजा लक्ष्मीकर्ण के समय निर्मित किया गया था। इन्होंने लगभग 1041-1073 सी.ई. के बीच शासन किया था, और अब तक के इस राजवंश के सबसे प्रभावशाली शासक रहे थे। वह विद्वानों के एक महान संरक्षक थे। बहुत बड़े-बड़े समकालीन कवियों एवं विद्वानों जैसे विलाना, नचिराजा, कर्पूर और विद्यापति ने उनके दरबार की शोभा बढ़ाई।

Karna Temple at Amarkantak, built by king Lakshmikarna, circa 1041-1073 CE, the dynasty's greatest ruler. A great patron of scholars, and several well-known contemporary poets such as Villana, Nachiraja, Karpura and Vidyapati adorned his court.



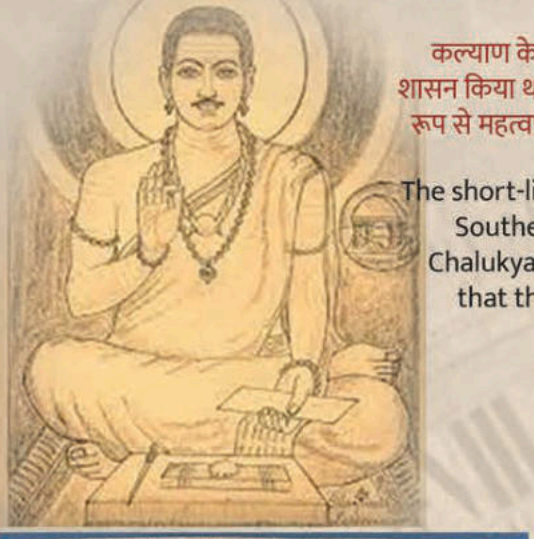
त्रिपुरी कलचुरी साम्राज्य से गणेश नृत्य की एक मूर्ति, जो 10वीं शताब्दी ईस्वी की है, कलचुरियों अधीन मूर्तिकला तथा पत्थर की नकाशी में विकास का एक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

Dancing Ganesha , circa 10th Century AD, a specimen of developments in sculpture under Tripuri Kalachuris, indicating advances made in stonecutting.



त्रिपुरी कलचुरी राजा द्वारा जारी सिक्के। गंगेदेव (शासनकाल 1015-1041 सी.ई.)। अग्रभाग में एक बैठी हुई लक्ष्मी की छवि है, जबकि पृष्ठ भाग पर राजा का नाम 'श्रीमद गांगेय देवः' है।

Coin issued by king Gangeyadeva (reigned 1015-1041 CE). The obverse contains the image of a seated Lakshmi, while the reverse contains the king's name, 'Shreemad Gangeya Devah'.



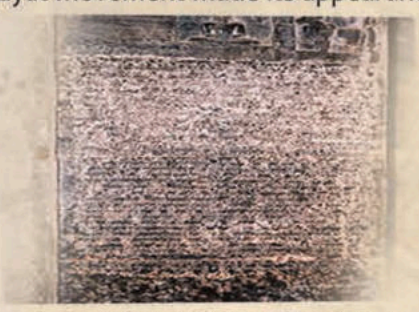
कल्याण के कलचुरियों का अल्पकालिक शासन, जिन्होंने दक्षिणी महाराष्ट्र और उत्तरी कर्नाटक के क्षेत्रों पर 12वीं शताब्दी में शासन किया था, इस क्षेत्र पर कल्याण के चालुक्यों के शासनकाल के मध्यांतर था। हालांकि, कलचुरियों का शासन सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण था। यह उन्हीं के शासनकाल में था कि लिंगायत आंदोलन ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, और कन्नड़ कविता का वचना रूप विकसित हुआ।

The short-lived rule of the Kalachuris of Kalyana, who ruled in the 12th Century over territories in Southern Maharashtra and Northern Karnataka, was more of an interlude in the reign of the Chalukyas of Kalyana over the region. However, it was culturally important. It was in their reign that the Lingayat movement made its appearance, and the Vachana form of Kannada poetry developed during their reign.



11वीं या 12वीं शताब्दी ई.पू. की तारीख वाली वाचन कविता वाली ताड़ के पत्ते की पांडुलिपि से एक फोलियो। भक्ति और गीतात्मक, लिंगायत कवि-संत, जैसे कि आंदोलन के संस्थापक बासवन्ना और चन्नबासव, कन्नड़ में काव्य शैली के महत्वपूर्ण प्रारंभिक प्रस्तावक थे। बासवन्ना राजा बिज्जल द्वितीय के समकालीन थे। लिंगायतों द्वारा प्रचारित समतावाद सामाजिक स्तर पर लोकतांत्रिक विचारों के विकास का संकेत देता है।

Folio from a palm-leaf manuscript containing Vachana poetry, circa 11th /12th Cent CE. Basavanna, the founder of the Lingayat movement, and an important early vachana composer, was Bijjala II's contemporary. The egalitarianism preached by the Lingayats indicates the development of democratic thoughts at the social level.



कर्नाटक के लक्कुंडी, गडग जिले के जैन मंदिर में राजा सोविदेव का एक शिलालेख, 1172 ई.पू.। पुराने कन्नड़ में, शिलालेख न केवल कन्नड़ भाषा के विकास में एक प्रारंभिक चरण को इंगित करता है, बल्कि कल्याण के कलचुरियों के अधीन जैनियों को शाही संरक्षण प्रदान करना सहिष्णुता के लोकतांत्रिक भाव को इंगित करता है।

Inscription of the king Sovideva, dated 1172 CE, at the Jain temple in Lakkundi, Gadag district, Karnataka. In old Kannada, the inscription indicates not just early development of the Kannada language, but the royal patronage extended to the Jains under the Kalyana Kalachuris, indicating a tolerant and democratic spirit.



राजा बिज्जल द्वितीय (1130-1167 सी.ई.) के शासनकाल के सिक्के। कल्याण के कलचुरियों में अब तक के सबसे महान शासक, उन्होंने 1157 सी.ई. में अपने अधिपतियों - कल्याण चालुक्यों – से स्वतंत्रता की घोषणा की।

Coins issued by King Bijjala II (reigned1130-1167 CE), the greatest ruler among the Kalachuris of Kalyana, he declared independence from his overlords, the Kalyana Chalukyas in 1157 CE.

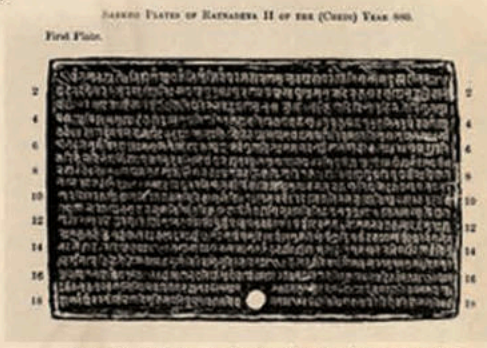
उत्तराधिकारी वंश रत्नापुर के कलचुरियों का था, जिन्होंने 11 वीं और 12वीं शताब्दी ई.पू. के बीच शासन किया उनकी राजधानी रत्नापुर (वर्तमान छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में) थी। यह पुराने राजवंश की एक शाखा थी।

The succeeding lineage was that of the Kalachuris of Ratnapura, who reigned between the 11th and 12th Centuries CE from their capital city of Ratnapura, identified with the present-day Ratanpur in the Bilaspur district of Chhattisgarh. They were a branch of the older dynasty.



रत्नापुरा कलचुरी के तहत सिक्के का नमूना। यह सोने का सिक्का राजा पृथिदेव द्वारा 1079 सी.ई. के आसपास जारी किया गया था। सोने, चांदी औ
र तांबे में जारी रत्नापुरा कलचुरियों के त्रि-धातु के सिक्कों में विभिन्न आकृतियां होती थी। यथा: 'गज-शार्दुला', जो शेर और हाथी की कुश्ती, मानव-सिर वाले शेर, भगवान हनुमान और खंजर।

Gold coin issued by king Prithideva circa 1079 CE. The tri-metallic coins of the Ratnapura Kalachuris, issued in gold, silver and copper, featured various images such as the 'gaja-shardula', that is, a wrestling lion and elephant, human-headed lions, the monkey-God Hanuman and the dagger.



राजा रत्नदेव द्वितीय का सरखोन शिलालेख, जिसने 1120-1135 ईस्वी तक शासन किया यह राजा रत्नपुरा कलचुरी राजाओं में सबसे महान थे।

The Sarkhon inscription of king Ratnadeva II, reigned 1120-1135 CE, the greatest among the Ratnapura Kalachuri kings.

इस दौरान मुख्य व्यवसाय कृषि, पशुपालन और व्यापाय थे, जिनमें से लघु वन उपज का संग्रह और खनन महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियाँ थीं। राजकुमारी मसकदेवी के दंतेवाड़ा स्तंभ शिलालेख में कहा गया है कि किसानों को करों और बकाया का भुगतान न करने के लिए परेशान नहीं किया जाना चाहिए। व्यापार मुख्यतः मुद्रा के माध्यम से होता था। व्यापार और उद्योग श्रेणी या श्रेणी प्रणाली में संगठित थे। सोने और ताँबे के सिक्कों का प्रयोग होता था।

Main occupation comes from agriculture, animal husbandary and trade of which collection of minor forest produce and mining were important economic activities. The Dantewada pillar inscription of princess Masakdevi states that farmers should not be harassed for non -payment of taxes and arrears. Trade was mainly through currency. Trade and industry were organised in shreni or guild system. Gold coins and copper coins were used.



वेंगी चालुक्य राजचिन्ह, चित्र
Vengi Chalukya, Illustration



वेंगी के चालुक्य
Chalukyas Of Vengi

7 वीं से 12 वीं शताब्दी ई. लग भग 600 वर्षों तक शासन किया
(7th - 12th Century CE- reigned for nearly 600 years)

वेंगी के चालुक्यए जिन्हें पूर्वी चालुक्य के रूप में भी जाना जाता हैए ने 7वीं और 12वीं शताब्दी सीण्ईण् के बीच वर्तमान आंध्र प्रदेश में वेंगी क्षेत्र पर शासन किया। वेंगी चालुक्यों के शासनकाल में कला और संस्कृति का उल्लेखनीय उत्कर्ष देखा गया। कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था।
सिंचाई का स्रोत कृष्णा और गोदावरी नदियाँ थीं। चालुक्यों के दौरान हीरे की खदानें बहुत लोकप्रिय थीं। वेंगी के पूर्वी चालुक्य शासन की पांच शताब्दियों ने न केवल इस क्षेत्र को एक एकीकृत कर समेकित किएए बल्कि उनके शासन के उत्तरार्ध के दौरान तेलुगु और कन्नड़ संस्कृतिए साहित्यए कविता और कला के उत्थान को भी बढ़ावा मिला। चोलों के साथ इनका वैवाहिक संबंध स्थापित हुए।

The Chalukyas of Vengi, also known as the Eastern Chalukyas, ruled over the Vengi region in present-day Andhra Pradesh between the 7th and the 12th Cent CE. The reign of the Vengi Chalukyas saw a remarkable efflorescence of art and culture.
Agriculture was the main occupation of the people. Source of irrigation was Krishna and Godavari Rivers. Diamond mines were very popular during Chalukyas.The five centuries of the Eastern Chalukya rule of Vengi saw not only the consolidation of this region into a unified whole, but also saw the efflorescence of Telugu and Kannada culture, literature, poetry and art during the later half of their rule. They had marital relationship with



वेंगी चालुक्य राजा अम्मा द्वितीय के 10वीं शताब्दी ईण्पूण् ताम्रपत्र पर शिलालेखए जिसमें संस्कृत कन्नड़.तेलुगु लिपि में लिखी गई है। तेलुगु और कन्नड़ साहित्यिक संस्कृतियों ने उनके शासन के दौरान बहुत बड़े उत्थान का काल देखा है। विद्वान.कवि नन्नया और प्रख्यात कवि.भाषाविद् नारायण भट्टए दोनों पूर्वी चालुक्य राजा राजराजा नरेंद्र के दरबारी.पुरस्कार विजेता थेए जिन्होंने महाभारत का एक तेलुगु अनुवाद शुरू कियाए जो हालांकि अधूरा हैए फिर भी इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है। तेलुगु साहित्य का विकास इन प्रख्यात विद्वानों ने कन्नड़ में भी लिखा। पम्पा प्रथम और नागवर्मा प्रथम जैसे बाद के कन्नड़ कवियों की उत्पत्ति भी वेंगी में ही हुई थी।

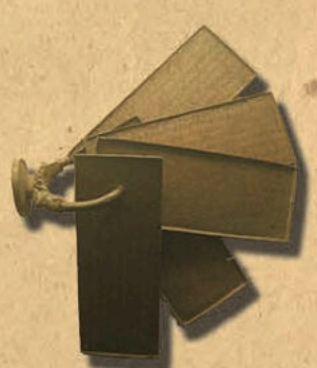
Nannaya, the scholar-poet, and the eminent poet-linguist Narayana Bhatta, both court-laureates of the Eastern Chalukya king Rajaraja Narendra, began a Telugu translation of the Mahabharata, which, although unfinished, is still regarded as an important milestone in the development of Telugu literature. These eminent scholars wrote in Kannada as well. The later Kannada poets such as Pampa I and Nagavarma I also had origins in Vengi.



राजराजा की पेंटिंग (1019-1061 सी.)
Statue of Rajaraja Narendra (c. 1019–1061)



रुद्र प्रतिमा ए 7 वीं सदी ईसवी ए पूर्वी चालुक्यों के अधीन वस्त्राभूषण की ओर इंगित करते हुए।
Rudra statue, 7th Cent CE, indicating jewellery and dressing under Eastern Chalukyas.



10 वीं शताब्दी सीई राजा अम्मा प्प् के शासनकाल का ताम्र.प्लेट शिलालेखए जो कन्नड़.तेलुगु लिपि में संस्कृत के साथ लिखा गया है। उनके शासन में तेलुगु और कन्नड़ साहित्य की बहुत उन्नति हुई थी।

10th Cent.CE copper-plate inscriptions of king Amma II, with Sanskrit written in the Kannada-Telugu Script. Telugu and Kannada literature experienced a great ferment under their rule.



वेंगी चालुक्य वंश का राजचिन्ह वराह ।
'Varaha' or boar emblem of Vengi Chalukyas.



द्राक्षाराम्म में भीमेश्वर स्वामी मंदिर के दृश्य। इस मन्दिर का निर्माण भीम 1 द्वारा लगभग 9वीं.10वीं शताब्दी सीण्ईण् में किया गया। वेंगी चालुक्यों ने पल्लव और बादामी वास्तुकला के प्रभावों को अपने स्वयं के नवाचारों के साथए अपने मंदिर वास्तुकला में मिश्रित किया। विचारों का यह मुक्त प्रवाह बौद्धिक स्वतंत्रता और शासकों द्वारा पोषित लोकतांत्रिक भावना को दर्शाता है।

Bhimeshwara Swamy Temple at Draksharamam, built by Bhima I, circa 9th to 10th Cent CE. The Vengi Chalukyas blended Pallava and Badami influences, along with their own innovations, in their temple architecture. This free flow of ideas and influences indicates intellectual freedom and a democratic spirit fostered by the rulers.



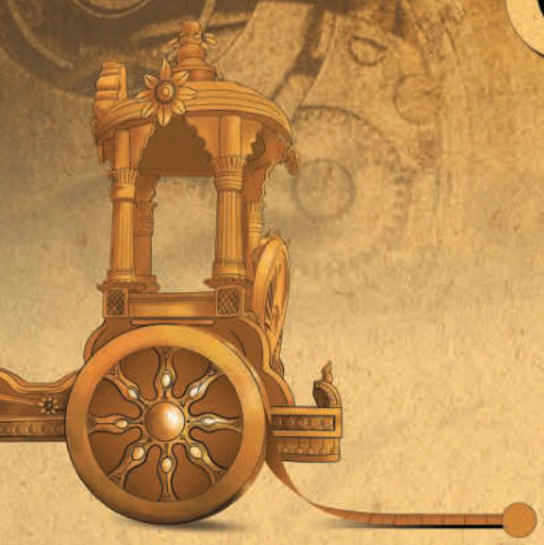
गोलिंगेश्वरस्वामी मंदिरए बिक्कावोलुए आंध्र प्रदेश के दृश्य। इसके पटलों पर उकेरी गई मूर्तियां हमें पूर्वी चालुक्यों के अधीन मूर्तिकला तथा पत्थर की नकाशी के विकास की एक झलक देती हैं।

Golingeshwaraswamy temple, Bikkavolu, Andhra Pradesh. Sculptures embossed into its panels portray the developments in sculpture under the Eastern Chalukyas, indicating advances made in craftsmanship and stone-cutting.



सातवीं शताब्दी सीण्ईण् में शुरुआती वेंगी चालुक्यों द्वारा निर्मितए अम्बापुरम रॉक.कट जैन गुफा मंदिरों के दृश्य। यह इंगित करता है कि शैव संप्रदाय को मानने वालेए वेंगी चालुक्यों ने भी जैनियों को संरक्षण प्रदान किया हुआ था। यह उनके द्वारा पोषित लोकतंत्र और सहनशीलता की भावना को दर्शाता है।

Ambapuram rock-cut Jain Cave temples, built by the early Vengi Chalukyas, 7th Ctent CE, indicating that although staunch Shaivas, the Vengi Chalukyas also patronized Jainism, indicating a spirit of democracy and tolerance fostered by the rulers.





कर्कोटा राजवंश
Karkotas

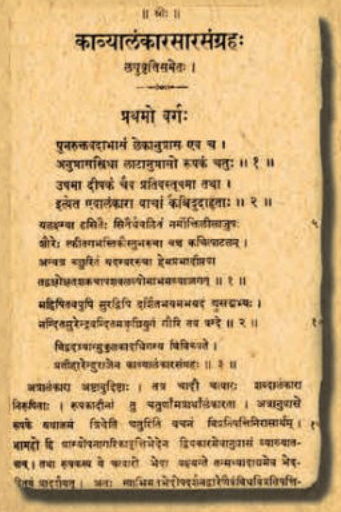
7 वीं से 9 वीं शताब्दी ई. लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(7th - 9th Century CE- reigned for nearly 300 years)

कश्मीर में स्थित एक क्षेत्र पर शासन किया साथ ही उन्होंने वो 9वीं शताब्दी के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के अंतर्गत कुछ उप हिमालयी भागों पर भी शासन किया। कर्कोटा में सबसे प्रसिद्ध शासक ललितादित्य मक्तापीड़ हुए, जिन्होंने एक ऐसे शासन को अध्यक्षता की जिसने न केवल व्यापक विजय प्राप्त की बल्कि विशाल बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियां भी देखी।

कश्मीर की की भौगोलिक स्थिति में पानी की उपलब्धता आसानी से होने के कारण भूमि की सिंचाई बहुत आसान हो जाती है। गर्मियों के दौरान जब बर्फ गिरती है तो अक्सर घाटी में बाढ़ आ जाती है। अतः कृषि योग्य भूमि को बाद की आपदाओं से बचाने के लिए तथा जल को संरक्षित करने के लिए सिंचाई के उद्देश्य से नई तकनीकी विधियों की शुरुआत की गई। विशेष रूप से ललितादित्य ने चक्रधारा : आधुनिक तसकदारद्ध करेवा के माध्यम से झेलम नदी से पानी उठाकर सिंचाई के लिए विशेष प्रावधान किया। कल्हण ने राजतरंगिणी में पानी निकालने की तकनीक पहिए : अरहट्टाद्ध और इसके माध्यम से विभिन्न गाँवों में जल वितरण का उल्लेख किया है। साथ ही वितस्ता नदी के जल को चनैलाइज करने का भी वर्णन है।

The Karkotas, a dynasty based in Kashmir, ruled over the region, as well as some other sub-Himalayan parts in the Northern portion of the Indian subcontinent from 7th - 9th Cent CE. The best known ruler among the Karkotas was Lalitaditya Muktapida, whose reign saw not only widespread conquests, but also immense intellectual and cultural activity.

The topography of Kashmir makes irrigation of land very easy due to the availability of water that helps in irrigation. The floods often occurred in the valley during the summers when the snow melted. So, to protect the cultivable lands from flood disasters and conserved the water for irrigation purpose new technological methods were introduced. Especially, Lalitaditya introduced special provisions for the irrigation of Cakradhara (modern Tasakdar) Karewa by lifting water from river Jhelum. Kalhana in his work gives a detailed account of the construction of a series of water wheels (arhatta) and its distribution to various villages and also mentions channelling the water of the river Vitasta.



॥ श्रीः ॥

काव्यालंकारसारसंग्रहः

छन्दवृत्तिसमेतः ।

प्रथमो वर्गः

पूर्वरूपदाभागं लेकानुप्रास एव च ।
अनुप्रासश्चित्रा लाटानुप्रासो रूपकं चतुः ॥ १ ॥
उपमा दीपकं चैव प्रतिवस्तूपमा तथा ।
इत्येत यदालंकारा वाचां कविदृष्टाहाः ॥ २ ॥

यदक्ष्मा दसितः सितैर्यवलितं नर्मोक्तिलीलाजुषः
शीरेः स्फीतमभक्तिकैतुनरुचा यच्च कचिच्चाटलम् ।
अन्यत्र मधुरिपुं यदग्यरुचा हेमप्रभाहारिणा
तद्भोक्तसकचपञ्चकलणोमाभमवाजगत् ॥ १ ॥

महिश्चिवपृथि सुरद्रि दर्शितभयमभयं मुसद्धभ्यः ।
नन्दिसुरेन्द्रवन्दितमकृतिमुखं गौरि तव वन्दे ॥ २ ॥

विद्वद्रत्नाम्बुकुलकारविलस्य विवेकले ।
प्रतीहारेन्दुराजेन काव्यालंकारसंग्रहः ॥ ३ ॥

अथालंकारा अष्टादिशः । तत्र चारी चाराः शब्दालंकारा निरूपिताः । रूपकादीनां तु चतुर्णामर्थालंकाराणां । अथानुप्रासे रूपके यथाक्रमं त्रिरेवेति चतुरिति वचनं विप्रतिपत्तिनिरासार्थम् । ननु यदि शब्दालंकारादिभेदेन द्विप्रकारमेवालङ्कारसामान्यं तथा रूपकस्य ये चाराः भेदा उदाहृते तस्यापालङ्कारस्यैव भेदा-

संस्कृत पाठ काव्यलंकारसरसंग्रह का एक भागए राजा जयापिदा के कवि.साहित्यकार उद्भट द्वारा लि खित काव्यशास्त्र पर एक टिप्पणी। कर्कोटा के राजाओं के दरबार ऐसी साहित्यिक प्रतिभाओं से सुशोभित थे। महाकाव्य हरविजय रत्नाकर द्वारा लिखा गया थाए जो कर्कोटा राजकवि भी थे।

A portion of the Sanskrit text Kavyalankarasarasangraha, a commentary on poetics authored by Udbhata, the poet-laureate of king Jayapida. The courts of the Karkota kings were adorned with such literary geniuses. The epic Haravijaya was penned by Ratnakara, also a Karkota laureate.



कर्कोटा वंश के राजा वजरादित्य ;विग्रह देवद्ध के सिक्केए 766.770 सी। अग्रभागरू अमूर्त राजा को खड़े हुए दर्शाता है उल्टारू माला और कॉर्नुकोपिया धारण किए बैठी हुई देवी अर्डोक्स्रो।

Coin of king Vajraditya (Vigraha Deva) of the Karkota dynasty, c. 763–770. Obverse: Depicts abstract king standing Reverse: seated goddess holding garland.



कश्मीर से वैकुंठ विष्णु, लगभग 8वीं शताब्दी ईस्वी, नरसिम्हा अवतार का प्रतिनिधित्व करने वाले शेर के सिर और वराह अवतार का प्रतिनिधित्व करने वाले वराह के सिर के साथ। ये कर्कोटा के तहत मूर्तिकला के एवं शिल्पकारी के विकास को चित्रित करते हैं तथा समकालीन वस्त्राभूषण का परिचय भी ।

Vaikuntha Vishnu from Kashmir, circa 8th Cent CE, with the lion head representing the Narasimha (lion) incarnation, and the boar head, representing the Varaha (boar) incarnation. These specimens portray the developments within sculpture under the Karkotas, indicating the advances made in craftsmanship, and idea about textile and jewellery.



अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर, में ललितादित्य मुक्तापीड़ा द्वारा 8वीं शताब्दी में निर्मित मार्तंड सूर्य मंदिर गांधार, गुप्त और चीनी प्रभावों के संयोजन वाला मंदिर कर्कोटा मंदिर वास्तुकला का एक बेहतरीन नमूना है। यह मुक्त प्रवाह सहनशीलता और लोकतंत्र की भावना को दर्शाता है।

Martand Sun Temple, Anantnag, Jammu and Kashmir, built by Lalitaditya Muktapida in the 8th Cent CE. The temple, combining Gandhara, Gupta and Chinese influences, is a fine specimen of Karkota temple-architecture. The free-flow of influences indicates a spirit of toleration and democracy.



परिहासपुरा में स्तूप के खंडहरए राजा ललितादित्यए बारामूला जिलाए जम्मू और कश्मीर द्वारा निर्मित नई राजधानी। उनके बौद्ध मंत्रीए चंकुना के शिलालेख से संकेत मिलता है कि इस स्थान पर एक विहार ;मठद्ध और एक चैत्य ;मंदिरद्ध भी थाए जो कर्कोटा के तहत बौद्ध धर्म को शाही संरक्षण का संकेत देता हैए जो उनके अधीन सहिष्णुता और लोकतंत्र की भावना को दर्शाता है।

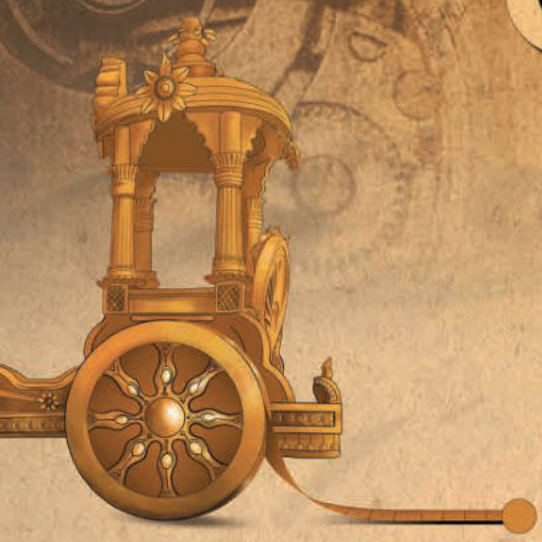
Ruins of the Stupa at Parihaspura, the new capital built by king Lalitaditya, Baramulla district, Jammu and Kashmir. The inscription of his Buddhist minister, Chankuna, indicates that the site also had a vihara (monastery) and a chaitya (temple), indicating royal patronage to Buddhism under the Karkotas, showing the spirit of tolerance and democracy that prevailed under them.

नीलमतपुराणम् ।

NĪLAMATAPURĀNAM

उल्लेखनीय धार्मिक ग्रंथों जैसे नीलमत पुराण .. जिसको एक स्रोत के रूप में इतिहासकार कल्हण ने राजतरंगिणी लिखने में इस्तेमाल किया था .. और विष्णुधर्मोत्तर पुराण कर्कोटा राजाओं द्वारा तैयार करवाए गए थे।

Notable religious works such as the Nilamata Purana, which was used by the historian Kalhana as a source for writing his work- the Rajatarangini, and the Vishnudharmottara Purana were commissioned by them.





गुहिल राजवंश
Guhilas

8 वीं से 14 वीं शताब्दी ई. लग भग 700 वर्षों तक शासन किया
(8th - 14th Century CE- reigned for nearly 700 years)

गुहिल एक राजपूत राजवंश थे, जिन्होंने 8वीं-14वीं शताब्दी सी.ई. के दौरान राजस्थान में वर्तमान मेवाड़ पर शासन किया था। गुर्जर-प्रतिहार राजाओं के सामंतों के रूप में शुरुआत करते हुए, उन्होंने 11वीं शताब्दी सी.ई. में स्वतंत्रता की घोषणा की। नागदा-आहार गुहिलों का साम्राज्य 14 वीं शताब्दी की शुरुआत में चित्तौड़गढ़ पर खलजी की विजय के साथ समाप्त हो गया। कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था।
सिंचाई तथा पीने के पानी के लिए टंक खोदे गए तथा वर्षा जल का संचयन किया गया। राजा बप्पा रावल और प्रतिहार राजा नाममहल के अधीन शासकों के गठबंधन ने 711 ई. में अरबों को हराया और उन्हें सिंध में पीछे हटने के लिए मजबूर किया।

The Guhilas , a Rajput dynasty, ruled over the present-day Mewar in Rajasthan from 8th - 14th Cent CE. Initially feudatories of the Gurjara-Pratihara kings, they declared independence in the 11th Cent CE. The kingdom of the Nagda-Ahar Guhilas ended with the Khalji conquest of Chittorgarh in the early 14th Cent CE.
Agriculture was the mainstay of the people. The state dug out tanks and collected rain water in ponds for drinking and irrigation purpose. An alliance of king Bappa Rawal and rulers under Pratihar King Nagabhata I defeated the Arabs in 711 CE and forced them to retreat to Sindh.



अचलेश्वर महादेव मंदिर सिरोहीए राजस्थान। परिसर में खोजे गए शिलालेख में पहली बार गुहिला वंश के पूर्वज बप्पा रावल का उल्लेख है। हालांकि गुहिलों की उत्पत्ति लोक गाथा में दबी पड़ी हैए पारंपरिक रूप से 8 वीं शताब्दी सीई में बप्पा रावल को उनके संस्थापक के रूप में माना जाता है। अभिलेखों और चारण साहित्य से संकेत मिलता है कि 12 वीं शताब्दी सीई मेंए राजवंश दो शाखाओं में विभाजित हो गयाए वरिष्ठ श्रावलश् शाखाए जिसने चित्तौड़ पर शासन कियाए और उनके वंशजए कनिष्ठ श्राणाश् शाखाए जिसने मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश की स्थापना की।

Achaleshwar Mahadev Temple at Sirohi, Rajasthan. The inscription discovered at the premises mentions the Guhila dynasty's ancestor, Bappa Rawal, for the first time. Although the origins of the Guhilas is obscured by legends, Bappa Rawal , conventionally placed in the 8th Cent CE, is regarded as their founder. Inscriptions and bardic legends indicate that sometime in the 12th Century CE, the dynasty split into two branches, the senior 'Rawal' branch who ruled from Chittor, and their descendants, the junior 'Rana' branch who went on to found the Sisodia dynasty of Mewar.



गुहिल वंश परंपरा के अनुरूप दंतकथा का चित्रणए बप्पा रावल वरदान स्वरूप मेवाड़ का शासन पाते हुए।

Painting depicting Guhila origin legend, Bappa Rawal receiving the divine mandate to rule Mewar.



नागदाए उदयपुर जिलाए राजस्थान में सहस्त्रबाहु मंदिर परिसर। नागदा कभी गुहिलों की राजधानी थी। नागदा और अहर की अपनी राजधानियों से जुड़े होने के कारणए उन्हें श्नागदा.आहार गुहिलाश् कहा जाता है।

Sahastrabahu Temple Complex at Nagda, Udaipur district, Rajasthan. Nagda was once the capital of the Guhilas. Due to association with their capitals of Nagda and Ahar, they are called the 'Nagda-Ahar' Guhilas.





एकलिंगजी मंदिरए कैलाशपुरीए उदयपुरए राजस्थान। इसके शुरुआती हिस्सेए जो 8वीं शताब्दी के हैंए बप्पा रावल के संबंध में हैं। सहस्त्रबाहु मंदिर परिसर सहित यह मंदिर गुहिलों के मंदिर स्थापत्य कला का बेहतरीन नमूना है। अलंकृत खंभेए शिखर और जटिल नक्काशी चिनाई और शिल्पकारी में उन्नत प्रगति का संकेत देते हैं तथा समकालीन वस्त्राभूषण का परिचय भी।

Eklingji Temple , Kailashpuri, Udaipur, Rajasthan. Its earliest portions, dated to the 8th Cent CE, have been attributed to Bappa Rawal. This temple, along with the Sahastrabahu temple complex, is a fine specimen of Guhilas temple architecture. The ornate pillars, spires and intricate carvings indicate advanced progress in masonry and craftsmanship, and insights into contemporary dressing and jewellery.





गुर्जर-प्रतिहार
Gurjara-Pratiharas

8 वीं से 11 वीं शताब्दी ई. लग भग 400 वर्षों तक शासन किया
(8th - 11th Century CE- reigned for nearly 400 years)

गुर्जर-प्रतिहारों ने 8वीं-11वीं शताब्दी सीई से उत्तरी और मध्य भारत के विशाल हिस्सों पर शासन किया। प्रारंभ में उज्जैन से शासन करते हुए, उन्होंने बाद में अपनी राजधानी को कन्नौज में स्थानांतरित कर दिया। गुर्जर-प्रतिहारों ने 8वीं शताब्दी की शुरुआत में सिंध पर उमय्यद विजय के बाद भारत में आगे अरब विस्तार को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रतिहार साम्राज्य में अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि उत्पादन पर निर्भर थी। इस प्रकार, उस समय सरकारी राजस्व का प्रमुख स्रोत कृषि उत्पादन से प्राप्त होता था। व्यापार अत्यधिक स्थानीयकृत था और ग्रामीण स्तर फैला हुआ था, जहाँ वस्तु विनिमय संबंधों ने मौद्रिक आदान-प्रदान को बदल दिया। इसके अलावा, नौवीं और दसवीं शताब्दी के अरब यात्रियों ने उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में उत्पन्न होने वाली कई व्यापारिक वस्तुओं का वर्णन किया है। यथा: विभिन्न प्रकार के जानवरों का व्यापार होता था, सबसे अधिक मांग की जाने वाली व्यापार वस्तु में से घोड़ा महत्वपूर्ण था। गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के समय भारतीय राज्यों के साथ-साथ बाहर के उत्पादों का एक सक्रिय आदान-प्रदान मौजूद था। अरब भूगोलवेत्ताओं ने उस काल में प्रयुक्त होने वाले सिक्कों के प्रकारों का भी उल्लेख किया है।

The Gurjara-Pratiharas ruled over vast portions of Northern and Central India from 8th - 11th Cent CE. Initially ruling from Ujjain, they later shifted their capital to Kannauj. The Gurjara-Pratiharas played an important role in halting further Arab expansion into India after the Umayyad conquest of Sindh in the early-8th Century. Economy in Pratihara Empire was mainly dependent on agricultural production. Thus, the major source of government revenue at that time was the tax derived from the bulk of agricultural production. Trade was highly localised and dispersed to the village level, where barter relationships replaced monetary exchanges. Also, Arab travellers of the ninth and tenth centuries described a number of trade goods originating in various parts of the subcontinent, which moved to market by a variety of pack animals. Indeed, one of the most consistently demanded trade item have been the horse itself. An active exchange of products internal to Indian kingdoms, as well as to outside, existed during the time of the Gurjara-Pratihara Empire. The Arab geographers have also mentioned the types of coins used during that period.



राजा मिहिर भोज प्रथम की मूर्ति, 836- 850 सीई, ग्वालियर
Statue of Raja Mihira Bhoja I (c. 836–885 CE), Gwalior

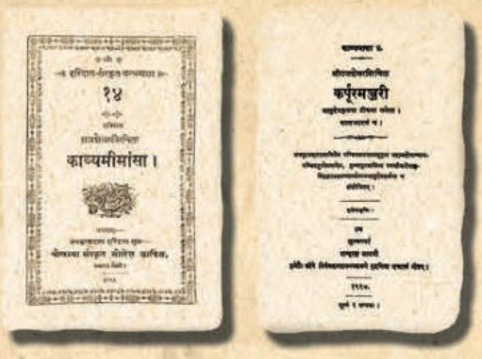


प्रतिहार शिलालेख, 980 सीई संस्कृत में - नागरी भाषा, यह विश्वमूर्ति के एक मंदिर के निर्माण को एक सीढ़ीदार कुएं के साथ रिकॉर्ड करता है।
Pratihara Inscription, 980 Cent. CE in Sanskrit-Nagari language, it records the construction of a temple of Vishwamurti together with a step well.



गुर्जर प्रतिहार राजा मिहिर भोज 1, के सिक्के, लगभग 9वीं शताब्दी सीई। अग्रभाग में वराह का प्रतीक है, जबकि पिछले भाग में उनकी उपाधि श्रीमद आदि वराह' अंकित है। यह वंश मिहिर भोज प्रथम और उनके पुत्र महेंद्रपाल प्रथम के शासनकाल तक अपने चरम पर था। महेंद्रपाल के समय उनका साम्राज्य मोटे तौर पर क्षेत्रफल में गुप्त साम्राज्य के बराबर हो गया था, जो पश्चिम में सिंध से लेकर पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक फैला हुआ था।

Coins of the Gurjara Pratihara king Mihira Bhoja I, circa 9th Cent CE. Obverse contains the Varaha or boar symbol, while the reverse contains the legends 'Shreemad Adi Varaha', a title of his. The kingdom was at its peak under Mihira Bhoja I and his son, Mahendrapala I. By Mahendrapala's reign, their empire had become roughly equal to the Gupta Empire in size, extending from Sindh in the West to Bengal in the East, and the Himalayas in the North to the Narmada River in the South.



संस्कृत के विद्वान राजशेखर, गुर्जर-प्रतिहार राजा महेंद्रपाल और उनके पुत्र महिपाल के दरबार से जुड़े थे। उनकी सबसे महत्वपूर्ण कृतियाँ काव्यमीमांसा और कर्पूरमंजरी हैं। काव्यामीमांसा अनिवार्य रूप से कवियों के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है, जो एक अच्छी कविता के तत्वों और रचना की व्याख्या करती है।

The Sanskrit scholar Rajashekhara, associated with the court of the Gurjara-Pratihara King Mahendrapala and his son Mahipala. His most important works are Kavyamimamsa and Karpurmanjari. Kavyamimamsa is essentially a practical guide for poets that explains the elements and composition of a good poem.

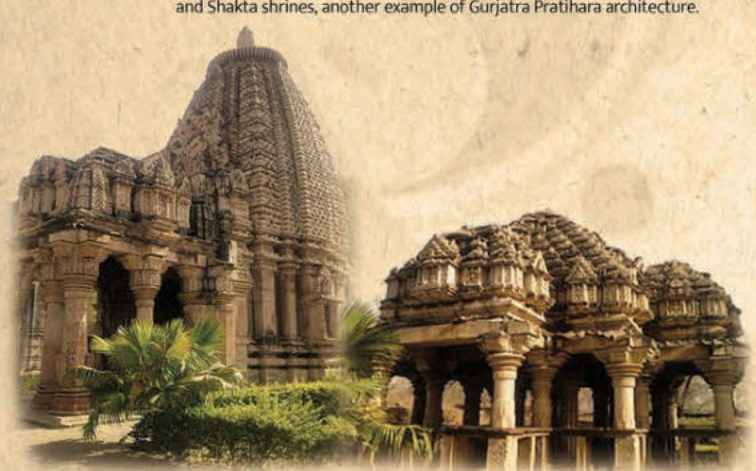


देवी महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा का एक रूप, 9वीं शताब्दी सीई। जैन कथाओं से उद्धृत "यक्ष' या प्रकृति-भावना गोकर्ण, अपने जीवन साथी के साथ 8वीं शताब्दी। यह एक समानांतर शाक्त और जैन धर्म की मौजूदगी का संकेत देती है। साथ ही धार्मिक अल्पसंख्यकों द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता शासकों द्वारा पोषित सहिष्णुता और लोकतंत्र की भावना को दर्शाती है, तथा समकालीन वस्त्राभूषण की ओर इंगित भी ।

Goddess Mahishasuramardini, a form of Durga, 9th Cent CE, and the 'yaksha' or nature-spirit Gokarna from Jain legends, with his consort, 8th Cent CE, indicating a parallel Shakta and Jain presence. The freedom enjoyed by religious minorities shows a spirit of tolerance and democracy fostered by the rulers. These sculptures also indicate the state of jewellery and dressing.



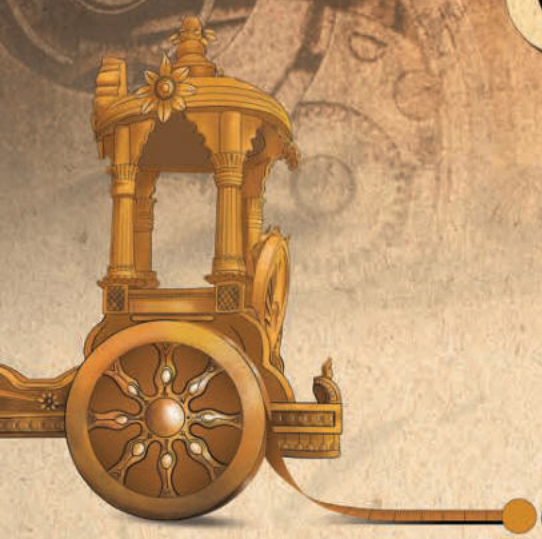
बटेश्वर मंदिर परिसर, चंबल नदी घाटी। मध्य प्रदेश, लगभग 8वीं-10वीं शताब्दी, जिसमें शैव, वैष्णव और शाक्त मंदिर शामिल हैं, गुर्जर प्रतिहार वास्तुकला का एक और अद्भुत उदाहरण है।
Bateshwar Temple Comples, Chambal River Valley, Madhya Pradesh, circa 8th to 10th Cent CE, comprising Shaiva, Vaishnava and Shakta shrines, another example of Gurjatra Pratihara architecture.



घाटेश्वर महादेव मंदिर, बरौली मंदिर परिसर, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, 10वीं-11वीं शताब्दी।
Ghateshwar Mahadeva Temple, Baroli Temple Complex, Chittorgarh, Rajasthan, 10th -11th Cent CE.



तेली का मंदिर या तेलिका मंदिर ग्वालियर सिरका 8वीं 9वीं शताब्दी जो गोपागिरी शैली में निर्मित है।ग प्रतिहार गुर्जरी शैली में निर्मित विशिष्टता के साथ
'Teli ka Mandir' or Telika Temple, Gwalior, circa 8th - 9th Cent CE, built in the 'Gopagiri' style, typical of Gurjara-Pratihara architectecture.





तोमर राजवंश
Tomaras

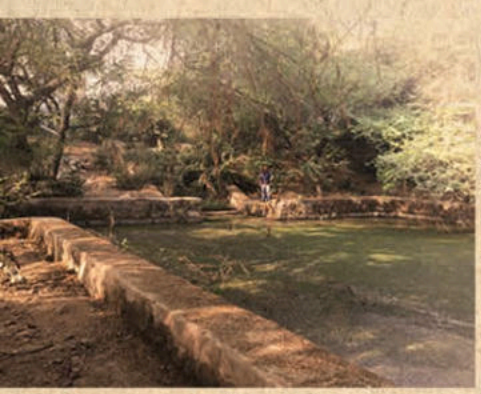
8वीं से 12वीं शताब्दी ई. लगभग 500 वर्षों तक शासन किया
(8th - 12th Century CE- reigned for nearly 500 years)

तोमर, एक राजपूत वंश, जसने 8वीं-12वीं शताब्दी के दौरान आधुनिक दिल्ली और हरियाणा के क्षेत्रों पर शासन किया। राजा अनंगपाल द्वितीय जो अनंगपाल तोमर के नाम से लोकप्रिय थे उन्होंने ढिल्लिका की स्थापना की जो अंततः दिल्ली के नाम से जाना जाने लगा। लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। प्रमुख फसलें सरसों, गेहूँ, चावल, चना आदि थीं। सिंचाई के स्रोत वर्षा, नदियाँ, कुएँ, तालाब आदि थे।

The Tomaras, a Rajput dynasty, ruled over territories comprising modern-day Delhi and Haryana from 8th- 12th Cent CE. King Anangpal II, popularly known as Anangpal Tomar. He was the founder of Dhillika, which eventually became Delhi. The main occupation of the people was agriculture. The principal crops were mustard, wheat, rice, gram, etc. The source of irrigation were rain, rivers, wells, ponds, to etc.



राजा अनंगपाल तोमर को दर्शाती पेंटिंग
Painting depicting King Anangpal Tomar



राजा अनंगपाल द्वितीय (1051-1081 शताब्दी) द्वारा अनंग ताल बावड़ी निर्मित करवाई गई।

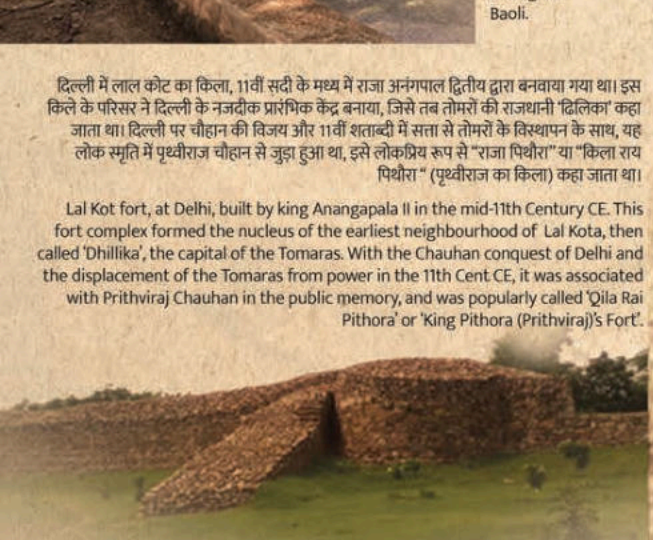
King Anangpal II (c.1051 – c.1081) also constructed Anang Tal Baoli.



तोमर राजा अनंगपाल द्वितीय द्वारा जारी 'जितल' कहे जाने वाले बिलोन/मिश्र धातु के सिक्के, धातु विज्ञान में हुई प्रगति का संकेत देते हैं।
Billon/alloy coins called 'jitals' issued by the Tomara king Anangapala II, indicating advances made in metallurgy.

दिल्ली में लाल कोट का किला, 11वीं सदी के मध्य में राजा अनंगपाल द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। इस किले के परिसर ने दिल्ली के नजदीक प्रारंभिक केंद्र बनाया, जिसे तब तोमरों की राजधानी 'ढिलिका' कहा जाता था। दिल्ली पर चौहान की विजय और 11वीं शताब्दी में सत्ता से तोमरों के विस्थापन के साथ, यह लोक स्मृति में पृथ्वीराज चौहान से जुड़ा हुआ था, इसे लोकप्रिय रूप से "राजा पिथौरा" या "किला राय पिथौरा " (पृथ्वीराज का किला) कहा जाता था।

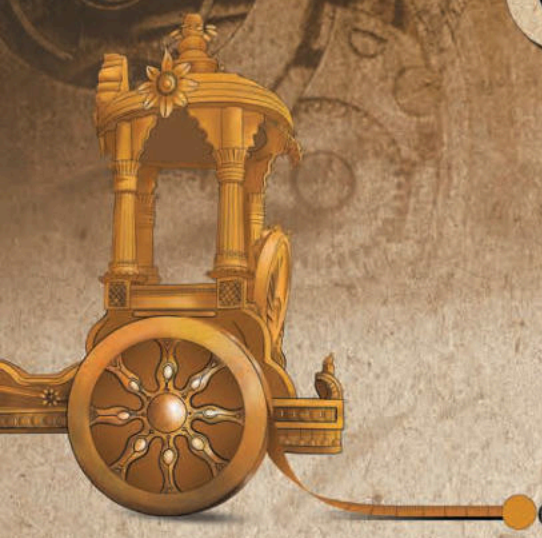
Lal Kot fort, at Delhi, built by king Anangapala II in the mid-11th Century CE. This fort complex formed the nucleus of the earliest neighbourhood of Lal Kota, then called 'Dhillika', the capital of the Tomaras. With the Chauhan conquest of Delhi and the displacement of the Tomaras from power in the 11th Cent CE, it was associated with Prithviraj Chauhan in the public memory, and was popularly called 'Qila Rai Pithora' or 'King Pithora (Prithviraj)'s Fort'.





दिल्ली में लाल कोट का किला, 11वीं सदी के मध्य में राजा अनंगपाल द्वितीय द्वारा बनवाया गया था। इस किले के परिसर ने दिल्ली के नजदीक प्रारंभिक केंद्र बनाया, जिसे तब तोमरों की राजधानी 'ढिलिका' कहा जाता था। दिल्ली पर चौहान की विजय और 11वीं शताब्दी में सत्ता से तोमरों के विस्थापन के साथ, यह लोक स्मृति में पृथ्वीराज चौहान से जुड़ा हुआ था, इसे लोकप्रिय रूप से "राजा पिथौरा" या "किला राय पिथौरा " (पृथ्वीराज का किला) कहा जाता था।

Suraj Kund lake, Faridabad, Haryana. Although definitely dating the monument is difficult, it is estimated that it dates back to an early phase of the Tomara rule, circa 8th Cent CE. Concern for water conservation and irrigation shown by Tomara rulers indicates a scientific spirit.





पालवंश
Palas

8 वीं से 12 वीं शताब्दी ई. लगभग 500 वर्षों तक शासन किया
(8th-12th Century CE – reigned for nearly 500 years)

पालवंश के शाशकों ने बंगाल और पूर्वी बिहार के साथ-साथ उत्तर-पूर्वी भारत और उड़ीसा के कुछ हिस्सों पर 8वीं-12वीं शताब्दी तक शासन किया। वे सैन्य कौशल के लिए भी प्रसिद्ध थ। मध्य और दक्षिण-पूर्व एशिया के क्षेत्रों तक उनका व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव रहा। पालवंश के पहले राजा, गोपाल का चुनाव एक लोकतांत्रिक लोकाचार की व्यापकता को दर्शाता है।

The Palas ruled over Bengal and Eastern Bihar, as well as portions of North-Eastern India and Orissa, from 8th - 12th Cent CE. Noted for their military prowess, they also exerted vast cultural influence over regions as far as Central and South-East Asia. The election of the first Pala king, Gopala, indicates the prevalence of a democratic ethos.

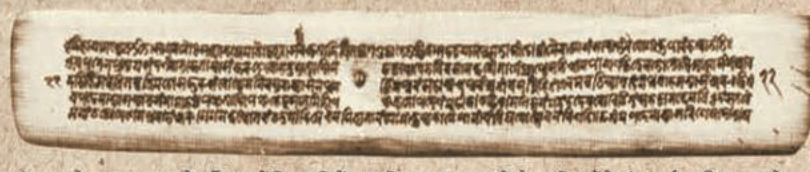


पाल राजचिन्ह , धम्म चक्क पवत्तन ।
Pala emblem, Dhammachakka Pavattana.



नारायणपाल का बादल स्तंभ शिलालेख (9वीं सदी के उत्तरार्ध और 10वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध)। नारायणपाल की एक 'चक्रवर्ती' या सार्वभौमिक सम्राट के रूप में प्रशंसा करता है तथा यह उनके ब्राह्मण मुख्यमंत्री दरभापानी को एक बुद्धिमान परामर्शदाता के रूप में भी प्रशंसा करता है, जो उनके शासनकाल में हिंदुओं द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता और उच्च स्थिति का संकेत देता है।

The Badal pillar inscription of Narayanapala (reigned circa late-9th and early-10th Cent CE). While praising Narayanapala as a 'Chakravartin' or universal emperor, it also praises his Brahman chief minister Darbhapani as a wise counsellor , indicating the freedom and high status enjoyed by Hindus in their reign.



पालवंश काल के मध्य मुख्य रूप से पूर्वी भारत में भिक्षु-कवियों द्वारा रचित गूढ़ या रहस्यमयी बौद्ध कविताओं के संग्रह चर्यपद की एक ताड़ के पत्ते की पांडुलिपि का भाग। प्रोटो-बंगाली के एक रूप में लिखी गयी ये रचनाएं स्थानीय साहित्य के आरंभिक विकास को इंगित करती है।

A portion from a palm-leaf manuscript of the Charyapada, a collection of mystical Buddhist poems composed by monk-poets, mainly during the Pala period in Eastern India. Written in a form of proto-Bengali, it indicates early developments in the vernacular literature .

पहाड़पुर, नौगांव, बांग्लादेश में स्थित सोमापुरा महावीर का केंद्रीय स्तूप, बौद्ध मठ । शिलालेखों से संकेत मिलता है कि राजा धर्मपाल ने 8वीं शताब्दी में मठ की स्थापना की थी, जबकि कुछ अन्य स्रोत उनके उत्तराधिकारियों देवपाल, महेंद्रपाल और महिपाल को नींव का श्रेय देते हैं। बौद्ध धर्म के कट्टर अनुयायी, पालों ने अपने पूरे साम्राज्य में कई बौद्ध मठों की स्थापना की और प्रतिष्ठित नालंदा और विक्रमशिला मठ, उनके समय शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र बन गए थे।

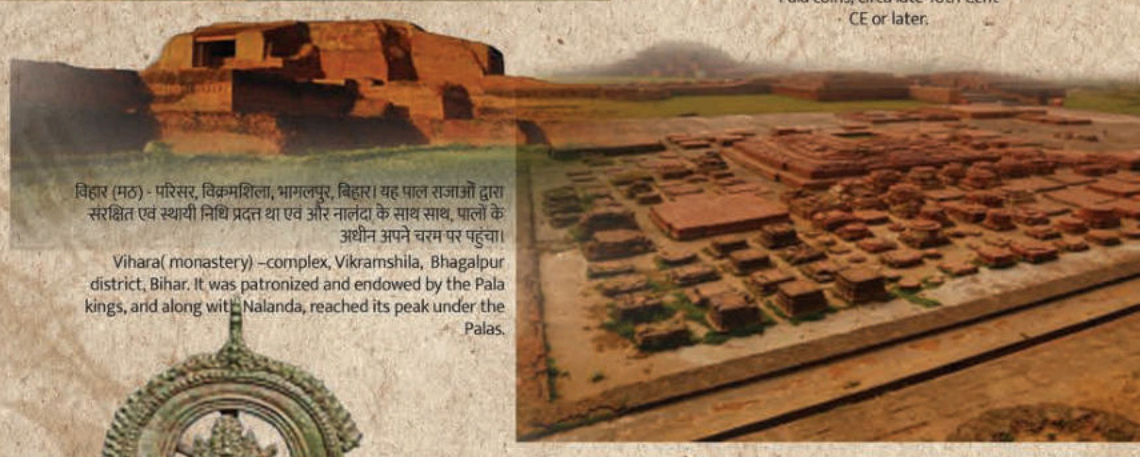
Central stupa from the Somapura Mahavira, the Buddhist monastery at Paharpur, Naogaon, Bangladesh. Inscriptions indicate that king Dharmapala founded the monastery in the 8th Cent CE, while some sources attribute the foundation to the kings Devapala, Mahendrapala and Mahipala , his successors. Staunch followers of Buddhism, the Palas established and endowed several Buddhist monasteries throughout their empire, such as the prestigious Nalanda and Vikramshila monasteries, which became famous centres of learning.





पालवंश काल के सिक्के, लगभग 10वीं शताब्दी के अंत या उसके बाद के।
Pala coins, circa late-10th Cent CE or later.





विहार (मठ) - परिसर, विक्रमशिला, भागलपुर, बिहार। यह पाल राजाओं द्वारा संरक्षित एवं स्थायी निधि प्रदत्त था एव और नालंदा के साथ साथ, पालों के अधीन अपने चरम पर पहुंचा।
Vihara(monastery) –complex, Vikramshila, Bhagalpur district, Bihar. It was patronized and endowed by the Pala kings, arid along with Nalanda, reached its peak under the Palas.



विष्णु और उनके दो अवतार, बिहार, लगभग 9 वीं शताब्दी सी ई ,और एक ताज पहनाया हुआ बुद्ध, बिहार, 10वीं - 11वीं शताब्दी ई. , धातु निर्मित प्रतिमाएँ , पाल शासनकाल में धातु विज्ञान और धातु कला की प्रगति का नमूना।

Vishnu, flanked by two of his avataras, circa 9th Cent, Bihar, and a crowned Buddha, Bihar, 10th - 11th Cent CE, metallic images, indicating the developments in metallurgy and metal crafts under the Palas.

Portrait of the Buddhist monk and philosopher, Atisha Dipankara, a resident-scholar at Vikramshila under the Palas and an early influence in the formation of the Vajrayana or Tibetan school of Buddhism. It is through such scholars that the Pala kings exerted great influence even beyond their kingdom.





एक ताड़ के पत्ते की पांडुलिपि पृष्ठ जिसमें जातक कथाएं अर्थात बुद्ध की जीवन-कथाओं को दर्शाया गया है ।
Page from a palm-leaf manuscript, depicting stories from the Jataka, the life-stories of Buddha.



राष्ट्रकूट का राजचिन्ह, एक चित्र ।
Rashtrakutas emblem, an illustration



राष्ट्रकूट वंश
Rashtrakutas

8 वीं से 10 वीं शताब्दी ई. लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(8th-10th Century CE – reigned for nearly 300 years)



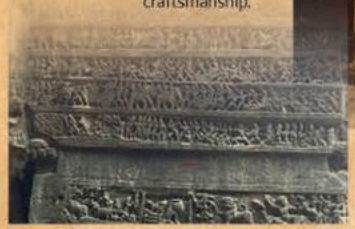
राष्ट्रकूटवंश के शाशकों ने दक्कन में 8वीं-10वीं शताब्दी ई. तक शासन किया। प्रारंभ में बादामी के चालुक्यों के अधीनस्थ रहे तथा बाद में स्वतंत्रता की घोषणा की, और मान्यखेत में अपनी शक्ति का आधार विकसित किया, जो वर्तमान में गुलबर्गा क्षेत्र, कर्नाटक में है, और उन्हें 'मान्यखेत के राष्ट्रकूट' के रूप में जाना जाता है। राष्ट्रकूट शिलालेखों में 'नलगामुंडा' या निर्वाचित स्थानीय प्रशासकों का उल्लेख है, जो स्थानीय लोकतंत्र का संकेत देता है।

The Rashtrakutas ruled from 8th - 10th Century CE in the Deccan. Initially subordinates of the Chalukyas of Badami, they declared independence later, and developed the base of their power in Manyakheta, presently in the Gulbarga region , Karnataka, and were called the 'Rashtrakutas of Manyakheta'. The Rashtrakuta inscriptions mention 'nalgamundas' or elected local administrators, indicating grassroot democracy.



एकल चट्टान से निर्मित एलोरा स्थित कैलाशनाथ मंदिर जिसे राजा कृष्ण प्रथम द्वारा 8वीं शताब्दी ई में निर्मित कराया गया, चिनाई और अत्यधिक कुशल शिल्प कौशल में प्रगति का संकेत देता है।

Kailashanatha Temple, Ellora, built by king Krishna I, 8th Cent CE, from a single rock, indicating advances in masonry and high skill of craftsmanship.



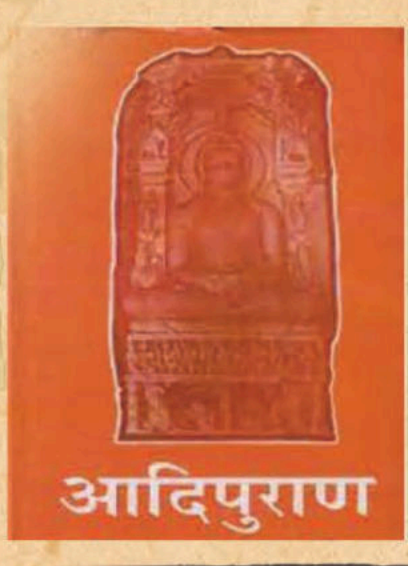


राष्ट्रकूट स्वर्ण मुद्रा, गरुड़ राजचिन्ह समेत ।
Rashtrakuta gold coins with Garuda emblem.

राजा अमोघवर्ष द्वारा काव्यशास्त्र पर आधारित एक ग्रन्थ कविराजमार्ग का एक अंश, 9 वीं शताब्दी ई.। अमोघवर्ष स्वयं एक सक्षम विद्वान थे।

A passage from the Kavirajamarga, a work on poetics by kingAmoghavarsha I, 9th Cent CE, who was also an able scholar.

ಪದನಱಿದು ನುಡಿಯಲುಂ ನುಡಿದುದ
ನಱಿಯಲುಮಾರ್ಪರಾ ನಾಡವರ್ಗಳ್
ಚದುರರ್ ನಿಜದಿಂ ಕುರಿತೋದದೆಯುಂ
ಕಾವ್ಯಪ್ರಯೋಗ ಪರಿಣತಮತಿಗಳ್



जैन भिक्षु एवं दार्शनिक जिननाथ द्वारा लिखित आदि पुराण , जैन दर्शन पर एक ग्रन्थ। इन्हें राजा अमोघवर्ष प्रथम का संरक्षण प्राप्त था।

Adi Purana, a philosophical treatise by the Jain monk –philosopher Jinanatha, who was patronized by Amoghavarsha I.

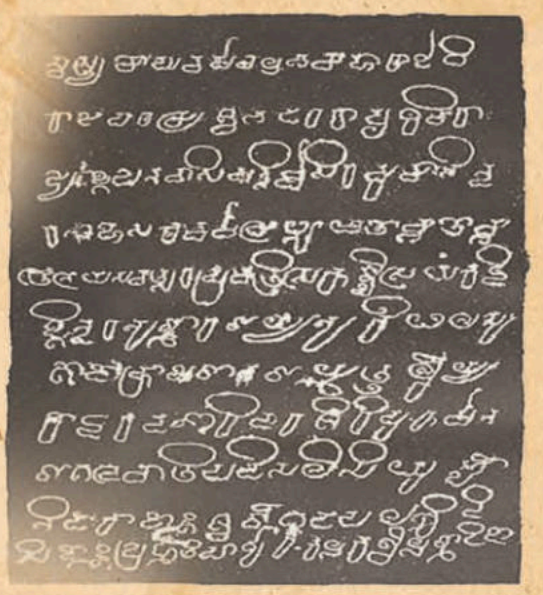


एलोरा गुफाओं का एक पट्ट राष्ट्रकूट सैन्य बल का जायज़ा देते हुए, जिसमें रथ, धनुर्धर, घुड़सवार तथा हाथी शामिल हैं।

A panel from Ellora Caves showing Rashtrakuta military strength, comprising chariots, archers, cavalrymen and war elephants.

अमोघवर्ष प्रथम, सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रकूट राजा का एक शिलालेख, पुराने कन्नड़ में, वीरभद्र मंदिर, कुमसी, 876 ई, स्थानीय भाषाओं की प्रगति दर्शाते हुए ।

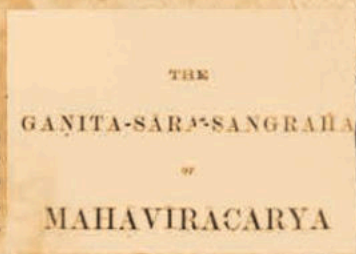
An inscription of Amoghavarsha I, the most famous Rashtrakuta king, in Old Kannada, Veerabhadra Temple, Kumsi, 876 CE, indicating development of vernaculars.

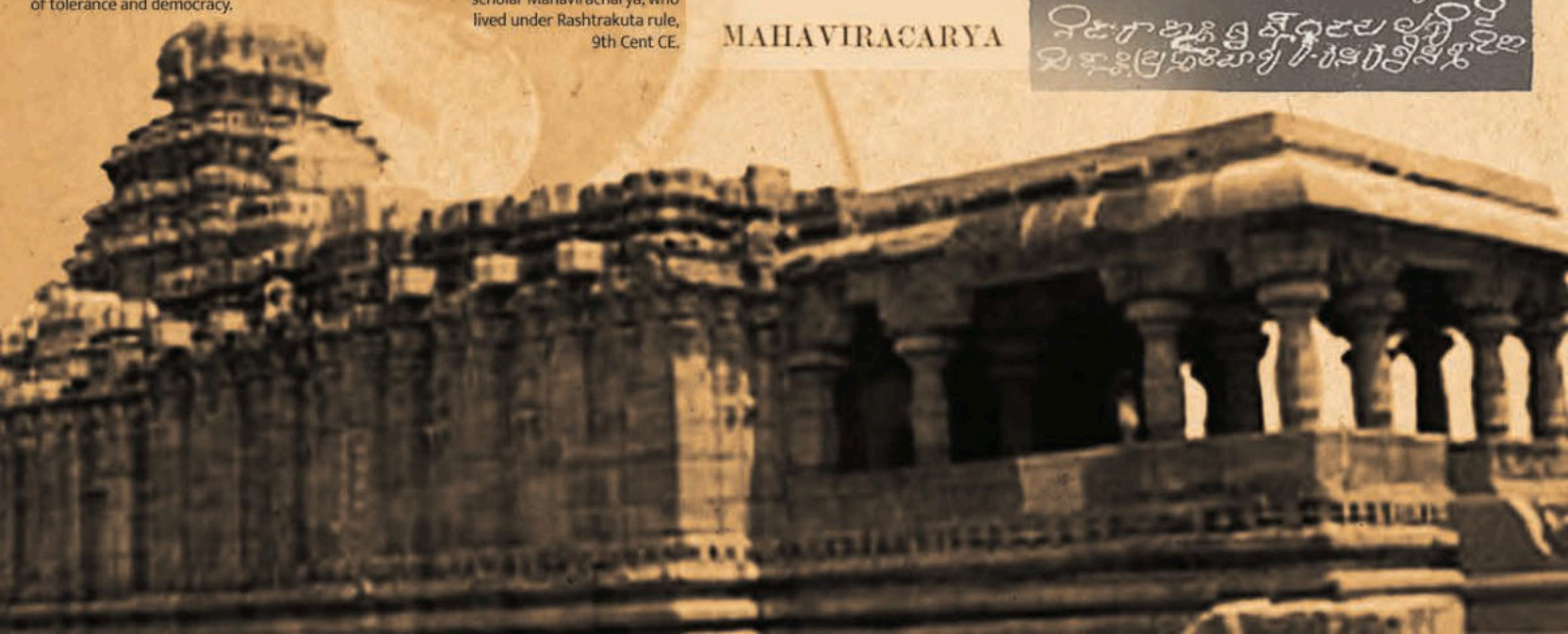


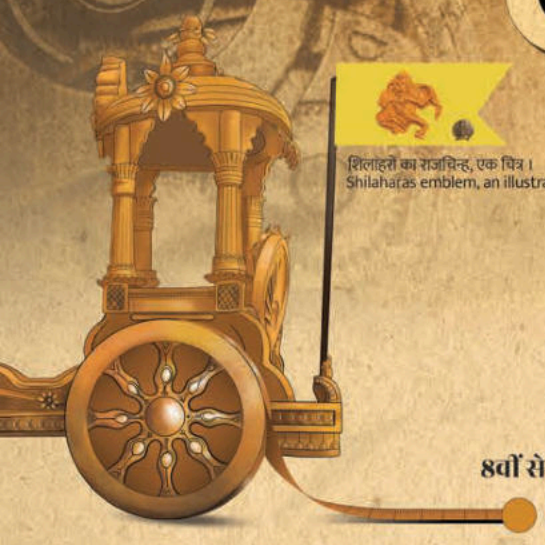
9वीं शताब्दी ई में कर्नाटक के पट्टाकदल में जैन नारायण मंदिर, राष्ट्रकूटों द्वारा निर्मित जैन धर्म के संरक्षण और सहिष्णुता और लोकतंत्र की भावना को दर्शाता है।
The Jain Narayana Temple at Pattakadal, Karnataka, built by the Rashtrakutas , 9th Cent CE, indicating patronage to Jainism and a spirit of tolerance and democracy.

राष्ट्रकूट कालीन विद्वान महावीराचार्य द्वारा गणित पर लिखित ग्रन्थ गणितसारसंग्रह , 9 वीं शताब्दी ई.।

The Ganitasarasangraha, a mathematical treatise by the scholar Mahaviracharya, who lived under Rashtrakuta rule, 9th Cent CE.







शिलाहरों का राजचिन्ह, एक चित्र।
Shilaharas emblem, an illustration



सिल्हारा राजवंश
Shilaharas

8वीं से 13वीं शताब्दी ई. लगभग 600 वर्षों तक लगातार शासन किया।
(8th- 13th Century CE- reigned for nearly 600 years)

शिलाहरों ने वर्तमान महाराष्ट्र के कोकण क्षेत्र में 8वीं और 13वीं शताब्दी ई के मध्य शासन किया था। प्रारंभ में वे राष्ट्रकूटों के जागीरदार थे, बाद में उन्होंने स्वतंत्रत रूप से शासन किया।

The Shilaharas ruled in Konkan region of present-day Maharashtra between 8th and 13th Century CE. Initially feudatories of the Rashtrakutas, they later declared independence.



शिलाहर राजचिन्ह गरुड़
Shilahara emblem, Garuda

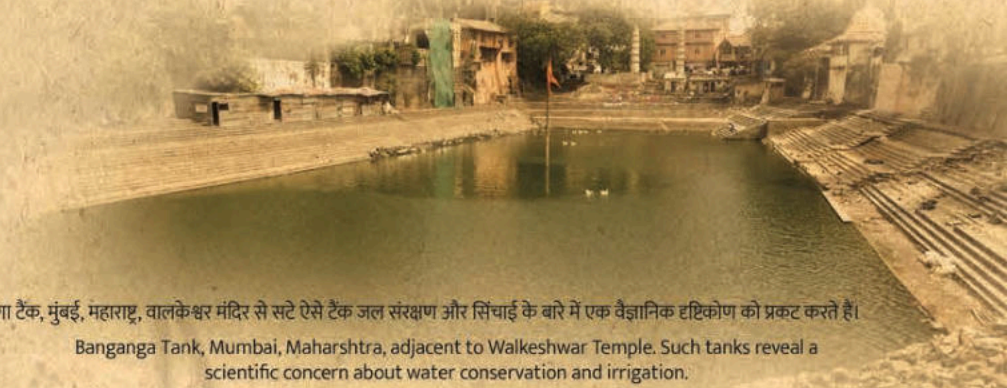


कन्हेरी बौद्ध गुफाएं, मुंबई, महाराष्ट्र जो शिलाहर शासको द्वारा निर्मित की गई। स्वयं वैष्णव होने के बावजूद उन्होंने बौद्ध धर्म को भी प्रश्रय दिया। यह उनकी लोकतान्त्रिक एवं सहिष्णुता का परिचय है।
Kanheri Buddhist Caves, Mumbai, Maharashtra, built by Shilahara rulers, who despite being Vaishnavas patronized Buddhism too, reflecting a tolerant and democratic culture.

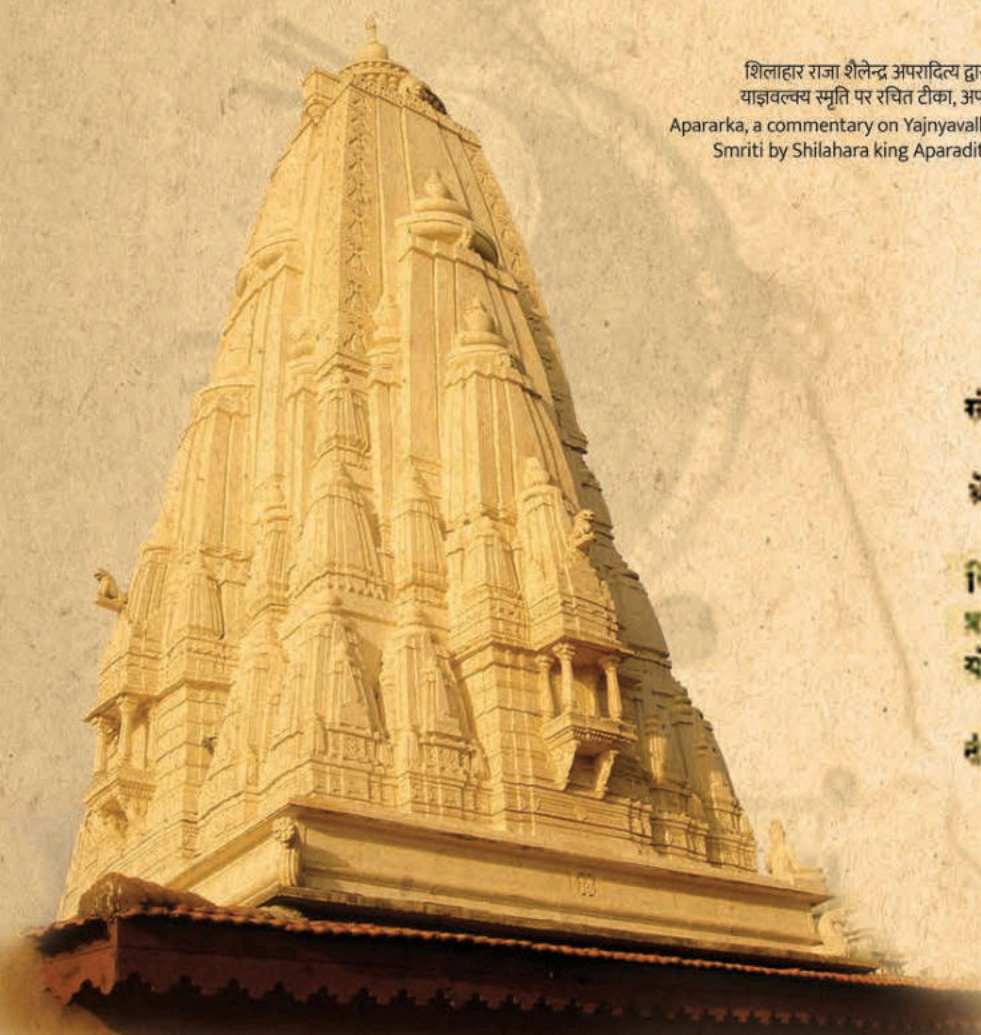




13वीं शताब्दी का शैलेन्द्र के काल का सिक्का
Shilahara coins, circa 13th Cent CE.



बाणगंगा टैंक, मुंबई, महाराष्ट्र, वालकेश्वर मंदिर से सटे ऐसे टैंक जल संरक्षण और सिंचाई के बारे में एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं।
Banganga Tank, Mumbai, Maharshtra, adjacent to Walkeshwar Temple. Such tanks reveal a scientific concern about water conservation and irrigation.



शिलाहार राजा शैलेन्द्र अपरादित्य द्वारा याज्ञवल्क्य स्मृति पर रचित टीका, अपरा
Apararka, a commentary on Yajnyavalkya Smriti by Shilahara king Aparaditya.

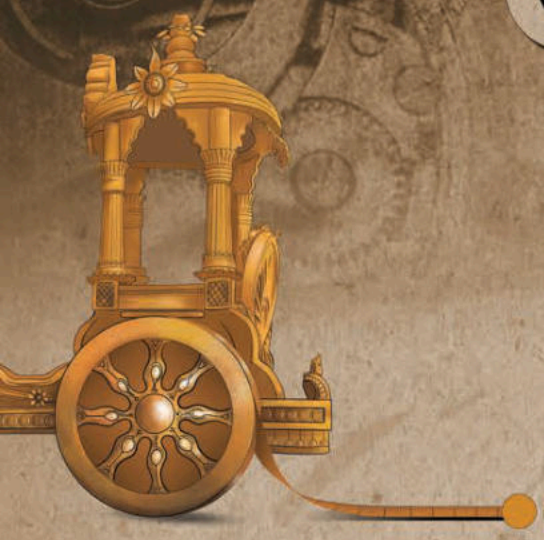
ॐ तत्पुरुषाय नमः ।

अपरार्कापराभिधापरादित्यविरचितटीकासमेता

याज्ञवल्क्यस्मृतिः ।

आचाराध्यायः प्रथमः ।

शिलाहर शासकों द्वारा 12 वीं शताब्दी ई में निर्मित वालकेश्वर शिव मंदिरए मुंबईए महाराष्ट्र।
The Walkeshwar Shiva temple, Mumbai, Maharashtra, 12th Cent CE, built by Shilahara Rulers.





परमार राजवंश
Paramaras

9वीं से 14 वीं शताब्दी ई. लगभग 600 वर्षों तक शासन किया
(9th-14th Century. CE – reigned for nearly 600 years)

परमार एक राजपूत राजवंश थे जिन्होंने 9वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य पश्चिम-मध्य भारत पर शासन किया था। उनका आधार मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र था।

The Paramaras were a Rajput dynasty, who ruled over West-Central India from 9th - 14th Centuries. Their base was the Malwa region, Madhya Pradesh.



11वीं - 12वीं शताब्दी ई. के नरवर्मन का सिक्का, जिसके अग्रभाग पर लक्ष्मी विराजमान हैं और पृष्ठभाग पर राजकथाएं हैं। इसकी बची हुई चमक धातु विज्ञान की एक उन्नत अवस्था का संकेत देती है।

Coin of Naravarman, 11th - 12th Cent CE, with seated Lakshmi on the obverse and royal legends on the reverse. Its surviving lusture indicates an advanced state of metallurgy



12वीं शताब्दी ई में निर्मित चामुंडा की एक मूर्ति जो मध्य प्रदेश के परमार मूर्तिकला शैली है, मूर्तियां कारीगरों और शिल्पकारों की उत्कृष्ट विशेषज्ञता का संकेत देती है। की प्रगति का संकेत देती है।

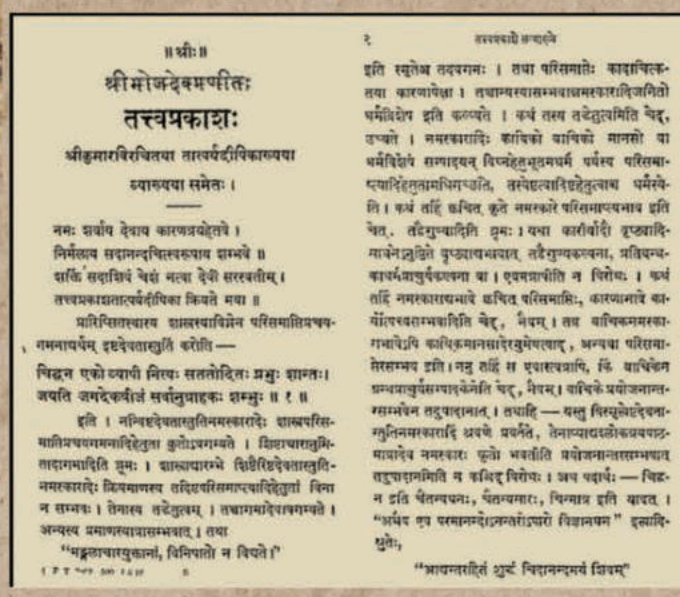
A statue of Chamunda, Paramara sculptural style, Madhya Pradesh, 12th Cent CE, indicating the excellent expertise of the artisans and craftsman and trends in dressing and jewellery



नरवर्मन का विदिशा स्तंभ शिलालेख, लगभग 11वीं-12वीं शताब्दी ई.।
Vidisha Pillar Inscription of Naravarman, circa 11th - 12th Cent CE.



10 वीं शताब्दी ई में गुजरात के शासक सियाका II का हरसोला कॉपर-प्लेट शिलालेख।
Harsola Copper-Plate Inscription of Siyaka II, 10th Cent CE, Gujarat.



॥ श्रीः ॥

श्रीभोजदेवप्रणीतः

तत्त्वप्रकाशः

श्रीकुमारविरचितया तात्पर्यदीपिकाख्यया

व्याख्यया समेतः ।

नमः शर्वाय देवाय कारणत्रयहेतवे ।
निर्मलाय सदानन्दचित्स्वरूपाय शम्भवे ॥
शक्तिं सदाशिवं चेशं नत्वा देवीं सरस्वतीम् ।
तत्त्वप्रकाशतात्पर्यदीपिका क्रियते मया ॥

प्रारिप्सितस्यास्य शास्त्रस्याविघ्नेन परिसमाप्तिप्रत्यय-गमनायार्थम् इष्टदेवतास्तुतिं करोति —

चिद्घन एको व्यापी नित्यः सततोदितः प्रभुः शान्तः।
जयति जगदेकवीरः सर्वानुग्राहकः शम्भुः ॥ १ ॥

इति । नन्विष्टदेवतास्तुतिनमस्कारादेः शास्त्रपरिसमाप्तिप्रत्ययगमनादिहेतुता कुतोऽवगम्यते । शिष्टाचारानुमितादागमादिति ब्रूमः । शास्त्रारम्भे शिष्टैरिष्टदेवतास्तुति-नमस्कारादेः क्रियमाणस्य तदिष्टपरिसमाप्त्यादिहेतुतां विना न सम्भवः । तेनास्य तद्धेतुत्वम् । तथागमादेवावगम्यते । अन्यस्य प्रमाणस्यावासम्भवात् । तथा

"मङ्गलाचारयुक्तानां, विनिपातो न विद्यते।"

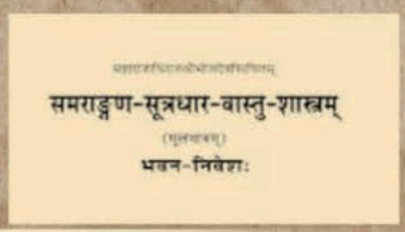
२ तत्त्वप्रकाशे कारणत्रये

इति स्मृतेश्च तदवगमः । तथा परिसमाप्तेः कादाचित्कतया कारणापेक्षा । तथान्यस्यासम्भवान्नमस्कारादिजनितो धर्मविशेष इति कल्प्यते । कथं तस्य तद्धेतुत्वमिति चेद्, उच्यते । नमस्कारादेः कायिको वाचिको मानसो वा धर्मविशेषः सम्पादयन् विघ्नहेतुभूतमधर्मं पर्यस्य परिसमाप्त्यादिहेतुतामभिगच्छति, तस्येदृत्वादिहेतुत्वाच्च धर्मस्येति । कथं तर्हि क्वचित् कृते नमस्करे परिसमाप्त्यभाव इति चेत्, तदेगुण्यादिति ब्रूमः । यथा कारीर्यादौ वृष्ट्यादिसामग्र्यन्तर्भूते वृष्ट्याद्यभावात् तदैगुण्यकल्पना, प्रतिबन्धकाधर्मजातुर्यकल्पना वा । एवमत्रापीति न विरोधः । कथं तर्हि नमस्काराद्यभावे क्वचित् परिसमाप्तिः, कारणाभावे कार्योत्पत्त्यभावादिति चेद्, मैवम् । तत्र वाचिकमनस्कारादेरभावेऽपि कायिकमानसादेरनुमेयत्वात्, अन्यथा परिसमाप्तेरसम्भव इति । ननु तर्हि स एवास्त्वपि, किं वाचिकेन ग्रन्थाद्यारम्भकेनेति चेद्, मैवम् । वाचिके प्रयोजनान्तरसम्भवेन तदुपादानात् । तथाहि — यस्तु विस्मृतेष्टदेवतास्तुतिनमस्कारादिं प्रबन्धे प्रवर्तते, तेनाप्यादरलोकप्रथनार्थमादावेव नमस्कारः कृतो भवतीति प्रयोजनान्तरसम्भवात् तदुपादानमिति न कश्चिद् विरोधः । अथ पदार्थः — चिदिति चैतन्यघनः, चैतन्यमात्रः, चिन्मात्र इति यावत् । "अथैष एव परमानन्दोऽनन्तरोऽपारो विज्ञानघन" इत्यादिश्रुतेः,

"आद्यन्तरहितं शुद्धं चिदानन्दमयं शिवम्"

तत्त्व प्रकाश , दर्शन पर राजा भोज द्वारा लिखित एक ग्रन्थ।
Tattva Prakasha, a treatise on philosophy, written by king Bhoja.

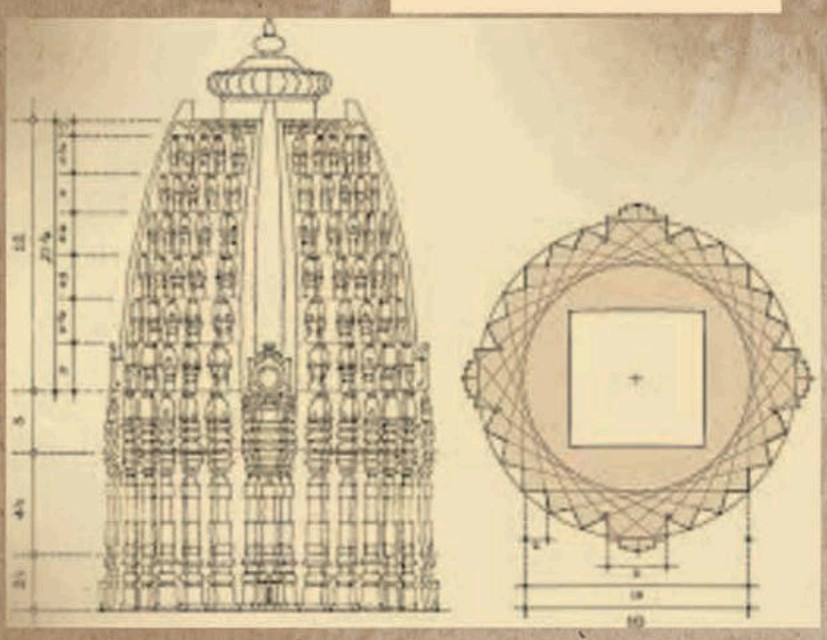
समरांगण सूत्रधार , वास्तु शास्त्र पर राजा भोज द्वारा लिखित ग्रन्थ।
Samarangana Sutradhar, a treatise on Vastu or traditional Indian architecture, written by king Bhoja.



समराङ्गण-सूत्रधार-वास्तु-शास्त्रम्

(मूलमात्रम्)

भवन-निवेशः

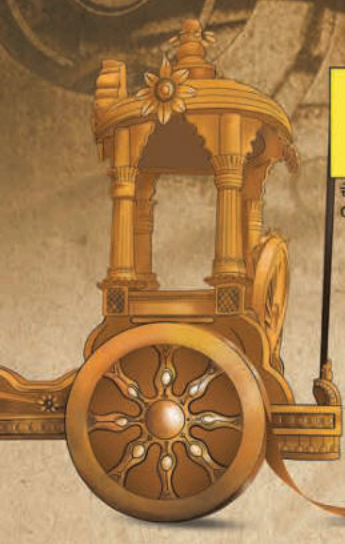




भोजेश्वर मंदिर, भोजपुर, रायसेन जिला, मध्य प्रदेश। इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में धार के राजा भोज द्वारा आरंभ किया गया, तथा अधूरा छोड़ दिया गया जिसका कारण अज्ञात है।

Bhojeshwara Temple, Bhojpur, Raisen Dist., Madhya Pradesh. Begun by King Bhoja of Dhar in 11th Cent CE, its construction was left unfinished for unknown reasons





चेर राजचिन्ह , तीर और धनुष ।
Chera emblem, bow and arrow.

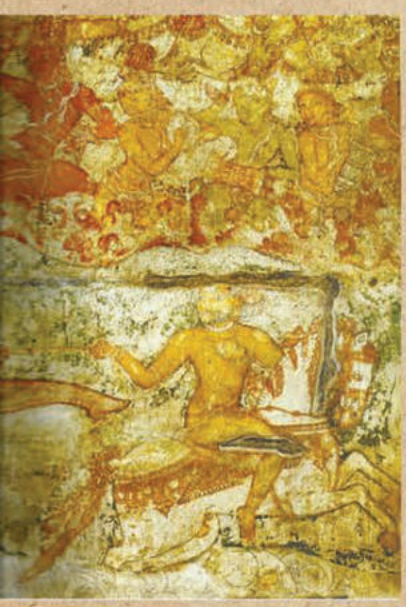
चेर राजवंश (चेरामन पेरुमल)
Cheras (Cheraman Perumals)



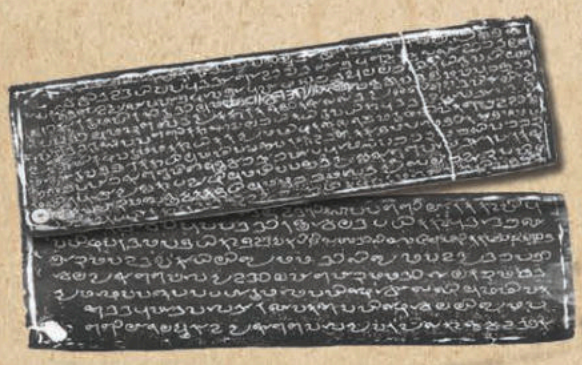
9वीं से 12 वीं शताब्दी ई. लगभग 400 वर्षों तक शासन किया
(9th-12th Century CE – reigned for nearly 400 years)

चेर राजवंश ने 9वीं और 12वीं शताब्दी ई के मध्य केरल में शासन किया था। हिंद महासागर में विदेशी व्यापार और मलयालम भाषा दोनों ही उनके अधीन बहुत विकसित हुए। स्रोत ये संकेत देते हैं कि कस्बों (नगरा) और गांवों (ग्राम) में सभाओं के माध्यम से लोकतांत्रिक शासन उन्नत थी।

The Cheras were a dynasty who ruled in Kerala between the 9th and 12th Century CE. Overseas trade in the Indian Ocean, as well as the Malayalam language greatly developed greatly under them. Sources indicate democratic governance via assemblies in towns (nagara) and villages (grama).



बृहदीश्वर मंदिर, तंजावुर स्थित चेर सम्राट एवं भक्त कवी राम राजशेखर का भित्तिचित्र , जो 'चेरामन पेरुमाल नयनार' के नाम से परसिद्ध एवं शैव सम्प्रदाय के एक प्रमुख व्यक्तित्व हैं , 11 वीं शताब्दी ई.।
Mural of King-saint and poet Rama Rajasekara, known as Cheraman Perumal Nayanar (the Chera king-saint), an important Shaiva figure, Brihadiswara temple, thanjavur, 11th Cent CE.

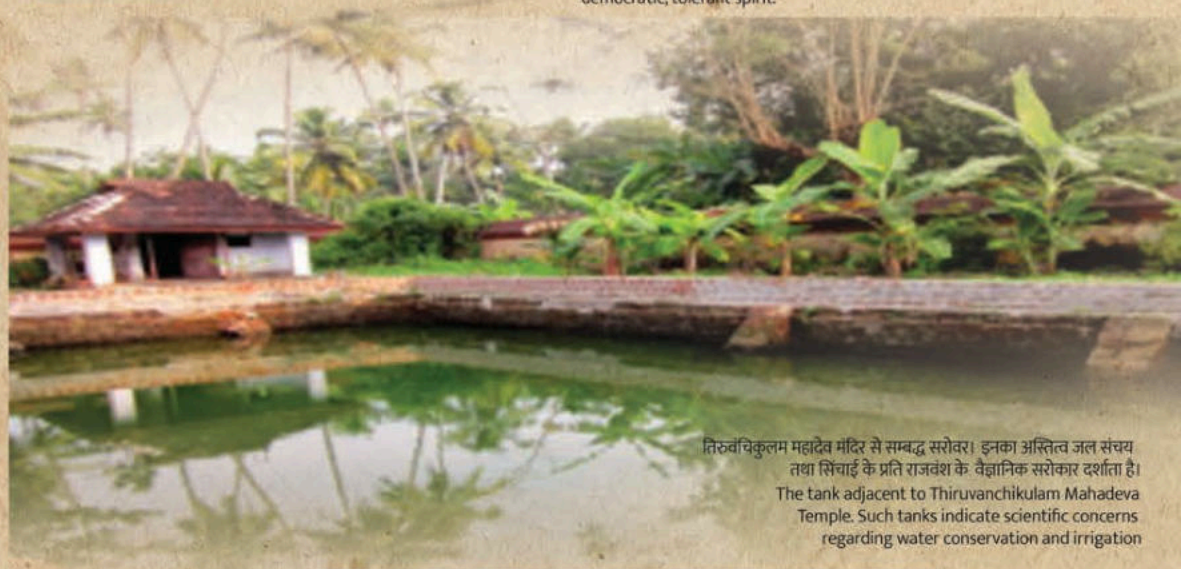


कोल्लम की क्रिश्चियन कॉपर प्लेट्स, राजा स्थानु रवि कुलसेकर के शासनकाल के दौरान 9वीं शताब्दी ई में सीरियाई ईसाई व्यापारी मार सापिर इसो को जारी अधिकारों का एक चार्टर। कोचीन से यहूदी कॉपर प्लेट्स के साथ, यह चेरा शासन के अधीन यहूदियों और ईसाइयों को दी गई स्वतंत्रता, लोकतांत्रिक सहिष्णु भावना को दर्शाता है।

The Christian Copper Plates of Kollam, a charter of rights issued during the reign of king Sthanu Ravi Kulasekara to the Syrian Christian merchant Mar Sapir Iso, 9th Cent AD. Along with the Jewish Copper Plates from Cochin, it indicates the freedom given to Jews and Christians under Chera rule, and a democratic, tolerant spirit.



चेर राजचिन्ह
Chera emblem



तिरुवंचिकुलम महादेव मंदिर से सम्बद्ध सरोवर। इनका अस्तित्व जल संचय तथा सिंचाई के प्रति राजवंश के वैज्ञानिक सरोकार दर्शाता है।
The tank adjacent to Thiruvanchikulam Mahadeva Temple. Such tanks indicate scientific concerns regarding water conservation and irrigation



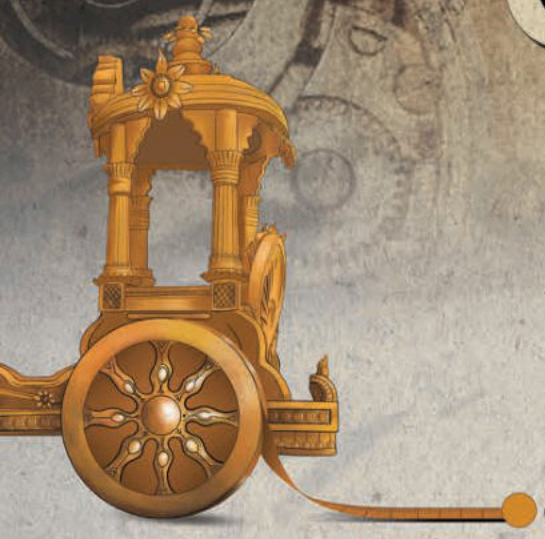
कोचीन की यहूदी ताम्र प्लेट जो राजा भास्कर रवि वर्मन द्वारा यहूदी व्यापारी, जोसेफ रब्बन को 11वीं शताब्दी ई में जारी किए गए व्यापार और अन्य अधिकार चार्टर है।
The Jewish Copper Plates of Cochin, a charter of trading and other rights issued by king Bhaskara Ravi Varman to the Jewish merchant, Joseph Rabban, 11th Cent CE



तिरुवंचिकुलम महादेव मंदिर में स्थित नृत्य करते हुए शिव का भित्ति चित्र। इसके जीवित चमकीले रंग रंगों को बनाने कि कला वैज्ञानिक प्रगति तथा वस्त्राभूषण का संकेत देते हैं।
Mural of a dancing Shiva, ThiruvanchikulamMahadeva Temple. Its surviving bright colours indicate scientific advancement in colour making and trends in dressing and jewellery

लगभग 9वीं शताब्दी, वास्तुकला की चेरा शैली का तिरुवंचिकुलम महादेव मंदिर, कोडुन्गल्लुर, थ्रिस्सूर जिला, केरल। चेर शाशकों ने केरल में मंदिर वास्तुकला को बहुत प्रभावित किया। यह उन्नत चिनाई और लकड़ी के काम को प्रमाणित करता है।
ThiruvanchikulamMahadeva Temple, Kodungallur, Thrissur dist., circa 9th Cent, Chera style of architecture. The Cheras greatly influenced temple architecture in Kerala. It attests to advanced masonry and woodwork.







हिंदू शाही राजवंश
Hindu Shahis

9वीं से 11वीं शताब्दी ई. लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(9th-11th Century CE – reigned for nearly 300 years)

हिंदू शाही राजवंश ने पश्चिमी पंजाब, उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान के कुछ भाग, दक्षिण-पूर्वी अफगानिस्तान और काबुल घाटी पर 9वीं से 11वीं शताब्दी ई तक शासन किया। ऐतिहासिक रूप से उनकी सबसे उल्लेखनीय भूमिका उत्तर-पश्चिमी भारत पर तुर्क गजनवी शासकों के आक्रमण का प्रतिविरोध रहा था।

The Hindu Shahis ruled over Western Punjab, portions of North-Western Pakistan, South-Eastern Afghanistan and the Kabul valley from 9th to 11th Cent CE. Historically, their most notable role has been resisting the attacks of the Turkic Ghaznavid rulers on North-Western India.



एकमुखलिंग , यानि शिवलिंग पर उकेरा शिव का मुख, अफ़ग़ानिस्तान , 9 वीं शताबड़ती ई., गांधार मूर्तिकला का प्रभाव एवं शैव मत के प्रचलन को दर्शाते हुए। हिन्दू शाही राजा आस्थावान शैव थे तथा अपने राज्य में कई शिव मंदिरों का निर्माण करवाया।

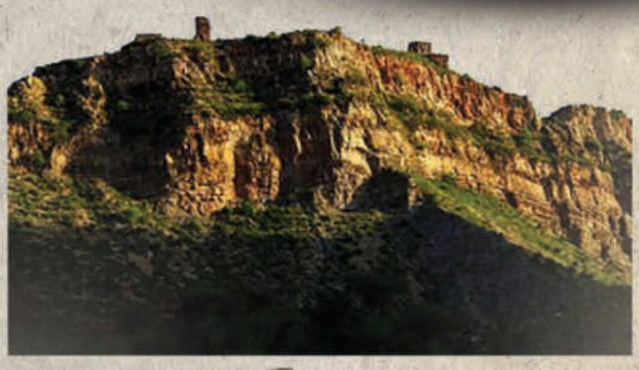
Ekamukhalinga, a Shiva Linga with Shiva's face, Afghanistan, 9th Cent CE, showing Gandhara sculpture influences, and indicating the prevalence of Shaivism. Hindu Shahis were devout Shaivas and built many Shiva temples across their kingdom.



हिंदू शाही राजवंश के आरंभिक सिक्के, लगभग 9वीं शताब्दी ई के जिसके अग्र भाग पर एक बैल का प्रतीक है और पीछे की ओर एक घुड़सवार का । इसपर नागरी और बैक्ट्रियन लिपियों में 'सपालपति' या 'कमांडर' लिखा है, जो हिंदू शाही शासकों द्वारा प्रायः प्रयोग कि जाने वाला उपाधि थी, जो सैन्य कौशल और मार्शल लोकाचार का संकेत हैं।

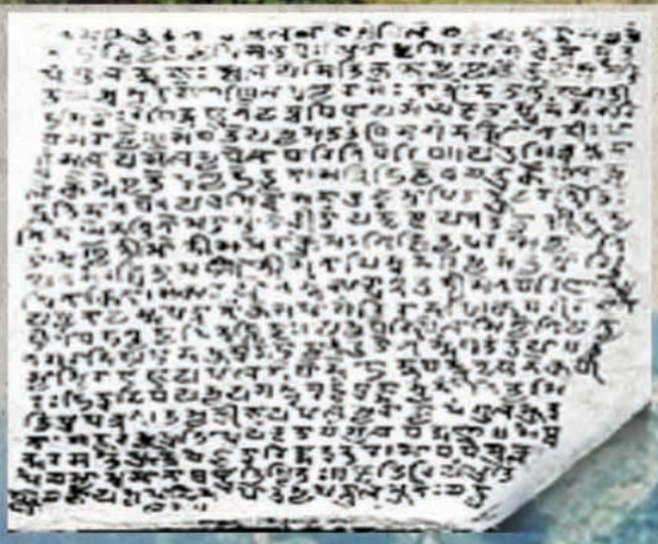
Early coins of the Hindu Shahis, circa 9th Cent CE, bearing a bull symbol on the obverse and a horseman symbol on the reverse, with the legends 'Sapalapati' or 'Commander' in Nagari and Bactrian scripts, a title used frequently by the Hindu Shahi kings, indicating military prowess and martial ethos.





नंदना किला, साल्ट रेंज, पंजाब, पाकिस्तान। खंडहरों के बीच देखा जाने वाला मंदिर 11 वीं शताब्दी ईस्वी के राजा आनंदपाल द्वारा बनवाया गया था। यह पहाड़ी किला चिनाई कला का एक वैज्ञानिक चमत्कार है।

Nandana Fort, Salt Range, Punjab, Pakistan. The temple seen among the ruins was built by king Anandapala, 11th Cent CE. The hill fort is a scientific marvel of masonry

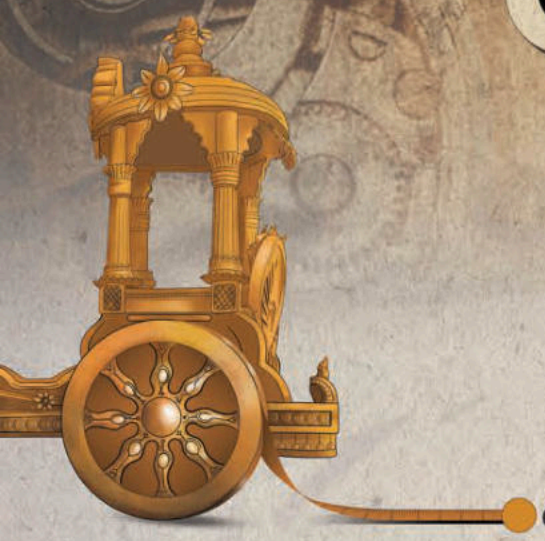


968 ई का राजा जयदेवपाल का हुंड शिलालेख जो तुर्की शासक अल्पतिगिन के विरुद्ध उनके पूर्ववर्ती भीमदेव के संघर्ष के विवरण को रेखांकित करता है।

King Jayadevapala'sHu nd Inscription, 968 CE, outlining the details of his predecessor Bhimadeva's struggle against Alp Tigin, the Turkish ruler.

हिंदू शाही शासकों द्वारा निर्मित अंब मंदिर परिसर का मुख्य मंदिर, सकेसर पर्वत, सॉल्ट रेंज, पंजाब, पाकिस्तान। यह कश्मीरी वास्तुशिल्प प्रभावों को दर्शाता है जो एक समावेशी, लोकतांत्रिक भावना का संकेत है।

The main temple from the Amb Temple complex, Sakesar Mountain in the Salt Ranges, Punjab, Pakistan, built by the Hindu Shahi rulers, reflecting Kashmiri architectural influences, indicating an inclusive, democratic spirit



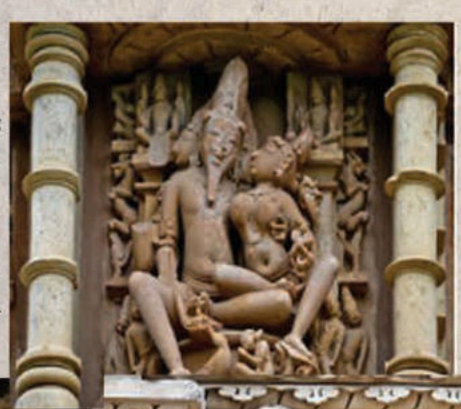


चंदेल वंश
Chandelas

9वीं से 14 वीं शताब्दी ई. लगभग 600 वर्षों तक शासन किया
(9th-14th Century CE – reigned for nearly 600 years)

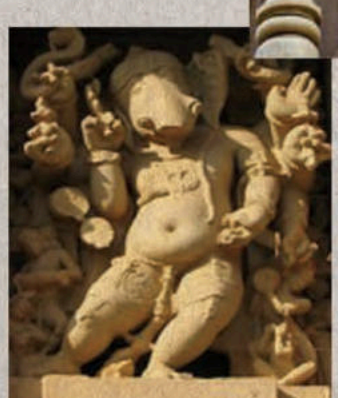
चंदेल एक राजपूत राजवंश थे जिन्होंने बुंदेलखंड क्षेत्र पर 9 वीं से 14 वीं शताब्दी ई के आरंभ के मध्य तक शासन किया जिसे तब मध्य प्रदेश में 'जेजाभुक्ति' के रूप में जाना जाता था। वे प्रारंभ में गुर्जर-प्रतिहारों के अधीनस्थ थे और 10 वीं शताब्दी ई तक स्वतंत्र हो गए।

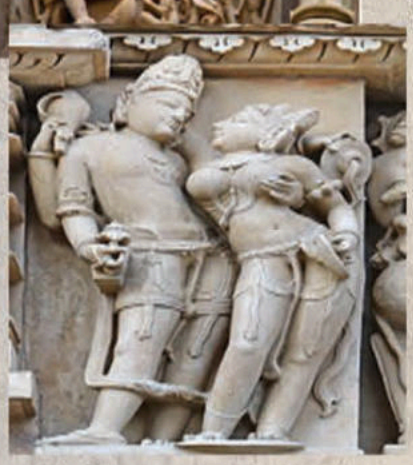
The Chandelas were a Rajput dynasty that ruled over the Bundelkhand region, then known as 'Jejabhukti' in Madhya Pradesh, from 9th - early-14th Cent CE. Initially subordinates of the Gurjara-Pratiharas, they became independent by 10th Cent CE.



ब्रह्मा अपनी पत्नी के साथ, नृत्य करते हुए गणेश और लक्ष्मी के साथ विष्णु। ये खजुराहो की मूर्तियाँ चंदेलों के अधीन मूर्तिकला के नमूने, जो मंदिर के अलंकरण और नक्काशियों में गूढ़ विवरण, प्रतीक चिन्ह और अभिव्यक्ति दिखाई देती है

Brahma with his consort, a dancing Ganesha and Vishnu with Lakshmi. Statues from Khajuraho, specimens of sculpture under the Chandelas, indicating advances made in the temple ornamentation and carvings showcase intricate details, symbolism, and expressiveness.







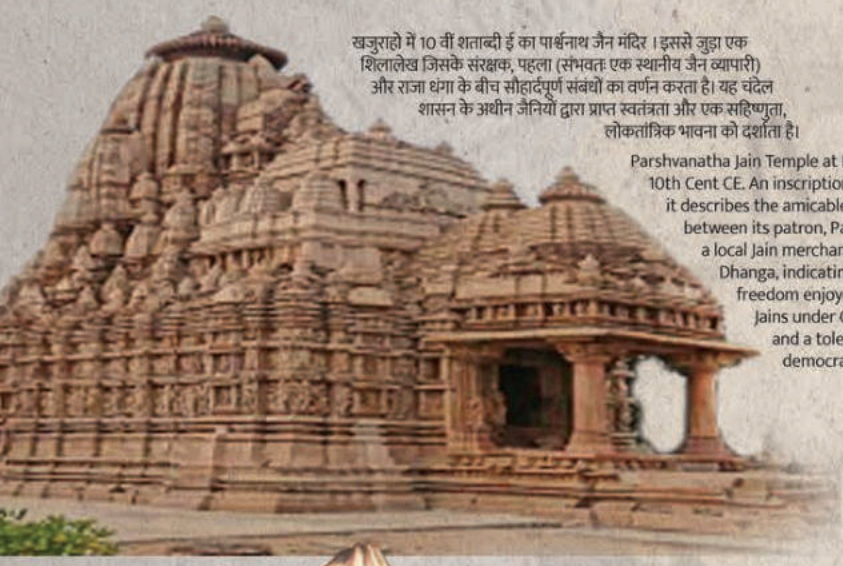
कंदरिया महादेव मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश। राजा विद्याधर के शासनकाल के दौरान, 11 वीं शताब्दी की आरंभ में निर्मित, शिखर या केंद्रीय शिखर की ऊबड़-खाबड़ उपस्थिति का उद्देश्य कैलाश पर्वत, शिव के निवास, एक वैज्ञानिक और कलात्मक चमत्कार की छाप देना था।

Kandariya Mahadeva Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh. Built during king Vidyadhara's reign , early-11th Cent CE, the rugged appearance of the shikhara or central spire was intended to give the impression of Mount Kailasha, Shiva's residence, a scientific and artistic marvel





राजा सल्लक्षण वर्मन के सिक्के, c. 1120-1135 ई.।
Coins of the king SallakshanaVarman, circa 1120-1135 CE.



खजुराहो में 10 वीं शताब्दी ई का पार्श्वनाथ जैन मंदिर । इससे जुड़ा एक शिलालेख जिसके संरक्षक, पहला (संभवतः एक स्थानीय जैन व्यापारी) और राजा धंगा के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों का वर्णन करता है। यह चंदेल शासन के अधीन जैनियों द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता और एक सहिष्णुता, लोकतांत्रिक भावना को दर्शाता है।

Parshvanatha Jain Temple at Khajuraho, 10th Cent CE. An inscription attached to it describes the amicable relations between its patron, Pahila (possibly a local Jain merchant) and king Dhanga, indicating the freedom enjoyed by the Jains under Chandela rule, and a tolerant, democratic spirit.



यशोवर्मन द्वारा 10 वीं शताब्दी ई में पंचायतन प्रारूप में निर्मित लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो जिसमें एक मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा हुआ ह। यह वास्तुकला के विज्ञान में प्रगति को दर्शाता देता है।

The Lakshmana Temple, Khajuraho, built by Yashovarman , 10th Cent CE, in the Panchayatana format, in which a main shrine is surrounded by four subsidiary shrines, indicating advances in the science of architecture

विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो, मध्य प्रदेश। यह मंदिर 10वीं सदी के अंत या 11वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में धंगा द्वारा निर्मित नगर शैली का उदहारण है। इससे जुड़ा शिलालेख गुर्जर प्रतिहार अधिपतियों के नाम को छोड़ देता है जो दर्शाता है क चंदेल इस समय तक स्वतंत्र हो गए थे।

Vishvanatha Temple, Khajuraho, Madhya Pradesh. Built by Dhanga, late-10th or early-11th Cent CE in the Nagara style, the inscription attached to it omits the name of the Gurjara Pratihara overlords, indicating that the Chandelas were independent by this time



कीरत सागर सरोवर, महोबा , मध्य प्रदेश, कीर्तिवर्मन (1060 - 1100 ई.) द्वारा निर्मित। यह सरोवर जल संचय तथा सिंचाई से सम्बद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण को दशति हैं।

The Kirat Sagar lake, Mahoba, Madhya Pradesh, built by Kirtivarman (1060-1100 CE). Such lakes indicate a scientific attitude regarding water conservation and irrigation



चोल राजचिन्ह , बाघ, एक चित्र ।
Chola emblem, a tiger, an illustration.



चोल वंश
Cholas

9वीं से 13वीं शताब्दी ई. लगभग 500 वर्षों तक शासन किया
(9th – 13th Century CE- reigned for nearly 500 years)

चोल, तमिल वंश थे, जिन्होंने 9वीं से 13वीं शताब्दी ई तक शासन किया। वर्तमान तमिलनाडु के तंजावुर क्षेत्र में स्थित प्राचीन चोल वंश का राजवंश अपने चरम पर था तथा श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया तक फैले हुए था।

The Cholas, a Tamil dynasty , ruled from 9th - 13th Cent CE. Based in the Thanjavur region of the present-day Tamil Nadu and descended from the ancient Cholas, at its peak the power of the dynasty was spread as far as Sri Lanka and South East Asia.



प्रसिद्ध कांस्य नटराज प्रतिमा जो चोल मूर्तिकला का प्रतीक है। यह मूल रूप से गर्भगृह या बृहदीश्वर मंदिर के गर्भगृह के लिए लायी गई थी। यह धातु विज्ञान और धातु शिल्प में उन्नति के प्रगति को दर्शाता है।

The famous bronze Nataraja statue, which has come to symbolize Chola sculpture, was originally commissioned for the garbhagriha or the sanctum of the Brihadishwara temple. It indicates advancement in metallurgy and metalcraft.



चोल -कालीन तमिल राजकवि कम्बर द्वारा रामकथा पर आधारित महाकाव्य कम्ब रामायणं अथवा रामावतारम , 12 वीं शताब्दी ई.।

Kamba Ramayanam or Ramavataram, an epic narrating the events of the Ramayana written by the Chola-era Tamil poet-laureate Kambar, 12th Cent CE.



राजराजा प्रथम का सिक्का, 985-1014 ईस्वी। मध्यकालीन चोल राजाओं में राजराजा प्रथम को सबसे महान माना जाता है।

Coin of Rajaraja I, circa 985-1014 CE, regarded as the greatest of the medieval Chola kings.





बृहदीश्वर शिव मंदिर, तंजावुर, तमिलनाडु जो कि 11वीं शताब्दी में राजाराजा प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया। चोल वास्तुकला का एक स्वश्रेष्ठ उदहारण है। यह द्रविड़ रूप में बनाया गया है, जिसमें पल्लव प्रभाव, अमरावती वास्तुकला के विधा के प्रभाव एवं उनके अपने नवाचार सम्मिलित है। यह एक समावेशी और रचनात्मक भावना को दर्शाता है।

The Brihadishwara Shiva Temple, Thanjavur, Tamil Nadu, built by Rajaraja I in the 11th Cent CE. A fine specimen of Chola architecture, it is built in the Dravida form, combining Pallava influences, traces from the Amaravatischool of architecture, and their own innovations, indicating an inclusive and creative spirit.



बृहदीश्वर मंदिर में राजराजा प्रथम की एक मूर्ति, समकालीन वस्त्राभूषण दर्शाते हुए ।
A statue of Rajaraja I at the Brihadishwara Temple, indicating trends in dressing and jewellery .



बृहदीश्वर मंदिर का एक भित्ति चित्र, जिसमें राजा राजराजा प्रथम और उनके गुरु को दर्शाया गया है। बचे हुए चमकीले रंग, रंग बनाने में वैज्ञानिक प्रगति, तथा समकालीन वस्त्राभूषणों को दर्शाते हैं।
A mural from the Brihadishwara temple, depicting king Rajaraja I and his guru. The surviving bright colours indicate scientific advances in colour-making, and trends in dressing and jewellery.



ऐरावतेश्वर मंदिर, दरासुरम से मूर्ति कला, राजा राजराजा द्वितीय, 12 वीं ई० द्वारा निर्मित, दर्शाती है कि भारतीय संस्कृति में महिला सशक्तिकरण हमेशा कैसे रहा है
Temple carving from Airavatesvara Temple, Darasuram, built by king Rajaraja II, 12th CE depicting how women empowerment has always been in Indian culture.



गंगईकोंडा चोलपुरम शहर, अरियालुर जिला, तमिलनाडु के खंडहर, जो c 1025 ई राजधानी बन गया। । राजेंद्र प्रथम ने इसे 1019 ई में पाल वंश के शासकों पर अपनी सैन्य जीत के उपलक्ष्य में बनवाया था, और खुद को 'गंगईकोंडा' या 'गंगा का विजेता' कहा था। उनकी सैन्य शक्ति को स्थापित करने के अतिरिक्त, ये अवशेष विस्तृत वैज्ञानिक नगर नियोजन का उदारण प्रस्तुत करते हैं।

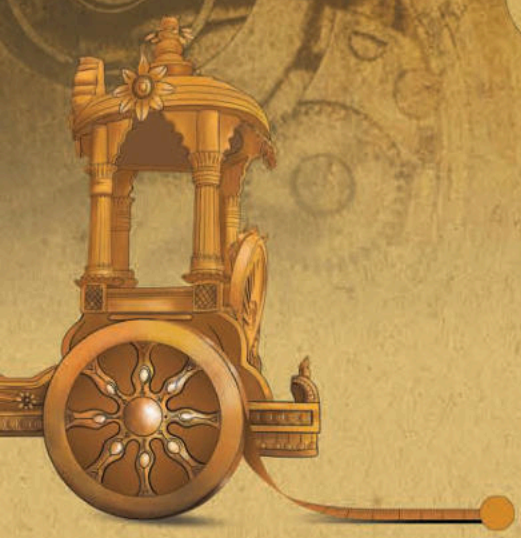
Ruins from the city of Gangaikonda Cholapuram, Ariyalur district, Tamil Nadu, which became the capital circa. 1025 CE. Rajendra I built it to commemorate his military victory over the Palas in 1019 CE, and styled himself 'Gangaikonda' or 'Conqueror of the Ganga'. Besides proving their military might, the remains also indicate elaborate, scientific town planning.





शहरों (वरीयम/वार्ड) और गांवों (उर/गांव सभा) में लोकतांत्रिक शासन, प्रशासकों के चुनाव, और स्व-शासन पर मूल्यवान विवरण के साथ परांतक चोल का उत्तरमेरूर और उक्कल शिलालेख। ये स्थानीय स्तर पर लोकतंत्र को दर्शाते हैं।

The Uttaramerur and Ukkal inscriptions of ParantakaChola I, with valuable details on democratic governance in towns (Variyam/ward) and villages(Ur/village assembly), election of administrators, and self-governance, indicating democracy at the grassroots.





उत्पल वंश
Utpalas

9वीं से 11वीं शताब्दी ई. लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(9th-11th Century CE- reigned for nearly 300 years)

उत्पल वंश ने 9वीं से 11 वीं शतांब्दी ई में कश्मीर पर शासन किया। इस वंश का उत्थान इसके संस्थापक अवंतीवर्मन के 855 ई में कर्कोट वंश के शाशकों से सत्ता लेने के बाद हुआ। स्रोतों के अनुसार निम्न सामाजिक मूल के होने के बावजूद, सत्ता में उनका उत्थान राजनीति में प्रतीभा को दर्शाता है। उनका शासन सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध था।

The Utpala dynasty ruled Kashmir from 9th-11th Cent CE. They rose to power after Avantivarman, the dynasty's founder, seized power from the Karkotas in 855 CE. Regarded by the sources to be of lowly social origins, their rise to power indicates meritocracy in politics, and their reign was rich from a cultural point of view.



चतुर्भुज देवी, संभवतः शारदा, 9वीं शताब्दी ई के अंत में उत्पलों के अधीन मूर्तिकला का चित्रण करती हैं, जो मूर्तियां कारीगरों और शिल्पकारों की उत्कृष्ट विशेषज्ञता का संकेत देती हुई प्रगति को दर्शाती हैं। इसमें समकालीन वस्त्राभूषण भी दर्शाये गए हैं।
Four-armed Goddess, possibly Sharada, late 9th Century CE, portraying sculpture under the Utpalas, indicating the excellent expertise of the artisans and craftsman. Trends in dressing and jewellery are also conveyed.

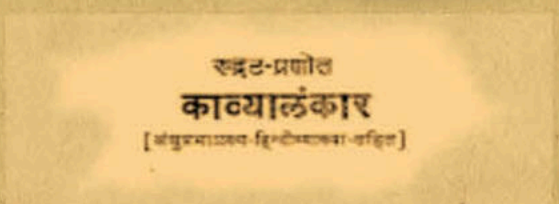


राजवंश के संस्थापक अवंतीवर्मन के 9वीं शताब्दी ई के सिक्के
Coins of Avantivarman, the dynasty's founder, 9th Cent CE.





उभरा हुआ बौद्ध भक्ति चिह्न, 9वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बुद्ध के जीवन के दृश्यों को दर्शाता हुआ। बौद्ध धर्म उत्पलों के अधीन लगातार फलता-फूलता रहा, और उन्होंने कई बौद्ध मठ भी बनाए और उन्हें दान दक्षिणा भी दिया, जो सहिष्णुता एवं लोकतांत्रिक भावना का संकेत देते हैं।
Embossed Buddhist devotional iconograph, depicting scenes from the Buddha's life, late-9th Cent CE. Buddhism continued to flourish under Utpalas, and they made and endowed several Buddhist monasteries too, indicating a tolerant, democratic spirit.

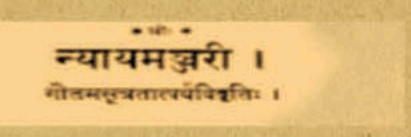


उत्पल- कालीन कश्मीरी संगीतज्ञ , अलंकार शास्त्री एवं साहित्यालोचक रुद्रत भट्ट का काव्यशास्त्र पर लिखित ग्रन्थ काव्यालंकार, 9 वीं शताब्दी ई.।
A treatise on poetics, Kavyalankara of Rudrata Bhatta, an Utpala-era Kashmiri rhetorician, musicologist and literary critic, 9th Cent CE.



अवंतीस्वामी मंदिर, अवंतीपोरा, जम्मू और कश्मीर, जो अवंतीवर्मन के काल 9 वीं शताब्दी ई से जोड़ा जाता है। मंदिर में शैव और वैष्णव दोनों देवता हैं। अवंतीपोरा और सोपोर (तत्कालीन सुय्यपुरा) के शहर भी उत्पल शासकों द्वारा बनाए गए थे। ये शहर और उनकी इमारतें वैज्ञानिक योजना के विकास को दर्शाती हैं।
Avantiswami temple, Avantipora, Jammu and Kashmir, attributed to Avantivarman, 9th Cent CE. The temple contains both Shaiva and Vaishnava deities. The towns of Avantipora and Sopore (then Suyyapura) were also built by the Utpala rulers. These towns and their buildings indicate scientific planning.



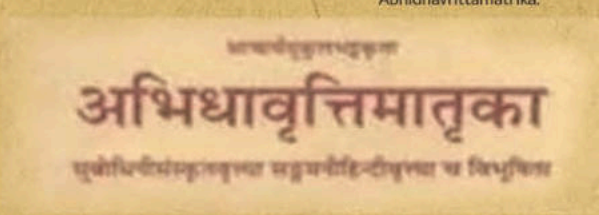


न्याय दर्शन पर दार्शनिक एवं उत्पल वंशी राजा शंकर वर्मन के सलाहकार जयंत भट्ट द्वारा लिखित ग्रन्थ न्यायमञ्जरी, 9 वीं शताब्दी ई.।
Treatise on Nyaya philosophy, Nyayamanjari, written by Jayanta Bhatta, philosopher and advisor to king Shankara Varman of the Utpala Dynasty, 9th Cent CE.

उत्पल -कालीन भाषा -शास्त्री एवं दार्शनिक मुकुल भट्ट द्वारा दर्शन शास्त्र पर लिखित ग्रन्थ अभिधावृत्तमात्रिका, 9 वीं शताब्दी ई.।
Utpala- era philosopher and linguist Mukula Bhatta's work on the philosophy of language, Abhidhavrittamatrika.







महारानी सुगंधा के सिक्के जिन्होंने 10वीं शताब्दी ई में कुछ समय के लिए शासन किया था। हालाँकि उन्हें उनके विरोधियों द्वारा जल्द ही पदच्युत कर दिया गया था। उनका शासन शांतिपूर्ण और समृद्ध था। रानी की ऐसी लोकप्रियता एक समावेशी, लोकतांत्रिक भावना को दर्शाती है।
Coins of Queen Sugandha who ruled briefly in the early-10th Cent CE. Although she was deposed soon by her opponents, her rule was peaceful and prosperous. Such popularity of a queen indicates an inclusive, democratic spirit



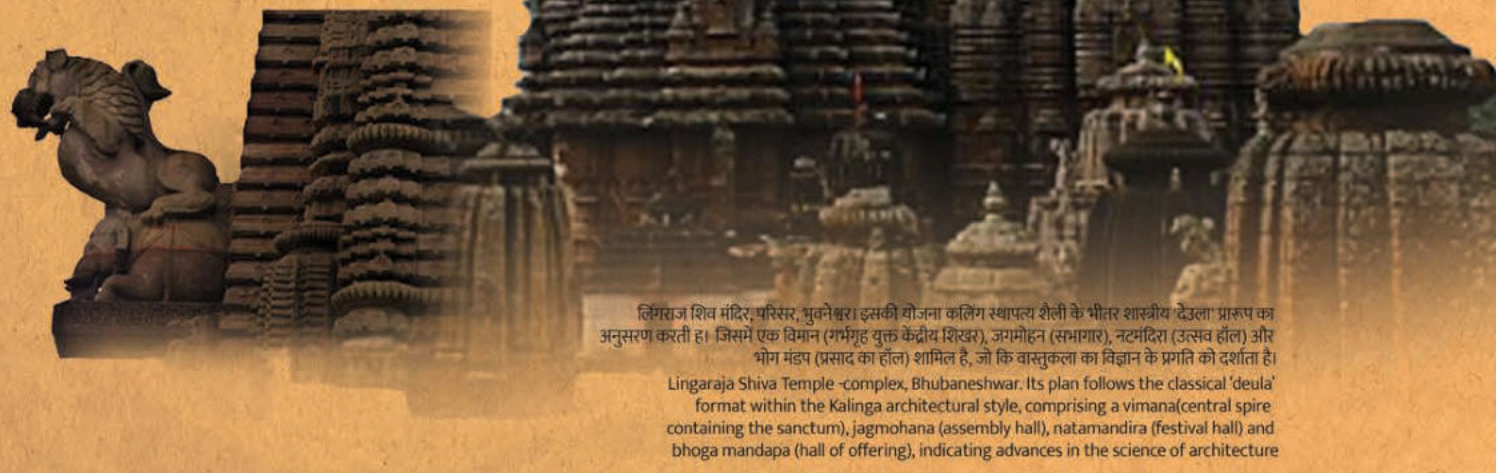


सोमवंशी (केशरी) वंश
Somavanshis (Kesharis)

9वीं से 12वीं शताब्दी ई. लगभग 400 वर्षों तक शासन किया
(9th – 12th Century CE- reigned for nearly 400 years)

सोमवंशी शाशकों ने उड़ीसा पर 9वीं से 12वीं शताब्दी ई तक शासन किया। अभिनव ययातिपुरा, जिसे आज के जाजपुर शहर के रूप में जाना जाता है,

The Somavanshis ruled Orissa from 9th - 12th Cent CE. Abhinava Yayatipura, identified with present-day Jajpur town, was their capital.



लिंगराज शिव मंदिर, परिसर, भुवनेश्वर। इसकी योजना कलिंग स्थापत्य शैली के भीतर शास्त्रीय 'देउला' प्रारूप का अनुसरण करती है। जिसमें एक विमान (गर्भगृह युक्त केंद्रीय शिखर), जगमोहन (सभागार), नटमंदिरा (उत्सव हॉल) और भोग मंडप (प्रसाद का हॉल) शामिल है, जो कि वास्तुकला का विज्ञान के प्रगति को दर्शाता है।

Lingaraja Shiva Temple -complex, Bhubaneshwar. Its plan follows the classical 'deula' format within the Kalinga architectural style, comprising a vimana(central spire containing the sanctum), jagmohana (assembly hall), natamandira (festival hall) and bhoga mandapa (hall of offering), indicating advances in the science of architecture





ब्रह्मेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर जिसे राजा उद्योतकेशरी की माता कोलावती देवी ने 1058 ई में निर्मित कराया था। यह कलिंग शैली की वास्तुकला का एक और नमूना है। इसकी मूर्तियां कारीगरों और शिल्पकारों की उत्कृष्ट विशेषज्ञता का संकेत देती हैं तथा समकालीन वस्त्राभूषणों को दर्शाती हैं।

Brahmeshwara Temple, Bhubaneshwar, built by king Udyotakeshari's mother, Kolavati Devi, 1058 CE, another specimen of Kalinga style architecture. Its sculptures indicates the excellent expertise of the artisans and craftsman and trends in dressing and jewellery





चालुक्य (सोलंकी)
Chaulukyas (Solankis)

10वीं से 13वीं शताब्दी ई. लगभग 350 वर्षों तक शासन किया
(10th-13th Century CE- reigned for nearly 350 years)

चालुक्य (एक राजपूत वंश) ने 10वीं से 13वीं शताब्दी ई तक गुजरात, राजस्थान और मध्य में मालवा के कुछ हिस्सों पर शासन किया। उनकी राजधानी अन्हिलवाड़, जिला पाटन, गुजरात थी।

The Chaulukyas, a Rajput dynasty, ruled parts of Gujarat, Rajasthan and the Malwa in Madhya Pradesh from mid-10th - 13th Cent CE. Their capital was Anhilwara , Patan district , Gujarat.



महान चालुक्य राजाओं में से एक – राजा कुमारपाल का सिक्का, पाटण, 1145-1171 सीई ।
Coin of Kumarapala, among the greatest Chaulukya kings, Patan, circa. 1145-1171 CE

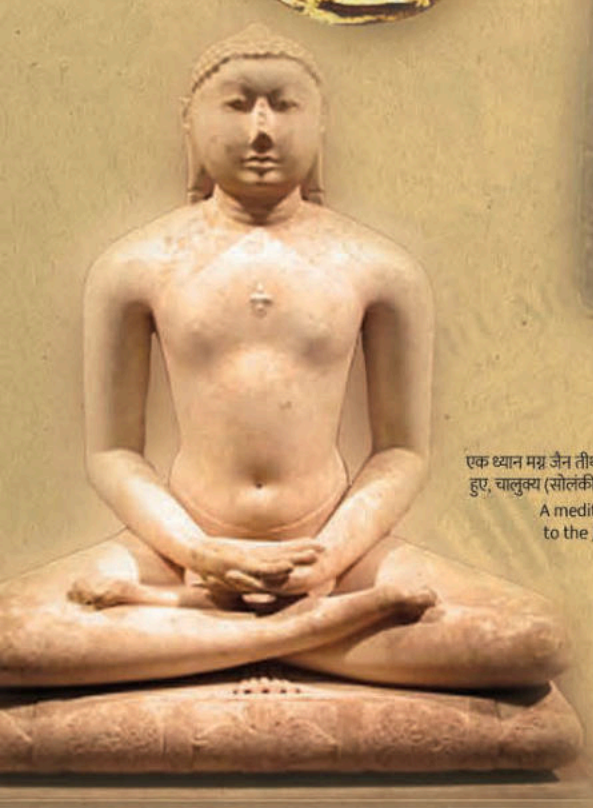




चालुक्य राजा दुर्लभराज का ताम्र-प्लेट शिलालेख, 1010 सी ई।
Copper-plate inscriptions of Chaulukya king Durlabharaja, 1010 CE



चालुक्य शासन, गुजरात, 1026 सी ई के दौरान मूर्तिकला का विकास दर्शाती हुई भगवान विष्णु की प्रतिमा, चित्र में मूर्ति के अलंकरण में यथार्थता मूर्तियां कारीगरों और शिल्पकारों की उत्कृष्ट विशेषज्ञता का संकेत देती हैं।
Vishnu , Gujarat, circa 1026 CE, showing developments in sculpture under the Chaulukyas. The precision in ornamentation shows the excellent expertise of the artisans and craftsman



एक ध्यान मग्न जैन तीर्थंकर, लगभग 1000-1050 ई. की मूर्ति, जो जैनियों के संरक्षण का संकेत देते हुए, चालुक्य (सोलंकी) शासकों के अधीन एक सहिष्णु, लोकतांत्रिक भावना का प्रदर्शन करती है।
A meditating Jain Tirthankara, circa 1000-1050 CE, indicating patronage to the Jains, demonstrating a tolerant, democratic spirit

जैन विद्वान एवं दार्शनिक आचार्य हेमचन्द्र सुरी , जिन्हें सोलंकी राजा जयसिम्ह सिद्धराज का प्रश्रय प्राप्त हुआ , लगभग 12 वीं शताब्दी ई.।
Jain scholar and philosopher, Acharya Hemachandra Suri, patronized by Chaulukya king Jayasimha Siddharaja, circa 12thCent CE



[वि. सं. १२८४ की ताड़पत्रीय से उद्धार पर]



रानी उदयमती (राजा भीमदेव प्रथम की पत्नी) द्वारा निर्मित 'रानी की वाव' जिला पाटण, गुजरात में स्तिथ एक बावड़ी है। जल संरक्षण के लिए यह एक वैज्ञानिक समझ का संकेत देने के अलावा, एक रानी प्रायोजित निर्माण के साथ साथ एक समतावादी, समावेशी लोकाचार को भी इंगित करता है, 1063 शताब्दी सीई
The 'Rani ki Vaav', a stepwell built by Udayamati, queen of Bhimadeva I, Patan district, Gujarat, 1063 CE. Besides indicating a scientific concern for water conservation, a queen sponsoring constructions also indicates an egalitarian, inclusive ethos



राजा कुमारपाल द्वारा 1161 सी ई में निर्मित अजितनाथ जैन मंदिर, तरंगा मंदिर-परिसर, जिला मेहसाणा, गुजरात में स्तिथ है। हालंकि अधिकतर शैव शासकों के साथ साथ चालुक्य राजाओं ने भी जैन धर्म का संरक्षण किया, जोकि सहिष्णुता व लोकतांत्रिक भावना की उपस्थिति का संकेत देता है।
Ajitanatha Jain Temple, Taranga Temple-Complex, Mehsana district, Gujarat, built by Kumarapala circa 1161 CE. Although mostly Shaivas themselves, the Chaulukya kings also patronized Jainism, indicating the presence of a tolerant, democratic spirit







कल्याणी चालुक्यों का राजचिन्ह, चित्र । Kalyani Chalukya emblem, an illustration.



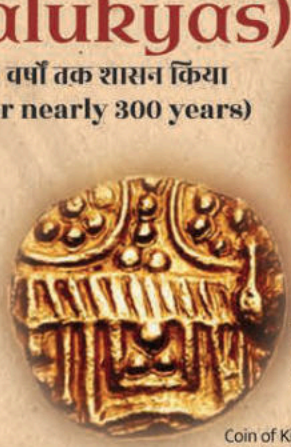
कल्याणी के चालुक्य (पश्चिमी चालुक्य)

Chalukyas of Kalyani (Western Chalukyas)

10वीं से 12वीं शताब्दी ई. लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(10th-12th Century CE - reigned for nearly 300 years)

कल्याणी के चालुक्यों ने 10वीं से 12वीं शताब्दी सीई तक पश्चिमी दक्कन के अधिकांश हिस्सों पर शासन किया। उनका नाम उनकी राजधानी कल्याणी के नाम पर रखा गया था, जिसे वर्तमान कर्नाटक के बीदर जिले में बसवकल्याण के आधुनिक शहर के रूप में पहचाना जाता है। अपने पूर्व समकालीन वेंगी चालुक्यों की तरह, वे भी बादामी के प्राचीन चालुक्यों के वंशज थे।

The Chalukyas of Kalyani ruled over much of the Western Deccan from 10th - 12th Cent CE. They were named after their capital city of Kalyani, identified with the modern city of Basavakalyana in the Bidar district of present-day Karnataka. Like their Eastern contemporaries, the Vengi Chalukyas, they too were descended from the ancient Chalukyas of Badami.





राजा सोमेश्वर प्रथम का सिक्का, लगभग 1048-1063 सीई। वह महत्वपूर्ण सैन्य, प्रशासनिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों के साथ, कल्याण चालुक्यों में सबसे महान शासकों में से एक थे।

Coin of King Someshwara I, circa 1048-1063 CE. He was one of the greatest rulers among the Kalyana Chalukyas, with important military, administrative and cultural achievements



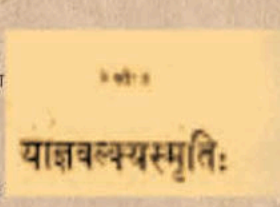
कल्याणी चालुक्यों का सिक्का वराह राजचिन्ह दर्शाते हुए । Kalyani Chalukya coin with the Varaha (boar) emblem



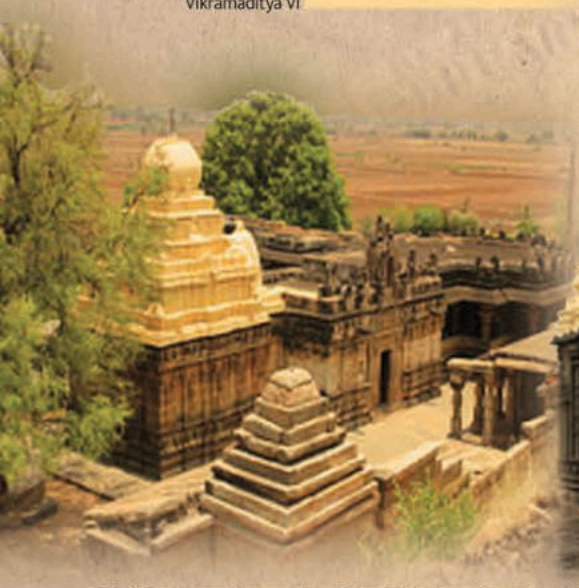


लगभग 11 वीं शताब्दी सी ई में जिला गडग, कर्नाटक में निर्मित काशीविश्वेश्वर मंदिर कल्याणी चालुक्य वास्तुकला का सबसे अच्छा प्रतिरूप माना जाता है।

Kasivisveswara temple, Gadag District, Karnataka, circa 11th Cent CE, regarded as the best specimen of the Kalyani Chalukya .architecture



विज्ञानेश्वर (विक्रमादित्य VI के दरबार के एक विद्वान) द्वारा लिखी गई मिताक्षरा, कानूनी ग्रंथ याज्ञवल्क्य स्मृति पर एक टीका Mitakshara, a commentary on the legal treatise Yajnavalkya Smriti, was written by Vijnaneshwara, a scholar at the court of Vikramaditya VI







बाएं से दाएं- अन्य कल्याणी चालुक्य मंदिर, मल्लिकार्जुन मंदिर, कुरुवत्ती, 12वीं शताब्दी सीई, कल्लेश्वर मंदिर, बागली, 10वीं शताब्दी सीई, और महादेव मंदिर, इटागी, 12वीं शताब्दी सीई, सभी कर्नाटक में। कल्याणी चालुक्य स्थापत्य शैली को बादामी चालुक्य और होयसला शैलियों के बीच एक पारगमन कहा जाता है।

Left to right- Other Kalyani Chalukya temples, Mallikarjuna temple, Kuruvatti, 12th Cent CE, Kalleshwara temple, Bagali, 10th Cent CE, and Mahadeva temple, Itagi, 12th Cent CE, all in Karnataka. The Kalyani Chalukya architectural style is said to be a transition between the Badami Chalukya and Hoysala styles



ತನುಕರಣದವರಲ್ಲ ಮಚ್ಚದವನೆಂಬಯ್ಯಾ, ನೀನು
ಮನಕರಣದವರಲ್ಲ ಮಚ್ಚದವನೆಂಬಯ್ಯಾ
ಪದುಳಕಳ್ಳದವರಲ್ಲ ಚಂದಾಕ್ಷತೆಯನೆಂಬಯ್ಯಾ, ನೀನು
ಜಿನನ ಬುದ್ಧಿಲ್ಲದವರಲ್ಲ ಧರಮವನೆಂಬಯ್ಯಾ ನೀನು
ಅಖವ ಕರ್ಮೆಯದವರಲ್ಲ ಅರಿಯಮನೆಂಬಯ್ಯಾ, ನೀನು
ತೀರದಾ ಬುದ್ಧಿಲ್ಲದವರಲ್ಲ ನೈದೆಯದವನೆಂಬಯ್ಯಾ, ನೀನು
ಪಶಂಡತಿಮಕಳ್ಳದವರಲ್ಲ ಪರಿಣತನೆಂಬಯ್ಯಾ ನೀನು
ಹೃದಯ ಕಮಲ ಶುದ್ಧಳ್ಳದವರಲ್ಲ ಇರಲೆಂಬಯ್ಯಾ ನೀನು
ಎನ್ನಳ ಮಮಯವೆಯ ಎನ್ನ ಕರಸ್ಥಲ ನೀಲುಕೆಂಬುದೆ
ಹೇಳಾ ಚೆನ್ನಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನ.

पश्चिमी चालुक्य शासन के दौरान रहने वाली कवयित्री अक्कमहादेवी द्वारा कन्नड़ में एक लोकप्रिय वचन कविता। इस काल में कन्नड़ कविता बहुत फली-फूली। एक महिला संत की प्रमुखता एक समतावादी, समावेशी लोकाचार को दर्शाती है।

A popular vachana poem in Kannad by the poetess Akkamahadevi, who lived during Western Chalukya rule. Kannada poetry greatly flourished in this period. A woman saint's prominence indicates an egalitarian, inclusive ethos

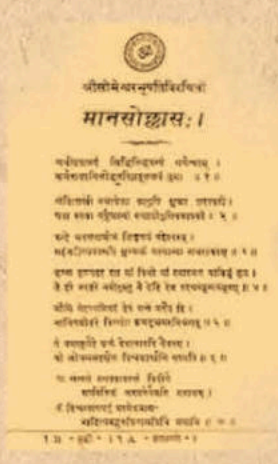


इतागी के महादेव मंदिर में राजा विक्रमादित्य VI, 1112 सीई का पुरानी कन्नड़ में एक शिलालेख। पश्चिमी चालुक्यों ने स्थानीय भाषाओं के उपयोग को प्रोत्साहित किया और उनके शासन में कन्नड़ भाषा बहुत विकसित हुई। उनके शिलालेखों में ग्राम सभाएं और महाजन, सार्वजनिक बंदोबस्ती के ट्रस्टी आदि स्थानीय लोकतांत्रिक स्वशासन प्रथाओं का भी उल्लेख है।

An inscription in Old Kannada by King Vikramaditya VI, 1112 CE, at the Mahadeva Temple at Itagi. The Western Chalukyas encouraged the use of vernacular languages, and the Kannada language greatly developed under them. Their inscriptions also refer to democratic local self-governance practices, such as village assemblies and mahajans, trustees of public endowments

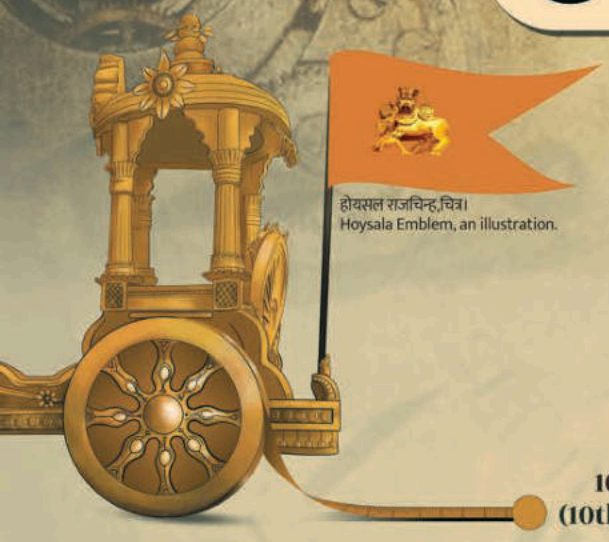
राजा सोमेश्वर तृतीय द्वारा लिखित विश्वकोश मानसोल्लास , जिसमें साहित्य, विज्ञान, कला, नीतिशास्त्र , प्रशासन, अर्थशास्त्र , दर्शन इत्यादि समेत कई विषयों पर जानकारी मौजूद है, 12 वीं शताब्दी ई.।

Manasollasa, an encyclopedia written by king Someshwara III, covering a wide variety of topics such as science, art, literature, philosophy, ethics, governance and economy, 12th Cent CE



श्रीसोमेश्वरभूपतिविरचितः

मानसोल्लासः ।



होयसल राजचिन्ह,चित्र।
Hoysala Emblem, an illustration.



होयसल वंश
Hoyasalas

10वीं से 14वीं शताब्दी ई. लगभग 500 वर्षों तक शासन किया
(10th-14th Century CE- reigned for nearly 500 years)

होयसल वंश ने 10वीं से 14वीं शताब्दी ई0 के मध्य कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर शासन किया। होयसल की राजधानी प्रारंभ में बेलूर में स्थित थी लेकिन बाद में इसे हलेबिदु में स्थानांतरित कर दिया गया। होयसल युग दक्षिण भारतीय कला, वास्तुकला और धर्म के विकास में एक महत्वपूर्ण कालखण्ड था।

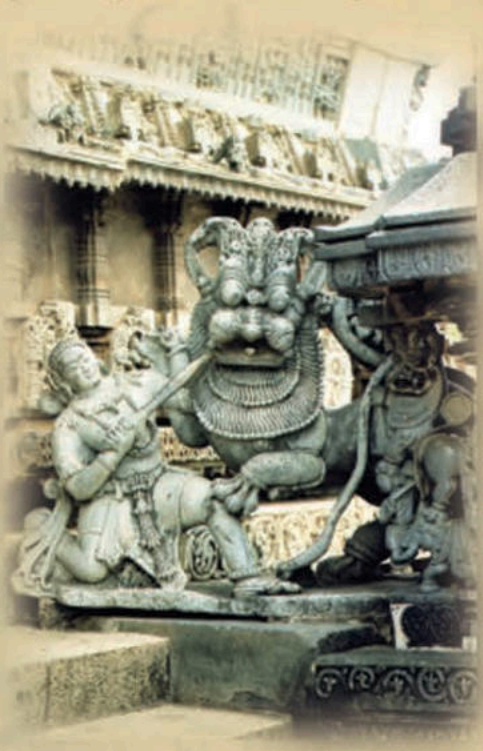
The Hoysala Dynasty ruled most of what is now Karnataka between the 10th and 14th centuries CE. The capital of the Hoysalas was initially located at Belur but was later moved to Halebidu. The Hoysala era was an important period in the development of South Indian art, architecture, and religion.



विष्णु केशव के रूप में खड़े हैं, 12वीं शताब्दी ई0, कर्नाटक। भारी अलंकरण, और नरम क्लोराइट शिस्ट (सोपस्टोन) का उपयोग होयसला मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएं हैं। होयसाल की मूर्तियां कारीगरों और शिल्पकारों की उत्कृष्ट विशेषज्ञता का संकेत देती हैं।
Standing Vishnu as Keshava, early 12th Century C.E., Karnataka. Heavy ornamentation, and the use of soft chlorite schist (soapstone) are distinctive features of Hoysala sculpture. The Sculptures of Hoysalas indicate the excellent expertise of the artisans and craftsmen.



विष्णुवर्धन (c. 1108-1152 ई०) 1108 ई० में अपने बड़े भाई वीरा बल्लाला प्रथम की मृत्यु के बाद होयसल सिंहासन पर बैठें। उन्होंने तालाकड़ में कीर्ति नारायण मंदिर और बेलूर में शानदार विजयनारायण मंदिर का निर्माण किया। अपनी रानी शांतला देवी के साथ विष्णुवर्धन की नक्काशी, बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर।
Vishnuvardhana (c. 1108–1152 CE) ascended the Hoysala throne after the death of his elder brother Veera Ballala I in c.1108. He built the Keerthi Narayana temple at Talakad, and the spectacular Vijayanarayana temple at Belur. Relief of Vishnuvardhana with his queen Shantala Devi, Chennakeshava temple at Belur.



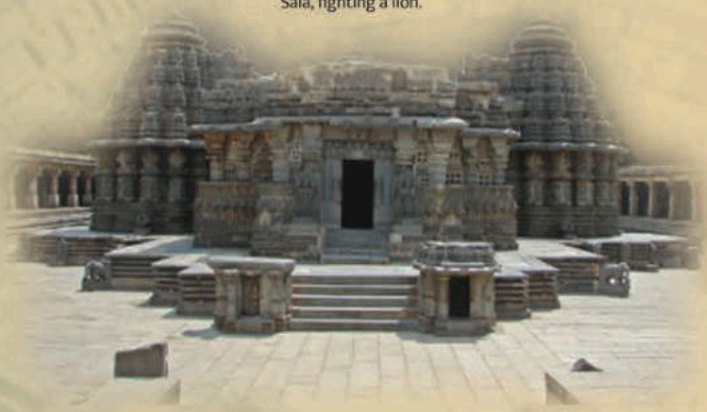
12वीं शताब्दी की होयसल मूर्तिकला, जिसमें होयसला वंश के संस्थापक सल को शेर से लड़ते हुए दिखाया गया है।
Emblem of Hoysala dynasty, a sculpture at Chennakeshava Temple from the 12th Cent C.E., showing the dynasty's founder, Sala, fighting a lion.



अक्काना बसादी, श्रवणबेलगोला में राजा वीर बल्लाल द्वितीय का पुराना कन्नड़ शिलालेख (1182 ई0), 1181 ई0 में निर्मित एक जैन मंदिर (बसादी), अन्य धर्मों को संरक्षण प्रदान करने वाले होयसल राजा की सहिष्णुता और लोकतांत्रिक मूल्यों की भावना का संकेत देते हैं।
Old Kannada inscription (1182 CE) of King Veera Ballala II at Akkana Basadi, Shravanabelagola, a Jain temple (basadi) built in 1181 A.D. Hoysala kings providing patronage to other religions, indicate their spirit of tolerance and democratic values.



गरुड़ स्तंभ नायक पत्थर (विरगल)। हलेबिडु में पुराने कन्नड़ शिलालेख के साथ, लगभग 1220 ई0।
Garuda pillar hero stone (virgal) at Halebidu with old Kannada inscription, circa 1220 CE.



चेन्नाकेशव मंदिर, सोमनाथपुरा, 1268 ई0 में बनाया गया। होयसल वास्तुकला का वैशिष्ट, इसमें तमिल देश के मंदिरों के विपरीत, जहां एक मंदिर के विभिन्न हिस्से स्वतंत्र रूप से खड़े होते हैं, एक एकीकृत, जैविक संपूर्ण बनाने के लिए अलग-अलग हिस्सों को मिला दिया गया है। यह होयसल वास्तुकारों के वैज्ञानिक ज्ञान का एक उदाहरण है।
Chennakesava Temple, Somanathapura, was built in 1268 CE. Typical of Hoysala architecture, it has distinct parts merged to form a unified, organic whole, in contrast to the temples of Tamil country, where different parts of a temple stand independently. It is an example of the scientific knowledge of the Hoysala architects.



विनयादित्य का सोने का सिक्का, 11वीं शताब्दी ई0। अग्रभाग में एक शेर की आकृति है, और पीछे की ओर पुरानी कन्नड़ लिपि में "श्री मालापरोलु गोंडा" लिखा हुआ है, जिसका अनुवाद 'मालपाद जनपद के भगवान' के रूप में किया गया है।
Gold coin of Vinayaditya, 11th Cent C.E. The obverse has the figure of a lion, and the reverse has the legend "Sri Malaparolu Gonda" written in Old Kannada script, translating to 'Lord of the Malpad Janapada'.



नग्गेहल्ली में लक्ष्मी नरसिम्हा मंदिर का वेसर शैली का विमान, 1246 ई0 में राजा वीर सोमेश्वर के शासन के दौरान होयसल साम्राज्य के एक सेनापति बोम्मन्ना दंडनायक द्वारा बनाया गया था। यह त्रिकुटा (तीन मीनारों) विमान (तीर्थ) शैली में निर्मित 13वीं शताब्दी की होयसल वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें दीवारों पर बेहतरीन मूर्तियां हैं।
Vesara style Vimana of the Lakshmi Narasimha temple at Nuggehalli, built in 1246 CE by Bommanna Dandanayaka, a commander in the Hoysala Empire, during the rule of King Vira Someshwara. It is an excellent example of 13th-century Hoysala architecture built in the trikuta (three towers) vimana (shrine) style with fine sculptures adorning the walls.

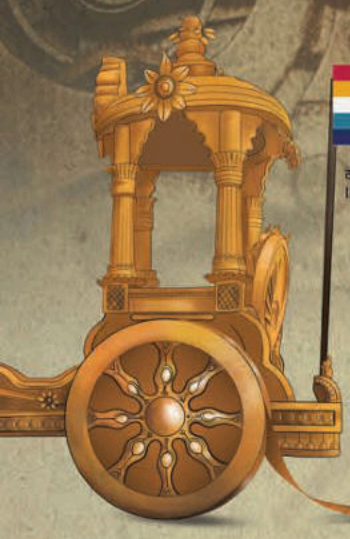


पुष्पगिरी में होयसल पत्थर खदान का दृश्य। इन खदानों में क्लोराइट शिस्ट पत्थरों का वर्चस्व है, जिनका उपयोग स्लेज हथौड़ों, छेनी और वेजेज सहित लोहे के औजारों का उपयोग करके हलेबिडु में मंदिरों और किलों के निर्माण के लिए किया गया था।
View of the Hoysala stone quarry at Pushpagiri. These quarries are dominated by chlorite schist stones which were used for the construction of temples and forts in Halebidu, using iron tools, including sledge hammers, chisels and wedges.



क) यागाची नहर और प्राचीन खदानों के स्थानों को दर्शाने वाला क्षेत्र। लाल पट्टी इसके रास्ते में स्थित पानी की टंकियों से जुड़ी नहर के मार्ग को चिह्नित करती है और नीली रेखा हलेबिदु के आसपास अवशेष किलेबंदी को दर्शाती ख) कल्लूसेटिहल्ली में यागाची नहर का दृश्य।

a) area showing Yagachi canal and locations of ancient quarries. Red band marks the course of the canal connected to water tanks located along its course and blue line denotes the remnant fortification around Halebidu.
b) View of the Yagachi canal at Kallusettihalli.





कछवाहाओं के ध्वज का चित्रण।
Illustration of the flag of the Kachhwahas.



कछवाहा राजवंश
Kachhwahas

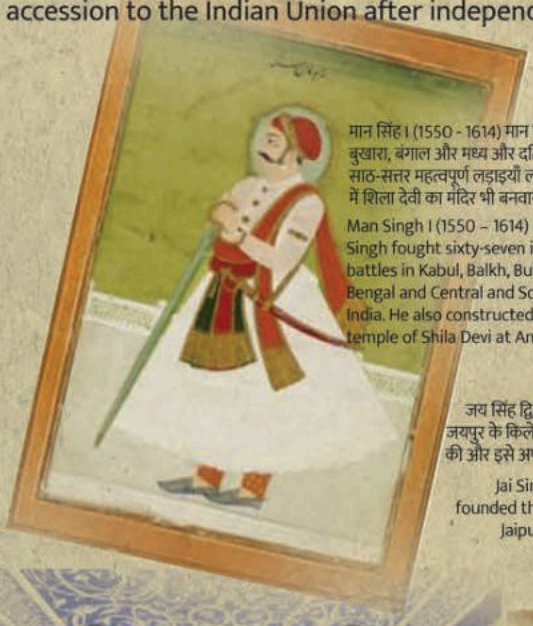
11 वीं से 20 वीं शताब्दी ई. लगभग 1000 वर्षों तक शासन किया
(11th-20th Century CE – reigned for nearly 1000 years)

कछवाहा राजवंश ने अंबेर की रियासत पर अपनी राजधानी जयपुर के साथ 11वीं शताब्दी ई. से स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघ में प्रवेश करने तक शासन किया।

The Kachhwaha dynasty ruled over the principality Amber with its capital city of Jaipur from the 11th Century CE, till its accession to the Indian Union after independence.



कछवाहाओं के प्रतीक का चित्रण।
Illustration of the emblem of the Kachhwahas.



मान सिंह I (1550 - 1614) मान सिंह ने काबुल, बल्ख, बुखारा, बंगाल और मध्य और दक्षिणी भारत में साठ-सत्तर महत्वपूर्ण लड़ाइयाँ लड़ीं। उसने आमेर किले में शिला देवी का मंदिर भी बनवाया था।

Man Singh I (1550 – 1614) Man Singh fought sixty-seven important battles in Kabul, Balkh, Bukhara, Bengal and Central and Southern India. He also constructed the temple of Shila Devi at Amber Fort.



जय सिंह द्वितीय (1688-1743) ने जयपुर के किलेबंद शहर की स्थापना की और इसे अपनी राजधानी बनाया।

Jai Singh II (1688–1743) founded the fortified city of Jaipur and made it his capital.

1727 ई. में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा निर्मित सिटी पैलेस, जयपुर के दृश्य। प्राचीन हिंदू ग्रिड पैटर्न पर निर्मित, यह विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा डिजाइन किया गया था, जो नगर-योजना और वास्तुकला पर शिल्प-सूत्रों में शिक्षित थे।

Visuals from the City Palace, Jaipur, built by Maharaja Sawai Jai Singh II, in 1727 CE. Built on ancient Hindu grid pattern, it was designed by Vidyadhar Bhattacharya who was educated in silpa-sutras on city-planning and architecture.





किले के गणेश गेट के पास अंबर महल के प्रवेश द्वार पर सिला देवी मंदिर में उभरा हुआ दो पत्ती वाला चांदी का दरवाजा, चैतन्य पंथ की देवी, सिला देवी को समर्पित एक मंदिर, जो राजा मान सिंह को दिया गया था जब उन्होंने 1604 में बंगाल के जैसोर के राजा को हराया था। 1604 ई0 में जेस्सोर, बंगाल के राजा। यह कछवाहा कारीगरों के प्रभावशाली धातुकर्म कौशल को दर्शाता है।

Embossed double-leaf silver door entry into the Sila Devi Temple at the entrance to Amber palace's Ganesh pol. The temple is dedicated to Sila Devi, a Goddess of the Chaitanya cult. The door was given to Raja Man Singh when he defeated the Raja of Jessore, Bengal, in 1604. The impressive carvings on the silver door illustrates the impressive metallurgical skills of the Kachhwaha artisans.





आमेर का किला, या अम्बेर का किला, राजस्थान, भारत। राजा मान सिंह ने आमेर किले की वर्तमान संरचना का निर्माण लगभग 16वीं -17वीं शताब्दी ई. में किया था, जबकि जय सिंह, प्रथम ने बाद में इसका विस्तार किया। आमेर किले में गणेश पोल। इस किले की वास्तुकला में राजस्थानी और मुगल वास्तुकला शामिल है, जो उनके द्वारा प्रसारित लोकतंत्र और सहिष्णुता की भावना को दर्शाता है।

The Amer Fort, or Amber Fort, Rajasthan, India. Raja Man Singh built the present structure of the Amber Fort circa 16th -17th Century C.E., while Jai Singh I expanded it later. Ganesh Pol at Amer Fort. This fort's architecture includes Rajasthani and Mughal architecture, indicating a spirit of democracy and tolerance disseminated by them.





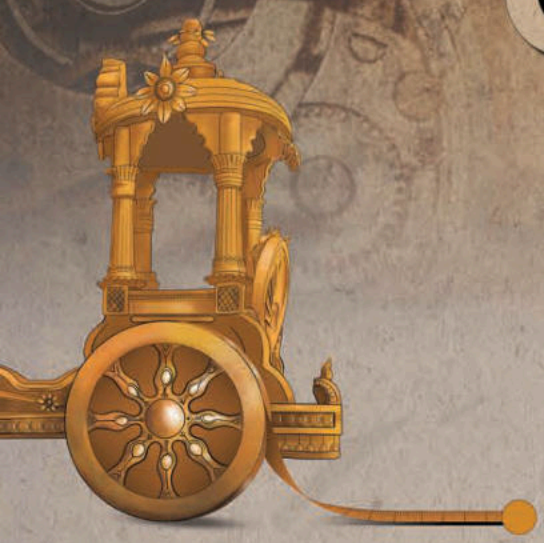
महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम, जयपुर का चित्र (1750-1768)। महाराजा को एक जामा पहनाया जाता है जिसमें एक सज्जित चोली होती है जो किनारे से जुड़ी होती है, और एक लंबी और एकत्रित स्कर्ट होती है। वह एक बाजूबंद, कंगन और हार, और एक रत्नजड़ित पगड़ी पहनता है। उसकी कमर एक पारका से लिपटी हुई है जिसमें उसकी तलवार है। उनके वस्त्र के सूक्ष्म रूप और कुशन, फर्श कवरिंग और स्क्रीन के लिए उपयोग किए जाने वाले परिष्कृत वस्त्र जयपुरी कपड़ों के वस्त्र शोधन के स्तर को दर्शाते हैं।

Portrait of Maharaja Sawai Madho Singh I, Jaipur (1750-1768). Maharaja is dressed in a jama with a fitted bodice which attaches at the side, and a long and gathered skirt. He wears an armband, bracelets and necklaces, and a Jewelled turban. His waist is wrapped with a parka which holds his sword. The subtle motifs of his robe and the sophisticated textiles used for the cushions, floor coverings and screens show the level of textile refinement of Jaipuri fabrics.



जंतर मंतर, जयपुर जय सिंह द्वारा निर्मित पांच खगोलीय वेधशालाओं में से सबसे बड़ी थी। सम्राट यंत्र, जयपुर दुनिया की सबसे बड़ी धूपघड़ी (27 मीटर ऊंची) है। सवाई जय सिंह ने दिल्ली, मथुरा (अपने आगरा प्रांत में), बनारस, उज्जैन (अपने मालवा प्रांत की राजधानी) और अपनी राजधानी जयपुर में पांच वेधशालाएँ बनवाईं। उन्होंने लोगों को खगोलीय अवलोकन करने में सक्षम बनाने के लिए तालिकाओं का एक सेट तैयार किया। मुख्य रूप से भारतीय खगोल विज्ञान पर भरोसा करते हुए, इन इमारतों का उपयोग ग्रहणों और अन्य खगोलीय घटनाओं की सटीक भविष्यवाणी करने के लिए किया जाता था।

Jantar Mantar, Jaipur was the largest of the five Astronomical Observatories built by Jai Singh. Samrat Yantra, Jaipur is the world's largest sundial (27 meters high). Sawai Jai Singh built five observatories at Delhi, Mathura (in his Agra province), Benares, Ujjain (capital of his Malwa province), and his own capital of Jaipur. He drew up a set of tables to enable people to make astronomical observations. Relying primarily on Indian astronomy, these buildings were used to accurately predict eclipses and other astronomical events.





लोहार वंश
Loharas

11 वीं से 14 वीं शताब्दी ई. लगभग 400 वर्षों तक शासन किया
(11th-14th Century CE – reigned for nearly 400 years)

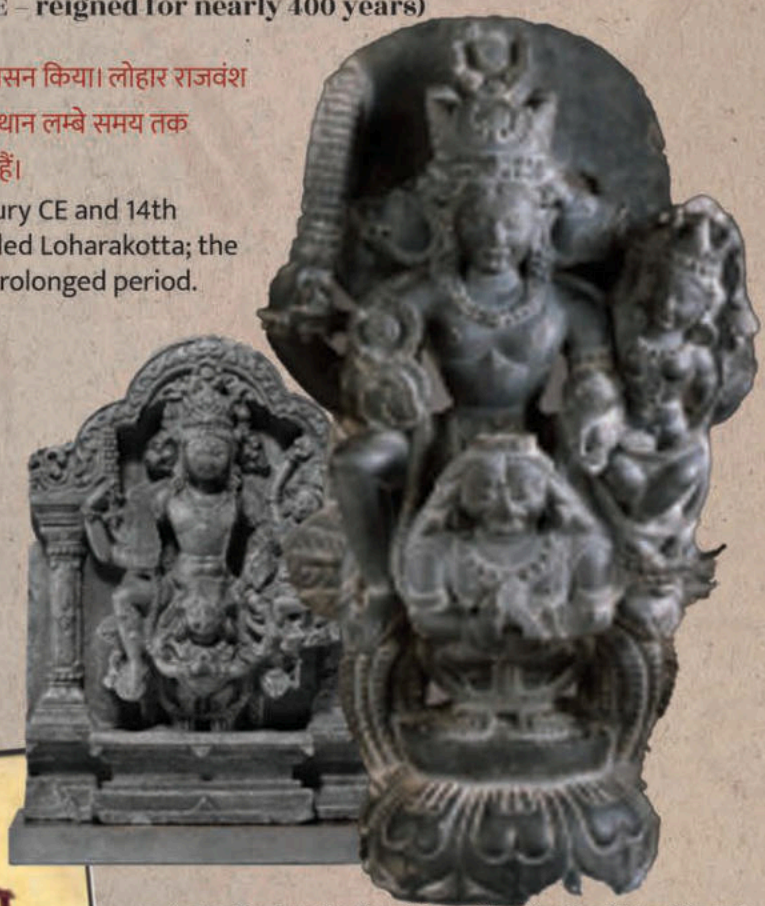
लोहार वंश ने कश्मीर पर लगभग 11वीं शताब्दी ई0 से 14वीं शताब्दी ई0 के बीच शासन किया। लोहार राजवंश का सिंहासन एक पहाड़ी किला था जिसे लोहारकोट्टा कहा जाता था; इसका नियत स्थान लम्बे समय तक अकादमिक बहस का विषय बना रहा है। कश्मीर की प्रसिद्ध रानी दिद्दा इसी वंश की हैं।

Lohara dynasty ruled Kashmir approximately between 11th Century CE and 14th Century CE. The seat of the Lohara dynasty was a hill fortress called Loharakotta; the precise location has been the subject of academic debate for a prolonged period. The famous queen of Kashmir, Didda, belongs to this dynasty.



दिद्दा ने 980 ई0 से 1003 ई0 तक कश्मीर पर शासन किया। दिद्दा ने अपने भाई के बेटे संग्रामराज को सिंहासन पर बिठाया, शाही उत्तराधिकार को यशस्करों से लोहारा वंश में स्थानांतरित कर दिया।

Didda (c. 924 CE – 1003 CE) was the ruler of Kashmir from 980 CE to 1003 CE. Didda placed Sangramaraja, the son of her brother, on the throne, shifting the royal succession from the Yashaskaras to Lohara dynasty.



गरुड़ पर आरूढ़ विष्णु और लक्ष्मी, 11वीं शताब्दी ई0, जम्मू और कश्मीर। मूर्तिकला वैकुंठ चतुर्मूर्ति प्रकार से संबंधित है, जो मुख्य रूप से कश्मीर में पाए जाने वाले हिंदू भगवान विष्णु के चार सिर वाले पहलू हैं। लोहारा मूर्तियों पर जटिल नक्काशी इस अवधि के दौरान उपयोग किए जाने वाले आभूषणों, आभूषणों और बढ़िया वस्त्रों का प्रदर्शन करते हैं।

Vishnu and Lakshmi supported by Garuda, 11th century C.E., Jammu and Kashmir. The sculpture belongs to the Vaikuntha Chaturmurti type, a four-headed aspect of the Hindu god Vishnu, primarily found in Kashmir. Intricate carvings on Lohara sculptures demonstration ornaments, jewellery and fine textiles used during this period.

कल्हणविरचिता
राजतरङ्गिणी

Rajatarangini ("The River of Kings"), written by Kalhan in 12th century C.E., is a metrical legendary and historical chronicle of the north-western part of India, particularly the kings of Kashmir. The work consists of 7826 verses, which are divided between eight books called tarangas ("waves").

राजतरंगिणी ("राजाओं की नदी") 12 वीं शताब्दी ई0 में कल्हण द्वारा लिखित, भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग, विशेष रूप से कश्मीर के राजाओं का एक पौराणिक पौराणिक और ऐतिहासिक कालक्रम है। काम में 7826 छंद शामिल हैं, जिन्हें तरंग ("लहर") नामक आठ पुस्तकों के बीच विभाजित किया गया है।



बोधिसत्व सुगतिसमदर्शन-लोकेश्वर, कश्मीर, लोहारा काल, c. 11वीं शताब्दी, हमें लोहारों के अधीन धातु विज्ञान, शिल्प कौशल और आभूषणों के विकास की एक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

The Bodhisattva Sugatisamdarsana-Lokeśvara, Kashmir, Lohara period, c. 11th century, gives us an insight into development of metallurgy, craftsmanship and ornaments under the Loharas.



रानी दिद्दा का सिक्का (979-1003 सीई)। अग्रभाग: ललितासन में बैठी लक्ष्मी, दाहिने हाथ में मुकुट और बाएं हाथ में लंबे तने वाला कमल, शारदा लिपि में बाईं ओर किंवदंती: श्री, दाईं ओर: दिद्दा। उल्टा: उच्च शैली वाले राजा का सामना करना पड़ रहा है, बाईं ओर वेदी पर बलिदान, शारदा लिपि में किंवदंती: दे (व्य)।

Coin of Queen Didda (979-1003 CE). Obverse: Lakshmi seated facing in lalitasana, holding diadem in right hand and long-stemmed lotus in left hand, legend at left in Sharada script: Sri, at right: Didda. Reverse: Highly stylized King standing facing, sacrificing at altar at left, legend at right in Sharada script: De(vya).



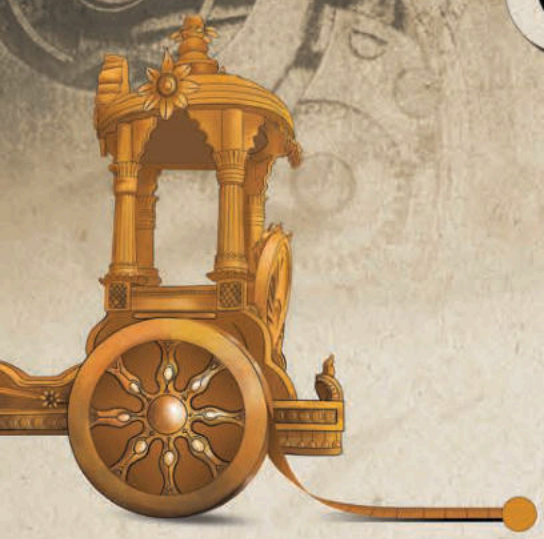
हर्ष ("हर्षदेव") का सिक्का, कश्मीर, 1089-1101 ई0। अग्रभाग- घोड़े की पीठ पर एक कोणीय हेडड्रेस पहने हुए और भाला पकड़े हुए आदमी; उपर शारदा लिपि में "श्री हर्षदेव"; पीछे की तरफ- देवी कमल पर मुख किए हुए, कमल और कलश धारण किए हुए बैठी हैं।

Coinage of Harsa ("Harshadeva"), Kashmir, 1089-1101 CE. Obverse- Man, wearing an angular headdress and holding spear, on horseback; "Śrī Harṣadeva" in Śāradā script above; reverse- Goddess seated facing on a lotus, holding lotus and vase.



एक बौद्ध प्रज्ञापारमिता सूत्र पांडुलिपि अंकित पृष्ठ का अंश, कश्मीर, 11 वीं-12वीं शताब्दी ई0। यह लोहार शासन के तहत महायान बौद्ध धर्म के विकास को इंगित करता है जो लोहारों द्वारा बढ़ावा दी गई सहनशीलता और लोकतंत्र की भावना को दर्शाता है।

Fragment of a Buddhist Prajnaparamita Sutra manuscript folio, Kashmir, 11th-12th Century C.E. This indicates developments in Mahayana Buddhism under Lohara rule, reflecting a spirit of toleration and democracy fostered by Loharas.





सेन वंश
Senas

11 वीं से 12 वीं शताब्दी ई. लगभग 200 वर्षों तक शासन किया
(11th-12th Century CE – reigned for nearly 200 years)

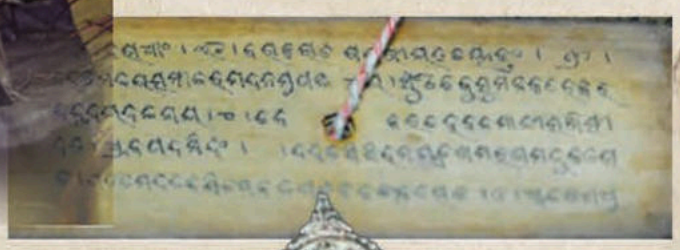
सेन वंश ने 11वीं से 12वीं शताब्दी तक बंगाल पर शासन किया। सेन साम्राज्य, अपने चरम पर, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में फैला हुआ था।

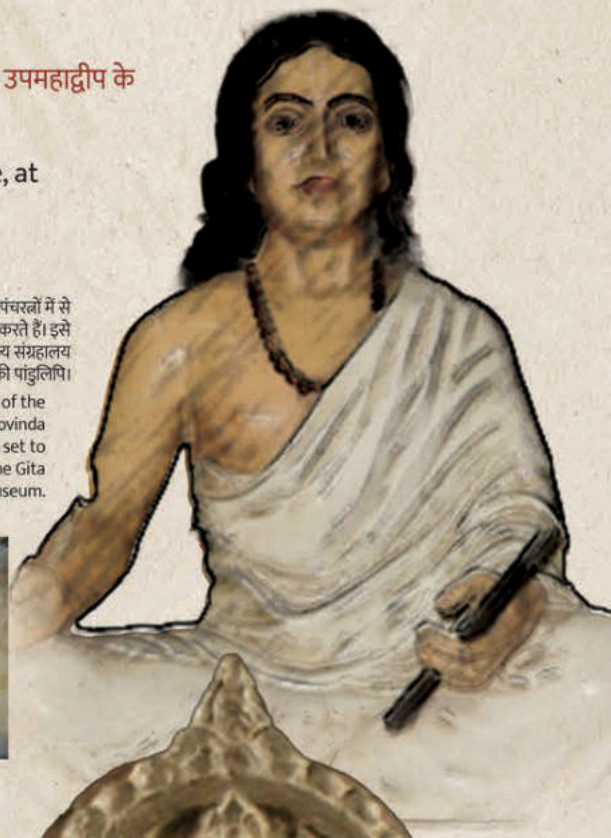
The Sena dynasty ruled Bengal through the 11th and 12th centuries. The empire, at its peak, covered much of the north-eastern region of the Indian subcontinent.



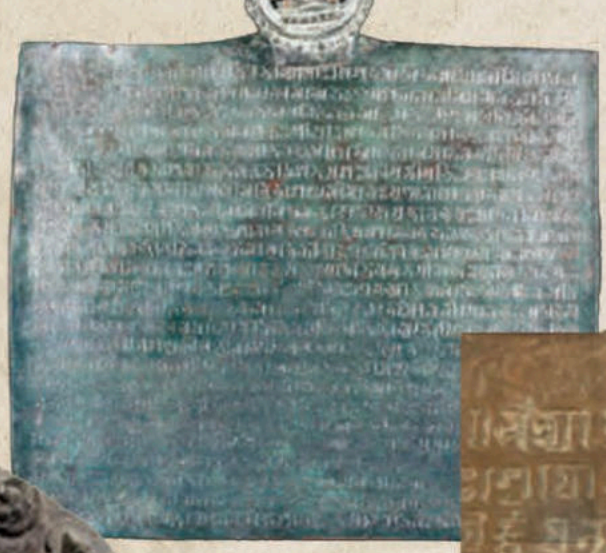
जयदेव, प्रसिद्ध संस्कृत कवि और गीता गोविंदा के लेखक, लक्ष्मण सेना के दरबार में पंचरत्नों में से एक थे। गीता गोविंदा वसंत के संस्कार में राधा के लिए कृष्ण के प्रेम पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसे गाया जाता है, पारंपरिक ओडिसी रागों और तलों पर सेट किया जाता है। ओडिशा राज्य संग्रहालय में गीता गोविंदा की मूल ताड़ के पत्ते की पांडुलिपि।

Jayadeva, the famous Sanskrit poet and author of Gita Govinda, was one of the Pancharatnas (five gems) in the court of Lakshmana Sena. Gita Govinda concentrates on Krishna's love for Radha in a rite of spring. It is sung, set to traditional Odissi ragas & talas. Original palm leaf manuscript of the Gita Govinda in Odisha State Museum.









जबैरकपुर शिलालेख संस्कृत में तांबे के एक टुकड़े पर उकेरा गया है। यह शिलालेख विजय सेना के 32वें वर्ष (लगभग 1159 ई.) के शासनकाल का है। इसमें उदयकरदेव शरमन नाम के एक को भूमि का एक टुकड़ा देने का रिकॉर्ड है।

The Barrackpur inscription is incised on a single piece of copper in Sanskrit. The inscription is dated to the year 32 reign of Vijaya Sena (approximately AD 1159). It records the grant of a piece of land to a named Udayakaradeva Sharman.



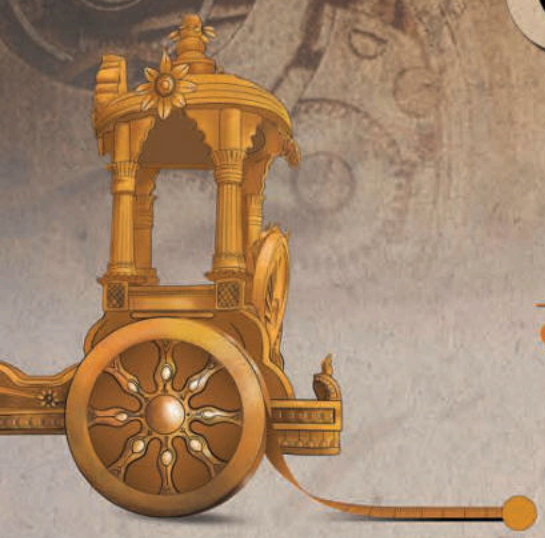
सेन राजवंश की शाही मुहर, भगवान शिव की दस भुजाओं वाली आकृति, पट्टिका के शीर्ष पर जुड़ी हुई
The royal seal of the Sena dynasty, a ten-armed figure of the god Shiva, is attached to the top of the plaque.



विष्णु की एक मूर्ति, बंगाल, सेन कालीन, 11वीं शताब्दी ई०।
A statue of Vishnu, Bengal, from the Sena period, 11th Cent CE.

ढाकेश्वरी (दुर्गा) मंदिर, 12 वीं शताब्दी ई०, बल्लाल सेन द्वारा निर्मित, ढाका, वर्तमान बांग्लादेश।
The Dhakeshwari (Durga) temple, 12th Cent C.E., built by Ballala Sena, Dhaka, present day Bangladesh.







गहड़वाल राजवंश
Gahadavalas

11वीं से 12वीं शताब्दी ई. लगभग 200 वर्षों तक शासन किया
(11th-12th Century CE – reigned for nearly 200 years)

गहड़वाल राजवंश, कन्नौज के गहड़वाल, एक राजपूत राजवंश था, जिन्होंने 11वीं-12वीं शताब्दी के दौरान वर्तमान भारतीय राज्यों उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों पर शासन किया था। इनकी राजधानी कन्नौज थी।

The Gahadavala dynasty, also Gahadavalas of Kannauj, was a Rajput dynasty that ruled parts of the present-day Indian states of Uttar Pradesh and Bihar during the 11th and 12th centuries. Their capital was at Kannauj.

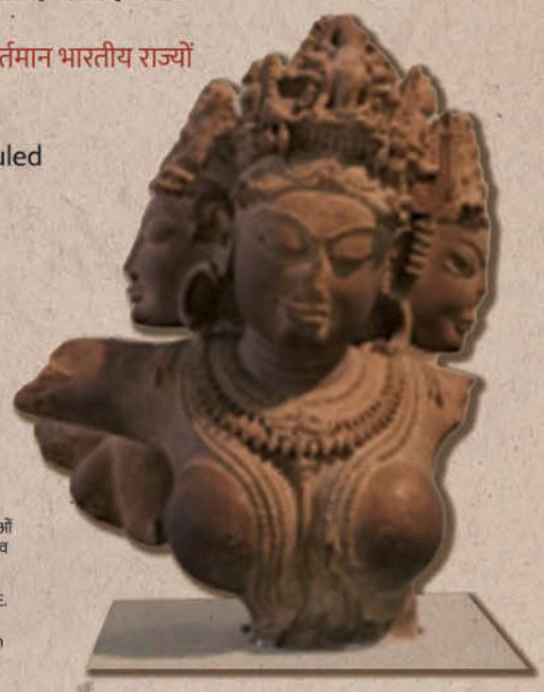


मार्तंड (सूर्य-देवता या सूर्य का एक रूप) प्रतिमा, राजस्थान, 12वीं शताब्दी ई0
Martanda (a form of the Sun-God or Surya) statue, Rajasthan, 12th-century C.E.



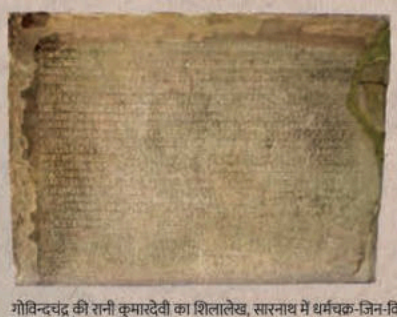
महानतम गढ़वाल शासक गोविंदचंद्र का सोने का सिक्का, 11वीं शताब्दी ई. अग्रभाग- चार भुजाओं वाली लक्ष्मी कमल पर पालथी मारकर बैठी हैं; पश्चभाग: देवनागरी लेख श्रीमद गो/विंदा चंद्र/ देव कमल के साथ नीचे दाईं ओर।

Gold coin of Govindachandra, the greatest Gahadavala ruler, 11th Cent C.E. Obverse- Four-armed Lakshmi seated cross-legged on a lotus; Reverse: Devanagari legend 'Srimad Go/vinda Chandra/Deva' with lotus to bottom right.



वज्र तारा की मूर्ति, सारनाथ, 11वीं शताब्दी ई0, गढ़वाल राजवंश के अधीन मूर्तिकला में विकास का संकेत देती है, साथ ही उनके शासन में समानांतर वैष्णव और बौद्ध उपस्थिति, सहिष्णु और लोकतांत्रिक भावना का संकेत देती है।

Statue of Vajra Tara, Sarnath, 11th Cent CE, Gahadavala Dynasty, indicating the developments in sculpture under the Gahadavalas, as also the parallel Vaishnava and Buddhist presence in their rule, indicating a tolerant, democratic spirit.



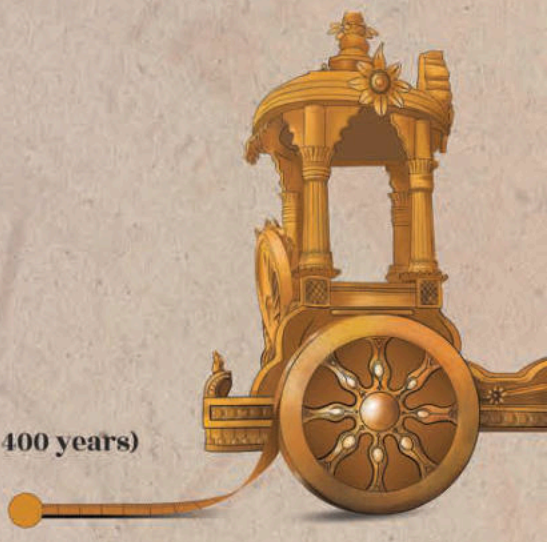
गोविन्दचंद्र की रानी कुमारदेवी का शिलालेख, सारनाथ में धर्मचक्र-जिन-विहार के निर्माण का उल्लेख करते हुए, 12वीं शताब्दी ई0। यह वाराणसी को तुरुष्कों (गजनवी तुर्कों) से बचाने के लिए उसकी प्रशंसा करता है।

Inscription of Kumaradevi, the Queen of Govindachandra, mentioning the construction of Dharmachkra-Jin-Vihara at Sarnath, 12th Century C.E. It praises him for protecting Varanasi from the Turushkas (the Ghaznavids Turks).



कर्णाट वंश
Karnatas

11वीं से 14वीं शताब्दी ई. लगभग 400 वर्षों तक शासन किया
(11th-14th Century CE – reigned for nearly 400 years)

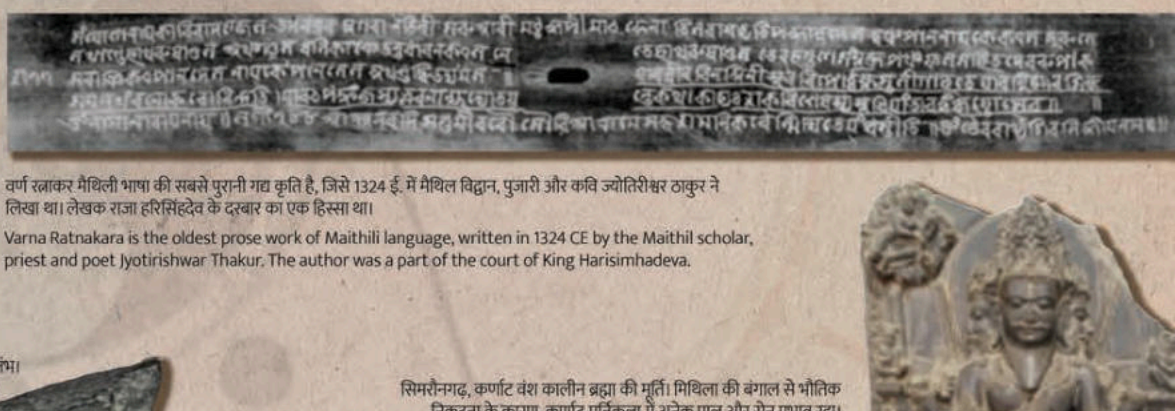


कर्णाट या कर्णाटा वंश ने 11वीं से 14वीं शताब्दी ई0 के बीच समकालीन मिथिला, बिहार, भारत और नेपाल के कुछ हिस्सों पर शासन किया।

Karnat was established in 1097 CE by Nanyadeva. Karnat ruled over contemporary Mithila in the Bihar state of India and parts of Nepal between 11th and 14th Century CE.



कर्णाट राजवंश की राजधानी सिमरौनगढ़ में स्थित राजभवन का स्तंभ।
Pillar of Rajabhavan at Simraungarh, the capital of the Karnata dynasty.



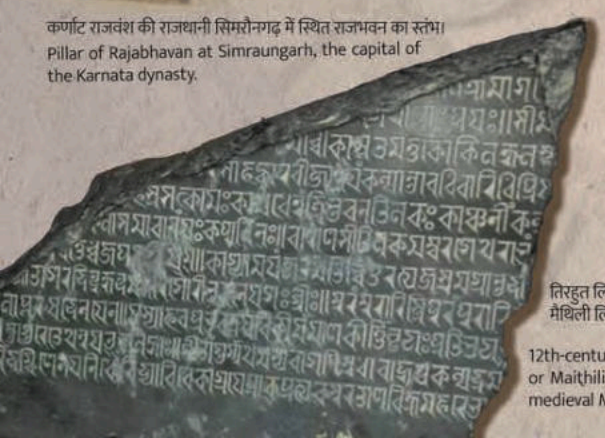
वर्ण रत्नाकर मैथिली भाषा की सबसे पुरानी गद्य कृति है, जिसे 1324 ई. में मैथिल विद्वान, पुजारी और कवि ज्योतिरीश्वर ठाकुर ने लिखा था। लेखक राजा हरिसिंहदेव के दरबार का एक हिस्सा था।

Varna Ratnakara is the oldest prose work of Maithili language, written in 1324 CE by the Maithil scholar, priest and poet Jyotirishwar Thakur. The author was a part of the court of King Harisimhadeva.



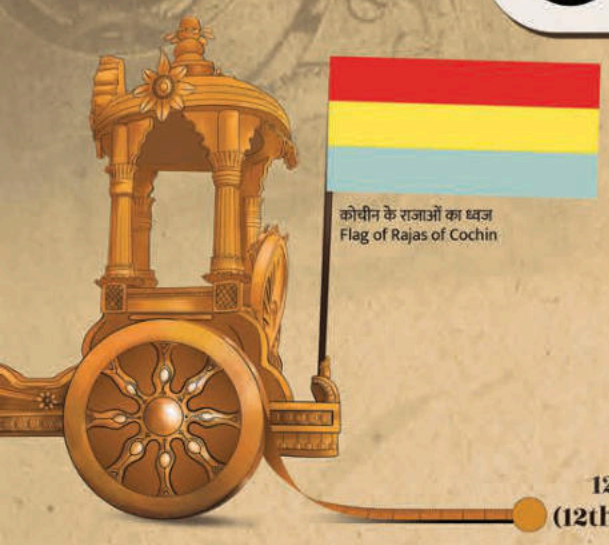
सिमरौनगढ़, कर्णाट वंश कालीन ब्रह्मा की मूर्ति। मिथिला की बंगाल से भौतिक निकटता के कारण, कर्णाट मूर्तिकला में अनेक पाल और सेन प्रभाव रहा।

Statue of Brahma from Simraungadh, Karnata period. Due to Mithila's physical proximity to Bengal, the sculpture of the Karnatas had many Pala and Sena influences.



तिरहुत लिपि में 12वीं शताब्दी का राजा नरसिम्हदेव के शासन काल का शिलालेख। तिरहुत या मैथिली लिपि मैथिली भाषा के लिए प्राथमिक ऐतिहासिक लिपि थी और मध्यकालीन मिथिला में संस्कृत भी थी।

12th-century Stone Inscription in Tirhuta script from the reign of king Narsimhadeva. The Tirhuta or Maithili script was the primary historical script for the Maithili language and also Sanskrit in medieval Mithila.



कोचीन के राजाओं का ध्वज
Flag of Rajas of Cochin



कोचीन के राजा
Rajas of Cochin

12वीं से 20वीं शताब्दी ई. लगभग 900 वर्षों तक शासन किया
(12th-20th Century CE - reigned for nearly 900 years)

कोचीन के राजाओं, जिन्हें पेरुमपदापु स्वरूपम वंश के नाम से भी जाना जाता है, ने अपनी राजधानी कोचीन से, लगभग 11वीं शताब्दी ई० से स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघ में विलय तक, आधुनिक केरल के मध्य भाग पर शासन किया। कालीकट और कन्नानोर के अलावा, वे केरल के तीन सबसे शक्तिशाली राज्यों में से एक थे।

The Rajas of Cochin, also known as the Perumpadapu Swaroopam dynasty, ruled over a kingdom comprising central parts of modern-day Kerala, from their capital city of Cochin, from circa 11th Century CE till the kingdom's accession to the Indian Union after independence. Besides Calicut and Cannanore, they were among the three most powerful kingdoms of Kerala.



मट्टनचेरी पैलेस, कोच्चि, केरल के दृश्य, पुर्तगालियों द्वारा कोचीन राजाओं को उपहार के रूप में निर्मित, 16वीं शताब्दी ई०।

Visuals from the Mattancherry Palace, Kochi, Kerala, built by the Portuguese as a gift to the Cochin Rajas, 16th Cent CE. Built in the traditional Kerala Nalukettu style, it also combines European influences. The Cochin Rajas were strong allies of the Portuguese in Kerala.



राम वर्मा कुंजी पिल्लई थमपुरन (1751-1805), या राम वर्मा IX, कोचीन साम्राज्य के शासक थे। त्रिशूर पूरम त्योहार उनके द्वारा शुरू किया गया था।

Rama Varma Kunji pillai Thampuran (1751–1805), or Rama Varma IX, was the ruler of the Kingdom of Cochin. The festival Thrissur Pooram was started by him.



विष्णु के नरसिम्हा अवतार का एक भित्ति चित्र, मट्टनचेरी महल, लगभग 16वीं शताब्दी ई०। इन भित्ति-चित्रों ने चित्रों की एक विशिष्ट केरल शैली को प्रभावित किया।

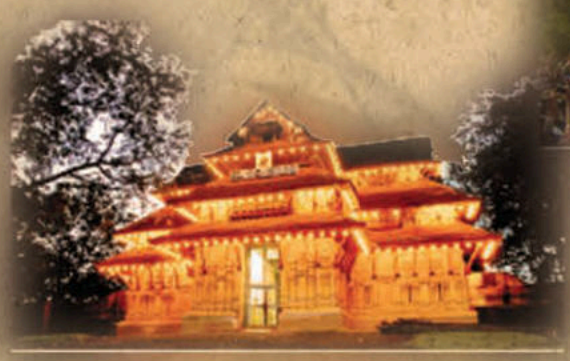
A mural of Vishnu's Narasimha incarnation, Mattancherry palace, circa 16th Cent C.E. These murals influenced a distinct Kerala style of paintings.



मट्टनचेरी महल का एक अन्य भित्ति चित्र, जो रामायण से कुंभकर्ण के जागरण को दर्शाता है, लगभग 16वीं शताब्दी ई०।

Another mural from the Mattancherry Palace depicts the waking up of Kumbhakarna from Ramayana, circa 16th Cent C.E.





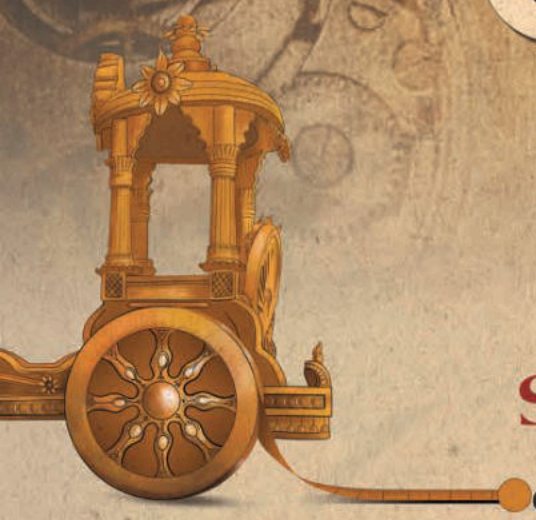
त्रिशूर पूरम एक वार्षिक हिंदू मंदिर उत्सव है जो हर साल मलयालम कैलेंडर माह मेदम के पूरम दिवस पर वडक्कुनाथन (शिव) मंदिर में आयोजित किया जाता है। त्रिशूर पूरम कोचीन के महाराजा राम वर्मा IX के दिमाग की उपज थी।

The Thrissur Pooram is an annual Hindu temple festival held at the Vadakkunnathan (Shiva) Temple every year on the Pooram day in the Malayalam Calendar month of Medam. Thrissur Pooram was the brainchild of Rama Varma IX, the Maharaja of Cochin.

सकथन थमपुरन पैलेस राजा राम वर्मा सकथन थमपुरन की शक्ति का केंद्र था, जिन्होंने 1790 और 1805 ईस्वी के बीच कोच्चि पर शासन किया था। सकथन थमपुरन पैलेस की मुख्य संरचना में दो मंजिला इमारत और एक पारंपरिक केरल शैली नालुकेट्टु है।

Sakthan Thampuran Palace was the centre of power of King Rama Varma Sakthan Thampuran, who ruled Kochi between AD 1790 and 1805. The main structure of the Sakthan Thampuran Palace has a two-storeyed building and a traditional Kerala style Nālukettu.







सामूतिरि राजा
Samoothiri Rajas

12वीं से 19वीं शताब्दी ई. लगभग 800 वर्षों तक शासन किया
(12th-19th Century CE – reigned for nearly 800 years)

सामूतिरि (ज़मोरिन अंग्रेजी नाम)12वीं से 19वीं शताब्दी ई तक भारत के दक्षिण मालाबार क्षेत्र में कोझिकोड (कालीकट) साम्राज्य के वंशानुगत नायर सम्राट थे। अपने शासनकाल के चरम पर, उन्होंने कोझिकोड कोल्लम (कोल्लम) से लेकर पंथालयिनी कोल्लम (कोयिलैंडी) की सीमाओं तक फैले एक क्षेत्र पर शासन किया।

The Samoothiris (Anglicised as Zamorin) were the hereditary Nair monarchs of the Kingdom of Kozhikode (Calicut) in the South Malabar region of India from the 12th to the 19th Century CE. At the peak of their reign, they ruled over a region extending from Kozhikode Kollam (Kollam) to the borders of Panthalayini Kollam (Koyilandy).



ताली शिव मंदिर, या ताली महाक्षेत्रम, कोझिकोड शहर, केरल। मंदिर का निर्माण 14वीं शताब्दी में सामूतिरि ने करवाया था। यह कोझिकोड के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है

Tali Shiva Temple, or Tali Mahakshetram, Kozhikode city, Kerala. The temple was built in the 14th Century by the Samoothiris. It is one of the oldest temples in Kozhikode.



13 वीं शताब्दी ई में पुराने मलयालम और अरबी में मुकुन्ती मस्जिद शिलाल जो मस्जिद को सामूतिरि द्वारा विन्यास देने का उल्लेख करता है। यह सामूतिरियों के अधीन मुसलमानों को शाहीसंरक्षण दिए जाने का संकेत देता है। हम विभिन्न धार्मिकसमुदायों को अनुदान देने में कालीकट के सामूतिरि शासकों के लोकतांत्रिक मूल्यों को देख सकते

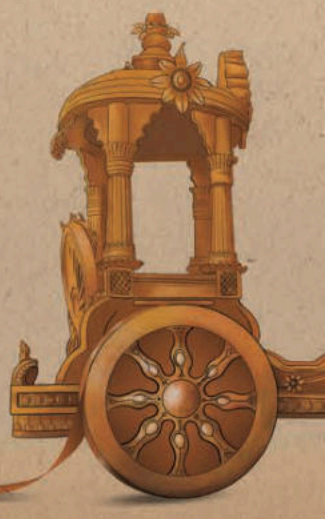
Muccunti Mosque Inscription in Old Malayalam and Arabic, 13th century C.E., mentioning the Samoothiris's endowment to the Mosque. It indicates royal patronage being extended to the Muslims under the Samoothiris. We can see the democratic values of the Samoothiri rulers of Calicut in giving grants to different religious communities.



झेंग हे का 1430 ई. का नेविगेशन चार्ट, होर्मुज से कालीकट। प्रसिद्ध मिंग चीनी एडमिरल झेंग हे (चेंग हो) ने 15वीं शताब्दी की आरंभ में कई बार कालीकट का दौरा किया। सामूतिरि के चीनी सहित कई विदेशी साम्राज्यों के साथ व्यापारिक संबंध थे।

Zheng He's navigation chart from Hormuz to Calicut, 1430. Zheng He (Cheng Ho), the renowned Ming Chinese admiral, visited Calicut several times in the early 15th Century. Samoothiris had trade links with many foreign empires, including the Chinese.





ओइनिवार (सुगौना राजवंश)
Oiniwars (Sugauna dynasty)

14वीं से 17 शताब्दी ई. लगभग 400 वर्षों तक शासन किया
(14th-17th Century CE – reigned for nearly 400 years)

ओइनवारों ने मिथिला क्षेत्र, बिहार पर 14वीं शताब्दी के अंत से 17वीं शताब्दी सीई के दौरान शासन किया। मिथिला, विशेषकर मैथिली भाषा एवं संस्कृति, उनके शासन में बहुत विकसित हुई।

The Oiniwars ruled the Mithila region, Bihar, from 14th - late-17th Cent CE. The culture of Mithila, especially the Maithili language, developed greatly under their trule.

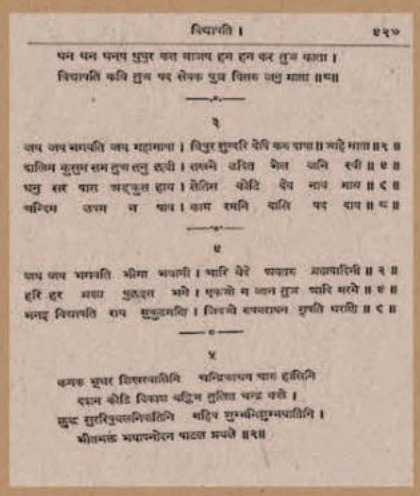


मधुबनी चित्रकला शैली में राजा शिव सिम्हा (1413-1416 ईस्वी तक शासन किया) का चित्र। उनके छोटे लेकिन सक्रिय शासन को ओइनवार शासन का स्वर्णिम काल माना जाता है।

Portrait of Raja Shiva Simha (reigned 1413-1416 CE), Madhubani painting style. His short but active reign was regarded as the golden period of Oiniwar rule.

मिथिला के मधुबनी क्षेत्र में चित्रकला का एक विशिष्ट स्कूल, जिसे मधुबनी स्कूल के रूप में जाना जाता है, विकसित हुआ।

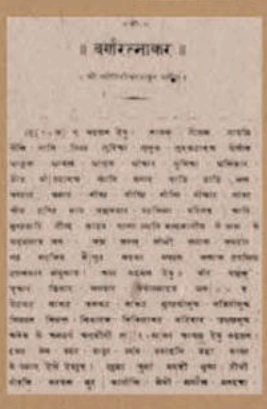
A distinctive school of painting, known as the Madhubani school, developed in the Madhubani region of Mithila.



विद्यापति की "पदावली" का एक भाग, राधा और कृष्ण के बीच प्रेम को दर्शाती उनकी मैथिली कविताओं का संकलन। प्रारंभिक मैथिली भाषा और साहित्य को आकार देने का श्रेय विद्यापति की रचनाओं को दिया जाता है। वैष्णव विषयों पर एक शैव कवि-संत लेखन एक सहिष्णु, लोकतांत्रिक भावना को दर्शाता है।

A portion from Vidyapati's 'Padavali', a compilation of his Maithili poems depicting the romance between Radha and Krishna. Vidyapati's works are credited with shaping early Maithili language and literature. A shaiva poet-saint writing on Vaishnava themes indicates a tolerant, democratic spirit.





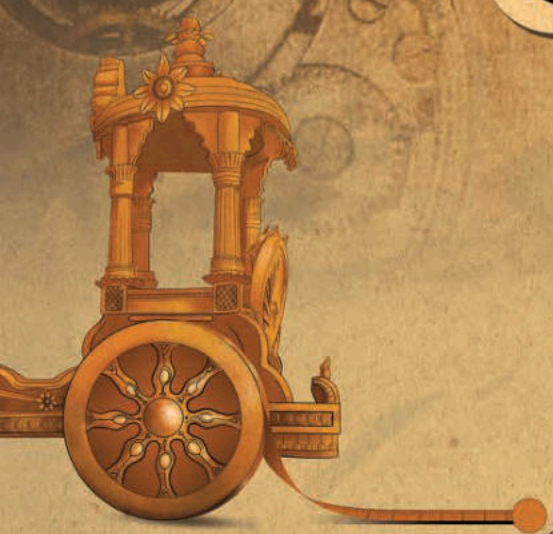
वर्ण रत्नाकर, महाविद्वान ज्योतिरीक्षर ठाकुर (1290-1350 ई.) द्वारा लिखित मैथिली विश्वकोश।

Varna Ratnakar, an encyclopedia in Maithili written by polymath Joyotirishwar Thakur (1290-1350 CE).



मैथिली साहित्य के अग्रणी शैव कवि-संत विद्यापति ठाकुर (लगभग 1380-1460 सीई) का चित्र, जिन्हें 'मैथिल कवि कोकिल' या 'मिथिला का कोयल जैसा कवि' कहा जाता है। वह राजा शिव सिम्हा के दरबार में राजकवि थे।

Portrait of the Shaiva poet-saint Vidyapati Thakur (circa 1380-1460 CE), a pioneer of Maithili literature, referred to as 'Maithil Kavi Kokil' or 'the Cuckoo-like Poet of Mithila'. He was the poet-laureate in Raja Shiva Simha's court.





काकतीय राजवंश
Kakatiyas

12वीं से 14वीं शताब्दी ई. लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(12th-14th Century CE – reigned for nearly 300 years)

काकतीय राजवंश एक भारतीय राजवंश था जिसने 12वीं और 14वीं शताब्दी के बीच वर्तमान तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पूर्वी कर्नाटक और दक्षिणी ओडिशा के कुछ हिस्सों सहित अधिकांश पूर्वी डेक्कन क्षेत्र पर शासन किया था। उनकी राजधानी ओरुगल्लू थी, जिसे अब वारंगल के नाम से जाना जाता है। काकतीय वंश के आरंभिक सदस्यों के शासनकाल का निश्चित पता नहीं हैं। सबसे पहले ज्ञात काकतीय प्रमुख वेन्ना या वन्ना (c. 800-815) हैं, जिनका जन्म दुर्जय के परिवार में हुआ था, और उन्होंने काकती से शासन किया था।

The Kakatiya dynasty was an Indian dynasty that ruled most of the eastern Deccan region comprising present-day Telangana and Andhra Pradesh and parts of eastern Karnataka and southern Odisha between the 12th and 14th centuries. Their capital was Orugallu, now known as Warangal. The regnal years of the early members of the Kakatiya family are not certain. The earliest known Kakatiya chief is Venna or Vanna (r. c. 800-815), who was born in the family of Durjaya and ruled from Kakati.



हजार स्तंभ मंदिर या रुद्रेश्वर स्वामी मंदिर, हनमकोंडा, तेलंगाना जिसे 1163 ई में रुद्रदेव द्वारा निर्मित कराया गया। इसमें चालुक्य और काकतीय शैलियों के संयोजन जैसे कि स्टार-आकार और ट्रिपल तीर्थस्थल (त्रिकुतालय) संरचनाएं कप देखा जा सकता है। मंदिर के घटकों के रूप में बड़े पैमाने पर नक्काशीदार खंभे, छिद्रित स्क्रीन, उत्तम चिह्न, रॉक कट हाथी और अखंड डोलराइट नंदी दिखाई देते हैं।

The Thousand Pillar Temple or Rudreswara Swamy Temple, Hanamakonda, Telangana, was built by Rudra Deva in 1163 CE, combining late Chalukya an Kakatiya styles, such as star-shaped and triple shrined (Trikutalaya) structures. There are richly carved pillars, perforated screens, exquisite icons, rock-cut elephants and the monolithic dolerite Nandi as components of the temple.





विष्णु अपने वाहन, गरुड़, अपनी पत्नी, लक्ष्मी और अनुचरों के साथ, 12-13वीं शताब्दी, काकतीय काल। कल्याणी क्षेत्र, आंध्र प्रदेश।

Vishnu with his mount, Garuda, his consort, Lakshmi, and attendants, 12-13th century, Kakatiya period. Kalyani region, Andhra Pradesh.



रामप्पा शिव मंदिर, तेलंगाना। काकतीय शासक गणपति देव (शासनकाल 1199–1262 CE) के सेनापति रेचरला रुद्र द्वारा 1213 CE में निर्मित। काकतीय मंदिर स्थापत्य कला का एक विशिष्ट उदहारण है। उनके वैज्ञानिक कौशल को ईंटों में देखा जा सकता है जिनका उपयोग इस मंदिर के विमान को बनाने में किया गया है। ये ईंटें पानी में तैर भी सकती हैं।

Ramappa Shiva Temple, Telangana, was constructed in 1213 CE by Recharla Rudra, a general of Kakatiya ruler Ganapati Deva (reigned 1199–1262 CE). A typical specimen of Kaktiya temple architecture. Their scientific skills can be seen in the bricks used to make this temple's Vimana. These bricks can float in water.



वारंगल किला, वारंगल, तेलंगाना। ये लगभग 12वीं शताब्दी ई. में बनाया गया था। किले में चार सजावटी द्वार हैं, जिन्हें काकतीय कला थोरनम के नाम से जाना जाता है, जो मूल रूप से अब खंडहर हो चुके महान शिव मंदिर के प्रवेश द्वार हैं। वारंगल काकतीय वंश की राजधानी थी।

Warangal Fort, Warangal District, Telangana, built circa 12th Cent C.E. The fort has four ornamental gates, known as Kakatiya Kala Thoranam, that initially formed the entrances to a now ruined great Shiva temple. Warangal was the capital city of the Kakatiyas.



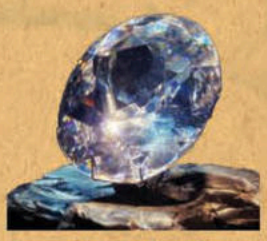
वारंगल किले परिसर में एक नंदी के साथ स्तंभमंडप।

Pillared mandapa with a Nandi in the fort complex, Warangal Fort.



रुद्रमा देवी, ने लगभग 1262-1289 सीई शासन किया और भारतीय इतिहास में कुछ रानियों में से एक है। उसने गणपति की दीवार की ऊंचाई बढ़ाने के साथ-साथ 2.4 किमी व्यास वाली दूसरी मिट्टी की पर्दे की दीवार और अतिरिक्त 150 फीट चौड़ी खाई के साथ राजधानी की किलेबंदी की योजना को जारी रखा।

Rudrama Devi, reigned around 1262–1289 CE and is one of the few queens in Indian history. She continued the planned fortification of the capital, raising the height of Ganapati's wall as well as adding a second earthen curtain wall 2.4 km in diameter and with an additional 150 feet -wide moat.



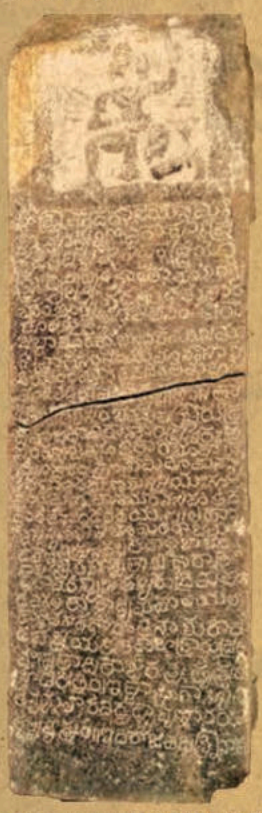
कोह-ए-नूर हीरा मूल रूप से काकतीय राजवंश के स्वामित्व में था। संभवतः 1310 सीई में कोह-ए-नूर हीरा काकतीय स्वामित्व से अलाउद्दीन के पास गया, साथ ही 20,000 घोड़ों और 100 हाथियों के साथ।

The Koh-i-Noor diamond was originally owned by the Kakatiya dynasty. It was probably in 1310 CE that the Koh-i-Noor diamond passed from Kakatiya ownership to that of Alauddin, along with 20,000 horses and 100 elephants.



हजार स्तंभ मंदिर शिलालेख रुद्रदेव को कई जीत का श्रेय देता है जो अंततः एक संप्रभु शक्ति के रूप में काकतीय की स्थापना का कारण बना। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने 1163 सीई से कुछ समय पहले ये जीत हासिल की थी, जब उन्होंने संप्रभुता की घोषणा की थी।

The Thousand Pillar Temple inscription credits Rudradeva with several victories that ultimately led to the establishment of Kakatiyas as a sovereign power. He appears to have achieved these victories sometime before 1163 CE, when he proclaimed sovereignty.



पेड्डाकंडुकुर में श्री वरदराजा स्वामी मंदिर के शिलालेख में काकतीय प्रतापरुद्र के शासनकाल के दौरान पेड्डाकंडुकुर गांव के लेका यादैया की पत्नी मल्लू बलम्मा द्वारा वरदराजा स्वामी को दिए गए दान का उल्लेख है। इसमें काकतीय लोगों की सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं का वर्णन है।

The inscription at Sri Varadaraja Swamy Temple in Peddakandukur mentions the donations made to Varadaraja Swamy by Lenka Yadaiah's wife Mallu Balamma of Peddakandukur village during the reign of Kakatiya Prataparudra. It describes the social and economic institutions of Kakatiyas.



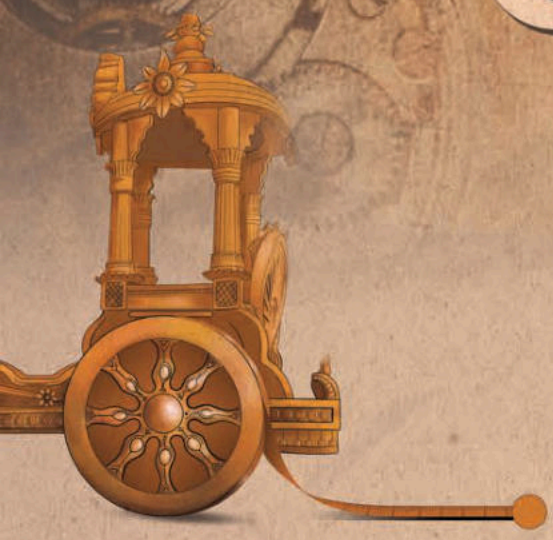
काकतीय स्वर्ण मुद्रा. मध्य में वराह, ऊपर सूर्य और चंद्रमा, श्री x 2, लोटस x 4, 2 महापुरुष पंच: "राय गज" और "केसरी"।

Kakatiya gold coin. Boar left at centre, sun and moon above, Sri x 2, Lotus x 4, 2 legend punches: "Raya Gaja" and "Kesari".



पाखल झील एक कृत्रिम झील है जो तेलंगाना में वारंगल शहर के पास पाखल अभयारण्य में स्थित है। झील का निर्माण काकतीय गणपति देव महाराजा के समय में मलयाला जगदुला मुम्मदी द्वारा सिंचाई के विकास और कृषि के विकास के लिए 1243 ईस्वी में किया गया था।

Pakhal Lake is an artificial lake situated in the Pakhal sanctuary close to Warangal City in Telangana. The lake was constructed during the time of the Kakatiya Ganapati deva Maharaja by Malyala Jagadula Mummadie in the year A.D.1243 for irrigation development and growth of agriculture.





यादव वंश
Yadavas

12वीं से 14वीं शताब्दी ई लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(12th - 14th Century CE- reigned for nearly 300 years)

12वीं से 14वीं शताब्दी पूर्व मध्य यादव या सेउना राजवंश ने वर्तमान महाराष्ट्र, उत्तरी कर्नाटक और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों पर शाशन किया। इनकी राजधानी देवगिरी (आधुनिक औरंगाबाद, महाराष्ट्र) थी।

The Yadavas or Seuna dynasty ruled over a kingdom that included present-day Maharashtra, North Karnataka and parts of Madhya Pradesh, from its capital at Devagiri (in modern Aurangabad district, Maharashtra) from the 12th to the 14th Century CE.



भिल्लम V (1175-1191 ई०) डेक्कन क्षेत्र के सेउना (यादव) वंश का पहला शासक शासक था। 1175 ई० के आसपास, भिल्लम ने राजधानी सिन्नार पर सत्ता प्राप्त कर सिंहासनासीन हुए

Bhillama V (c. 1175-1191 CE) was the first sovereign ruler of the Seuna (Yadava) dynasty of Deccan region. Around 1175 CE, Bhillama grabbed power at the Yadava capital Sinnar, and ascended the throne.



राजा भिल्लम v (1185-११९३ ई) का सिक्का। इसमें केंद्रीय कमल खिलता है, दो श्री चिन्ह, हाथी, शंख, और तीर के ऊपर देवनागरी में "[भिल्ला]/मदेव" लिखा है।

Coin of king Bhillama V (1185-1193). Central lotus blossom, two shri signs, elephant, conch, and "[Bhilla]/madeva" in Devanagari above arrow right.



राजा महादेव का पंचचिन्ह सिक्का (1261-1270)। केंद्रीय कमल खिलता, दो श्री, हाथी, शंख, और देवनागरी में "महादेव" तलवार के दाहिने पंच के निशान के ऊपर।

Punch-marked coin of king Mahadeva (1261–1270). Central lotus blossom, two Sri, elephant, conch, and "Mahadeva" in Devanagari above sword right punch marks



देवगिरी किले, औरंगाबाद से दिखाई देता दृश्य जिए प्रथम यादव राजा, भिल्लम V द्वारा लगभग 1187 ई में निर्मित कराया गया था। प्रवेश मार्गों की जटिल व्यवस्था, घुमावदार दीवारें, झूठे दरवाजे - दुश्मन को भ्रमित करने के लिए डिज़ाइन किए गए, बाईं ओर झूठे, लेकिन अच्छी तरह से डिज़ाइन किए गए द्वार दुश्मन सैनिकों को लुभाते हैं और उन्हें अंदर फँसाते हैं, अंततः उन्हें मगरमच्छों को खिलाते हैं।

Visuals from the Devagiri Fort, Aurangabad, Maharashtra, built circa 1187 CE by the first Yadava king, Bhillama V. Complex arrangement of entryways, curved walls, false doors - Designed to confuse the enemy, false, but well-designed gates on the left side lured the enemy soldiers in and trapped them inside, eventually feeding them to crocodiles.



गोंडेश्वर मंदिर का निर्माण 11वीं या 12वीं शताब्दी में भूमिजा शैली में पंचायतन परिसर के रूप में किया गया था जो चार सहायक मंदिरों से घिरा एक मुख्य मंदिर है। मुख्य मंदिर शिव को समर्पित है। मंदिर की दीवारें रामायण के दृश्यों को दर्शाती हैं।

The Gondeshwar temple was built circa the 11th or the 12th century C.E., in the Bhumijastyle, in the form of a Panchayatana complex, which features a main shrine surrounded by four subsidiary shrines. The main shrine is dedicated to Shiva. The temple's walls depict scenes from the Ramayana.



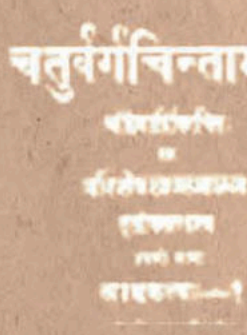
कर्नाटक के शिमोगा जिले के कुबेटूर में राजा सिम्हाना द्वितीय (1235 ई) के शासनकाल का नायक पत्थर, पुराने कन्नड़ शिलालेख। दक्षिण भारत के लोग युद्ध के मैदान में मारे गए सैनिकों का सम्मान करते थे। उनके वीरतापूर्ण कार्यों को याद करने के लिए नायक पत्थर बनाया गया था।

Hero stone with old Kannada inscription, 1235 CE, from the rule of King Simhana II at Kubetur, Shimoga district, Karnataka. Soldiers who died on the battlefield were revered by the people of South India. Hero stones were erected to commemorate their heroic deeds.



कर्नाटक के शिमोगा जिले के बालिगावी में केदारेश्वर मंदिर में राजा रामचंद्र के शासन के समय का पुराने कन्नड़ शिलालेख के साथ नायक पत्थर (विरगल)। हीरो स्टोन योद्धाओं को विभिन्न प्रकार के हथियारों के साथ चित्रित करते हैं, जो उनकी सैन्य प्रगति को दर्शाता है।

Hero stone (Virgal) with Old Kannada inscription, 1286 CE, from the rule of King Ramachandra in Kedareshvara temple at Balligavi, Shimoga district, Karnataka. The Hero stones depict warriors with different kinds of weapons, which signifies their military advancements.



विश्वकोश पुस्तक चतुरवर्ग चिंतामणि हेमाद्रि द्वारा लिखी गई थी, जो एक बहुज्ञ और प्रधान मंत्री थे, जो 1259 से 1274 सीई तक राजा महादेव (1259-1271) और राजा रामचंद्र (1271-1309) के शासन में थे। इसमें अन्य विषयों के अलावा, हजारों व्रतों के साथ-साथ उन्हें करने की कार्यप्रणाली भी शामिल है।

Encyclopedic book Chaturvarga Chintāmani was written by Hemadri, a polymath and a prime minister from 1259 to 1274 C.E. in the regimes of King Mahādev (1259–1271) and King Ramachandra (1271–1309). It contains, among other subjects, thousands of Vratas along with the modus operandi for performing them.



जोधपुर राज्य का राजचिन्ह एवं राजकीय ध्वज

Emblem and flag of Jodhpur Kingdom.



राठौर
Rathores

13वीं से 20वीं शताब्दी ई. लगभग 800 वर्षों तक शासन किया

(13th - 20th Century CE- reigned for nearly 800 years)

राठौर एक राजपूत राजवंश थे जिन्होंने 13 वीं शताब्दी ई. में मारवाड़ राज्य की स्थापना की। प्रारम्भ में उनकी राजधानियाँ पाली और मण्डौर थीं, फिर 1459 ई. में राव जोधा ने जोधपुर को राजधानी बनाया जिसके उपरांत यह जोधपुर राज्य भी कहलाया , एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रजवाड़ों के भारतीय महासंघ में विलय तक अस्तित्व में रहा।

The Rathores , a Rajput dynasty, founded the kingdom of Marwar in the 13th Cent CE. While they had earlier ruled from Pali and Mandore, the capital was shifted to Jodhpur in 1459 CE by Rao Jodha, and thereafter was known as the State of Jodhpur until its accession to the Indian Union after independence.



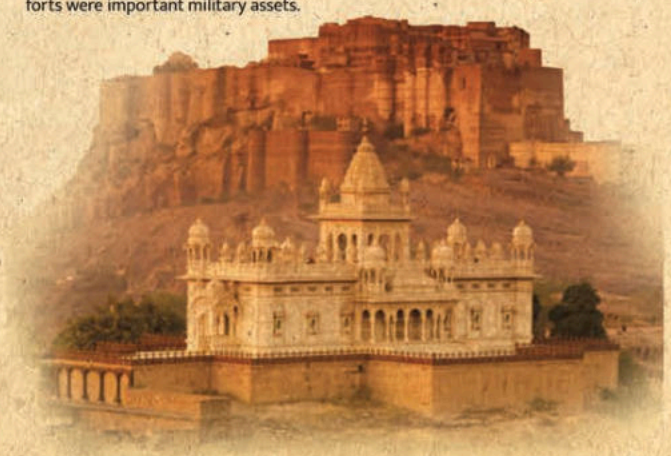
जोधपुर राज्य का राजचिन्ह एवं राजकीय ध्वज।
Emblem and flag of Jodhpur Kingdom.



राव जोधा, जोधपुर के संस्थापक।
Rao Jodha, the founder of Jodhpur.

मेहरानगढ़ क़िला, जोधपुर, राजस्थान। इसका निर्माण 1459 ई. में राव जोधा ने शुरू करवाया, हालाँकि वर्त्तमान ढाँचे का अधिकांश भाग 16 वीं शताब्दी का है। ऐसे क़िले बहुमूल्य सैन्य सम्पदा होते थे।

Mehrangarh Fort, Jodhpur, Rajasthan. Its construction was begun by Rao Jodha in 1459 CE, although much of the existing structure is from 16thCentury CE. Such forts were important military assets.



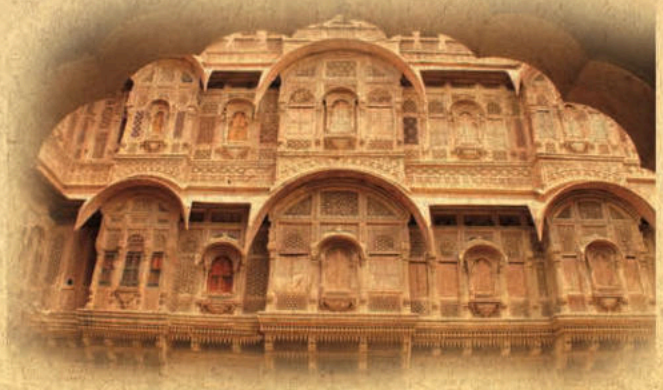


मेहरानगढ़ क़िले के भीतर नक़्क़ाशी, सोने से मढ़ी गई दीवारें, रंगीन शीशे एवं लकड़ी का प्रयोग इन कलाओं में प्रवीणता दर्शाते हुए।

Inlay work at Mehrangarh Fort containing gilded panels, painted glass and woodwork, displaying high level of mastery in metal-craft, glasswork and carpentry.



महाराजा मालदेव , मारवाड़ के महानतम शासकों में से एक।
Maharaja Maldeo, among the greatest kings of Marwar.



मेहरानगढ़ क़िले के झरोखों पर बारीक नक़्क़ाशी , पत्थर काटने में प्रवीणता का नमूना।
Intricately decorated balconies at Mehrangarh Fort, showing high degree of progress in stone-cutting.



सूरसागर सरोवर, महाराजा सूर सिंह द्वारा निर्मित, 16 वीं शताब्दी ई.। इनका अस्तित्व जल संचय एवं सिंचाई को लेकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण दर्शाता है

Sursagar Lake , built by Maharaja Sur Singh at Jodhpur, circa 16th Cent CE. Such reservoirs indicate a scientific environmental concern for water conservation and irrigation.



सूरसागर महल, महाराजा सूर सिंह द्वारा निर्मित, जोधपुर, 16 वीं शताब्दी.

Sursagar Palace , built by Maharaja Sur Singh at Jodhpur, circa 16th Cent CE.



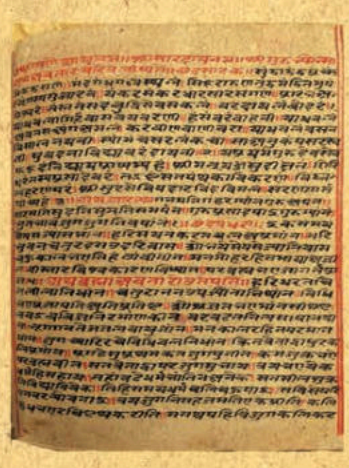
18 वीं शताब्दी की चित्रकारी, जोधपुर। राजपूताना चित्रकला शैली में एक ख़ास मारवाड़ शैली राठौर शासकों के अधीन विकसित हुई।

Paintings from 18th Cent CE, Jodhpur. A distinctive Marwar school within the Rajputana painting tradition flourished under the Rathore rulers.



भक्त कवि नरहरिदास बारहठ एवं उनके भक्ति काव्य अवतार चरित्र की पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ, 16 वीं - 17 वीं शताब्दी ई.।

Bhakti poet Narharidas Barhath, and a page from a manuscript of his devotional work Avatar Charitra, 16th -17th Cent CE.







अहोम (स्वर्गदेव)
Ahoms (Swargadeos)

13वीं से 19वीं शताब्दी ई. लगभग 700 वर्षों तक शासन किया।
(13th - 19th Century CE- reigned for nearly 700 years)

अहोमों ने 13वीं से 19वीं शताब्दी सीई तक असम पर शासन किया। असम के अधिकांश समाज और संस्कृति का उनके शासन में विकास हुआ।

The Ahoms ruled Assam from 13th - 19th Cent CE. Much of the society and culture of Assam developed under their rule.



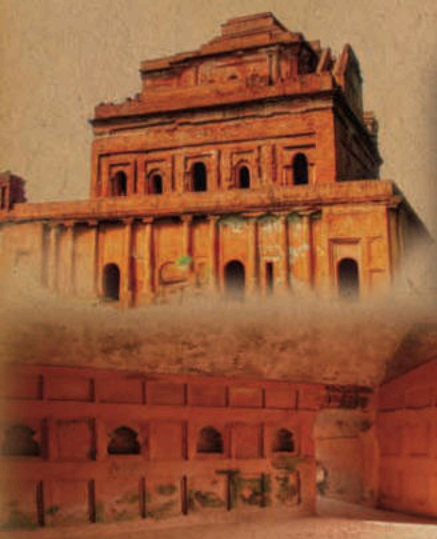
राजा रुद्र सिंह के चांदी के सिक्के, लगभग 17वीं शताब्दी सीई। उन्हें सबसे महान अहोम शासकों में से एक माना जाता है।

Silver coins of king Rudra Singha, circa 17th Cent CE. He is believed to be among the greatest Ahom rulers.



जॉय डोल, एक मंदिर- परिसर, जिसे राजा रुद्र सिंह ने 17 वीं शताब्दी के अंत में अपनी मां जॉयमोती देवी की याद में बनवाया था।

Joy Dol, a temple-complex built by king Rudra Singha in the late-17th Cent CE, in memory of his mother Joymoti Devi.





करेंग गढ़, जिसे गढ़गांव पैलेस भी कहा जाता है, राजा रुद्र सिंह द्वारा 1698 ईस्वी में बनवाया गया था। इसे राजा राजेश्वर सिंह ने 1752 सीई के आसपास फिर से बनवाया था।

Kareng Ghar, also called Garhgaon Palace, built by king Rudra Singha ,1698 CE. It was rebuilt by king Rajeshwar Singha around 1752 CE.



राजा रुद्र सिंह के दरबार को चित्रित करने वाली एक पेंटिंग, 18वीं शताब्दी ई।

A painting depicting king Rudra Singha holding court, 18th Cent CE.



अहोम काल की एक पांडुलिपि-पेंटिंग। चित्रों के माध्यम से पांडुलिपियों को चित्रित करने की कला का उनके शासन में अत्यधिक विकास हुआ।

A manuscript-painting , Ahom period. The art of illustrating manuscripts through paintings greatly developed under their rule.

शिवसागर झील, जिसे बोरपुखुरी भी कहा जाता है, और शिव डोल मंदिर, राजा शिव सिंह की पत्नी रानी अंबिका द्वारा 18वीं शताब्दी में बनवाया गया था। जलाशय निर्माण को संरक्षण देने वाली रानी एक समावेशी, समतावादी लोकाचार को इंगित करती है।

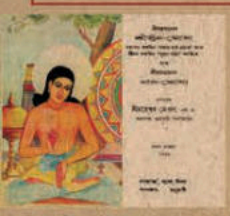
Shivasagar Lake, also called Borpukhuri, and the Shiva Dol temple, built by Queen Ambika, wife of king Shiva Singha, 18th Cent CE. Queens patronizing constructions indicates an inclusive, egalitarian ethos.





अहोम काल की पेड़ की छाल पर एक बनी पेंटिंग।

A painting on tree-bark , Ahom period.



असम के सुप्रसिद्ध भक्ति संत शंकर देव, एवं उनका ग्रन्थ कीर्तन -घोषा , मध्य -15 वीं से मध्य -16 वीं शताब्दी ई.।

Sankara Deva, the renowned Bhakti saint of Assam, and his work, Kirtana Ghosha, mid-15th to mid-16th Cent CE.



अहोम कालीन तोपें, धातु विज्ञान एवं धातु कला में प्रगति का नमूना।

Ahom-era cannons, indicating highly developed metallurgy and metal-casting.



लाचित बरफुकन , अहोम सेनाध्यक्ष एवं सरायघाट के युद्ध (1671 ई.) के नायक , जिसमें मुगलों द्वारा असम विजय का प्रयास विफल रहा।

Lachit Barphukan, Ahom general and hero of Battle of Saraighat, 1671 CE, which thwarted the Mughal invasion of Assam.

जॉयसागर झील , एक झील जिसे राजा रुद्र सिंह ने 17 वीं शताब्दी के अंत में बनवाया था। ऐसे जलाशय जल संरक्षण और सिंचाई इत्यादि के लिए एक वैज्ञानिक पर्यावरणीय समझ का संकेत देते हैं।

Joysagar Lake, a lake built by king Rudra Singha in the late-17th Cent CE. Such reservoirs indicate a scientific enviromental concern for water conservation and irrigation.



सिसोदिया राजचिन्ह , एक चित्र
Sisodiyas emblum, an illustration

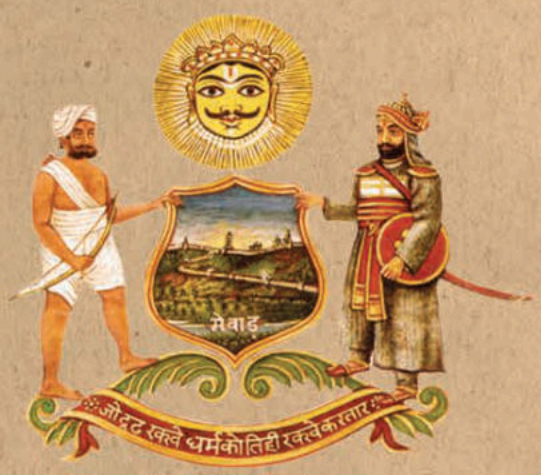


सिसोदिया राजवंश
Sisodiyas

(14वीं से 20वीं शताब्दी ई. लगभग 700 वर्षों तक शासन किया)
(14th-20th Century CE – reigned for nearly 700 years)

सिसोदिया, एक राजपूत राजवंश, ने राजस्थान में मेवाड़ पर 14वीं-20वीं शताब्दी सीई के दौरान शासन किया, जब तक मेवाड़ का स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघ में विलय नहीं हो गया। वे नागड़ा - अहार के गुहिलों के वंशज थे।

The Sisodiyas, a Rajput dynasty , ruled Mewar in Rajasthan from 14th - 20th Cent CE, until its accession to the Indian Union after independence. They were descended from the Guhilas of Nagda-Ahar.



मेवाड़ का राजचिन्ह, भील जनजाति एवं राजपरिवार का ऐतिहासिक गठबंधन दिखते हुए, सामाजिक समता का परिचायक।

Emblem of Mewar Kingdom, showing the historical alliance between the Bhil tribe and the royal family, an indication of egalitarianism.

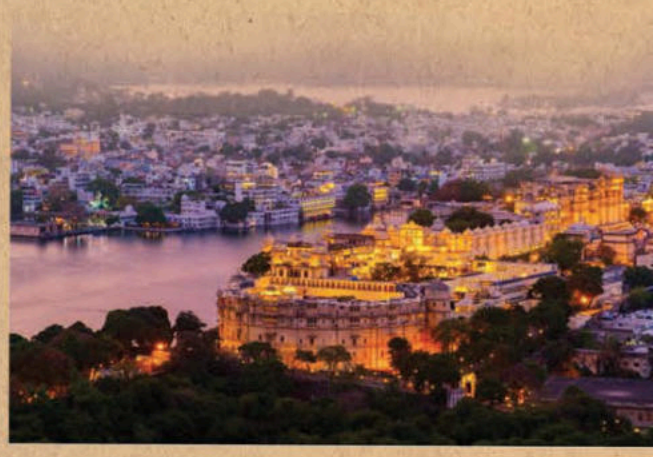


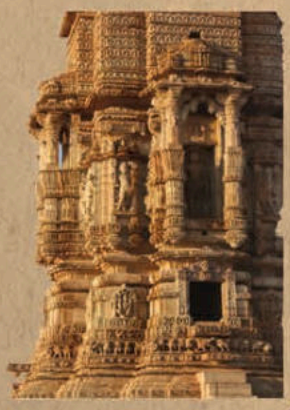
मेवाड़ के राणा कुंभा का एक चित्र 1433-1468 सीई, लगभग 16वीं या 17वीं शताब्दी सीई। इन्हें सबसे महान सिसोदिया शासकों में गिना जाता है।

A portrait of Rana Kumbha of Mewar (reigned 1433-1468 CE), circa 16th or 17th Cent CE, counted among the greatest Sisodia rulers.

उदयपुर शहर, राणा उदय सिंह प्रथम द्वारा 1559 सीई में मेवाड़ की नई राजधानी के रूप में स्थापित किया गया। शहर, झील महल के साथ बसा है। यह योजना बद्ध इंजीनियरिंग और चिनाई का एक वैज्ञानिक उदाहरण है।

Udaipur city, founded in 1559 CE by Rana Udai Singh II as the new capital of Mewar. The city, with is lake palace, is a scientific marvel of planning, engineering and masonry.







विजय स्तम्भ, जिसे कीर्ति स्तम्भ भी कहा जाता है, राणा कुम्भा, चित्तौड़गढ़ द्वारा निर्मित, जिसे मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी के नेतृत्व में संयुक्त गुजरात और मालवा सैनिकों पर अपनी जीत की स्मृति में, 15वीं शताब्दी सीई, में बनवाया गया था। यह सिसोदियों के सैन्य बल का एक प्रमाण है।

Vijaya Stambha, also called the Kirti Stambha, built by Rana Kumbha, Chittorgarh, to commemorate his victory over the combined Gujarat and Malwa armies, led by Malwa's Sultan Mahmud Khilji , 15th Cent CE, a proof of the military prowess of the Sisodiyas.



राजस्थानी कवी दुरसा आढ़ा , 1535-1655 ई., जिन्होंने मुग़ल - मेवाड़ संघर्ष के दौरान महाराणा प्रताप की प्रशंसा में कविताएं लिखीं।

Rajasthani poet Dursa Arha, 1535-1655 CE, who composed poetry praising Maharana Pratap in course of the Mughal-Mewar struggle.



महाराणा प्रताप और सम्राट अकबर के बीच हल्दीघाटी के युद्ध को दर्शाती पेंटिंग, 1576 सीई, मेवाड़ शैली, 19वीं शताब्दी सीई।

Painting depicting the battle of Haldighati between Rana Pratap Singh and Emperor Akbar, 1576 CE, Mewar school of painting, 19th Cent CE.



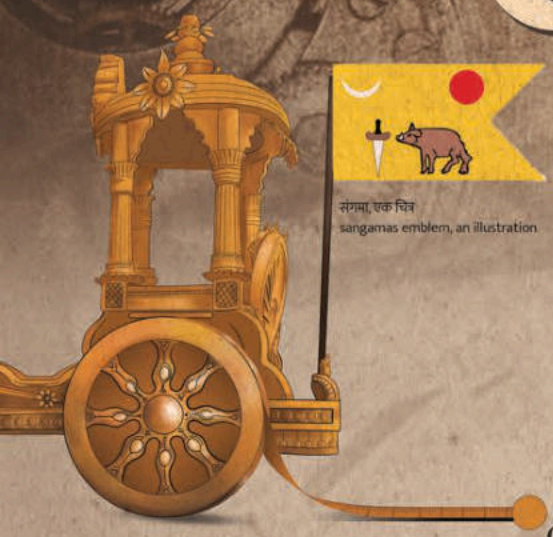
राजपुताना चित्रकला शैली में राजा रवि वर्मा द्वारा महाराणा प्रताप (शासनकाल 1572-1597 सीई) का चित्र। सिसोदिया वंश के महानतम शासकों में से एक, उन्होंने अपने पूरे शासनकाल में मुगलों के खिलाफ कड़ा प्रतिरोध किया।

Portrait of Maharana Pratap Singh (reigned 1572-1597 CE) by Raja Ravi Varma, in the Rajputana painting style. Among the greatest rulers of the Sisodia dynasty, he put up staunch resistance against the Mughals throughout his reign.

कुम्भलगढ़ किला, राजस्थान, राणा कुम्भा द्वारा निर्मित, 15वीं शताब्दी सीई। इसकी दीवार दुनिया की दूसरी सबसे लंबी दीवार (चीन की महान दीवार के बाद) है, जो चिनाई का एक वैज्ञानिक चमत्कार है।

Kumbhalgarh Fort, Rajasthan, built by Rana Kumbha, 15th Cent CE. Its wall is the second longest wall in the world (after the Great Wall of China), a scientific marvel of masonry.





संगमा, एक चित्र
sangamas emblem, an illustration



संगम
Sangamas

14वीं से 15वीं शताब्दी ई. लगभग 150 वर्षों तक शासन किया
(14th-15th Century CE – reigned for nearly 150 years)

1336-1485 सीई के दौरान शासन करने वाले संगमा वंश ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की, जिसमें वर्तमान कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल और गोवा और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से शामिल थे। दो भाइयों, हरिहर प्रथम और बुक्का राय प्रथम को राजवंश की स्थापना का श्रेय दिया जाता है।

The Sangama dynasty, who ruled from 1336 CE - l485 CE, founded the Vijayanagara Empire, which comprised areas in present-day Karnataka, Andhra Pardesh, Telangana, Tamil Nadu, Kerala, and parts of Goa and Maharashtra. Two brothers, Harihara I and Bukka Raya I are credited with founding the dynasty.



संगमा वंश का राजचिन्ह, वराह, ख़ंजर, सूर्य एवं चन्द्रमा, जिसे अगले सभी विजयनगरीय राजवंशों ने यथास्थिति रखा।

Emblem of the Sangamas, boar, dagger, sun and moon, which was retained by all subsequent Vijayanagara dynasties.





सम्राट देव राय प्रथम के सोने के सिक्के, जो महानतम संगमा शासकों में गिने जाते हैं, 15वीं शताब्दी सीई।

Gold coins of Emperor Deva Raya I, counted among the greatest Sangama rulers, 15th Cent CE.



हरिहर प्रथम, संगमा वंश और विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक, के 'पगोडा' सिक्के 14 वीं शताब्दी सीई।

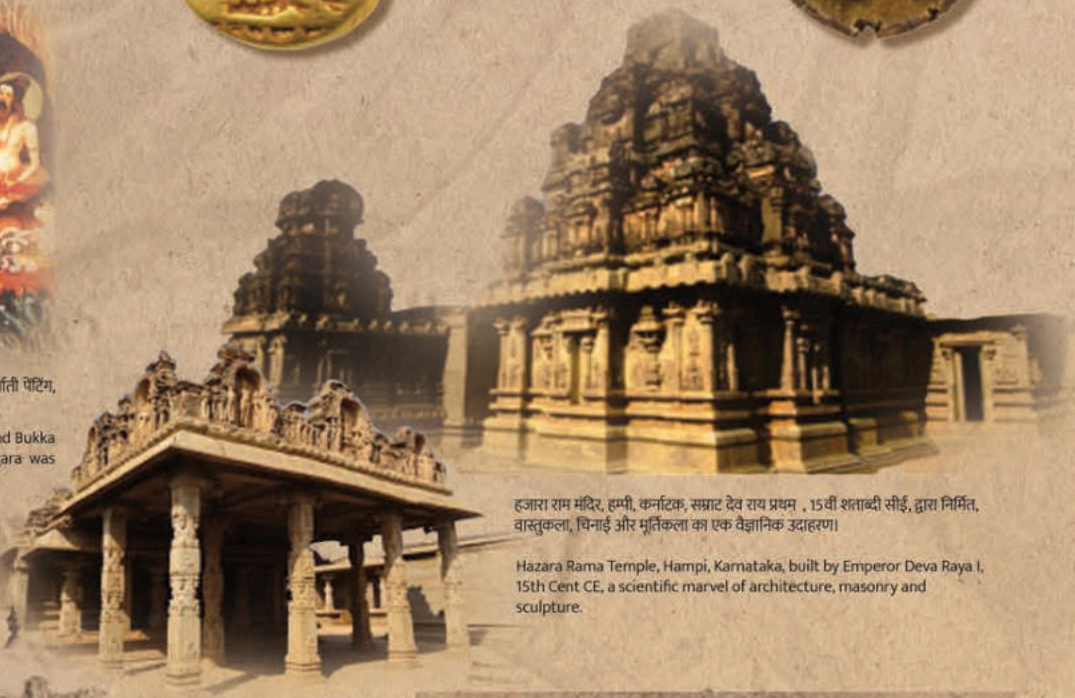
The 'pagoda' coins of Harihara I, Sangama dynasty's and the Vijayanagara Empire's founder, 14th Cent CE.





भाइयों - हरिहर और बुक्का राय प्रथम - और संत विद्यारण्य के बीच मुलाकात को दर्शाती पेंटिंग, जिनके आशीर्वाद से विजयनगर की स्थापना हुई थी।

Painting depicting the meeting between the brothers Harihara I and Bukka Raya I, and the saint Vidyranya, with whose blessings Vijayanagara was founded.



हजारा राम मंदिर, हम्पी, कर्नाटक, सम्राट देव राय प्रथम , 15वीं शताब्दी सीई, द्वारा निर्मित, वास्तुकला, चिनाई और मूर्तिकला का एक वैज्ञानिक उदाहरण।

Hazara Rama Temple, Hampi, Karnataka, built by Emperor Deva Raya I, 15th Cent CE, a scientific marvel of architecture, masonry and sculpture.



मल्लिकार्जुन मंदिर, मालपनागुडी, होस्पेट, कर्नाटक देव राय प्रथम द्वारा निर्मित 15 वीं शताब्दी सीई।

Mallikarjuna Temple, Malapanagudi, Hospet, Karnataka, built by Deva Raya I, 15th Cent CE.

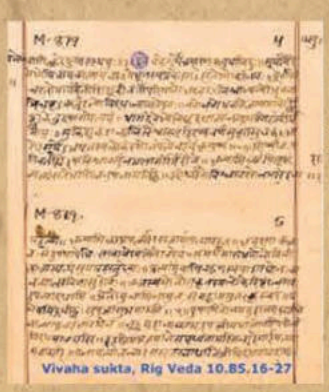


देव राय प्रथम का कन्नड़ शिलालेख, हजारा राम मंदिर, 15वीं शताब्दी सीई। देशी भाषाएँ संगमा वंश के अधीन विकसित होती रहीं।
Kannada inscription of Deva Raya I, Hazara Rama Temple, 15th Cent CE. Vernacular languages kept developing under Sangamas.



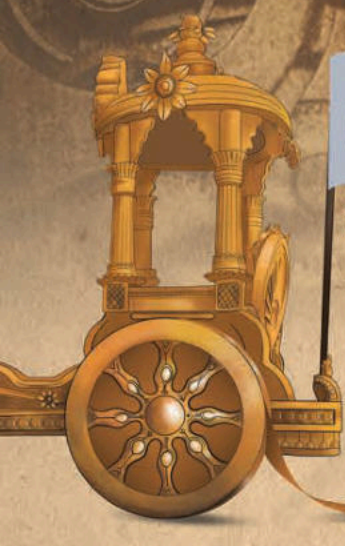
हजारा राम मंदिर का एक पट्ट संगमा शासकों के अधीन विजयनगर का सैन्य बल दिखाते हुए, जिसमें धनुर्धर , पैदल सैनिक, घुड़सवार और हाथी शामिल है।

Panel from Hazara Rama Temple depicting Vijayanagara army under Sangamas, comprising archers, infantry, cavalry and elephants.



ऋग्वेद संहिता पर सायन की टिप्पणी का एक अंश, 14वीं शताब्दी सीई। सायन बुक्का राय प्रथम के दरबार के विद्वानों में से एक थे। संस्कृत में कई महत्वपूर्ण कार्य संगमा राजाओं द्वारा प्रायोजित किए गए थे, जो अध्ययन को बढ़ावा देने की संस्कृति का संकेत देते हैं।

A portion of Sayana's commentary on the Rig Veda Samhita, 14th Cent CE. Sayana was one of the resident scholars at Bukka Raya I's court, and many important works in Sanskrit were sponsored by the Sangama kings, indicating a culture of fostering scholarship.





वाडियार राजचिन्ह, एक चित्र
Wadiyar emblem, an illustration



वाडियार (वोडेयार)
Wadiyars (Wodeyars)

(14वीं से 20वीं शताब्दी ई. लगभग 700 वर्षों तक शासन किया)

(14th-20th Century CE – reigned for nearly 700 years)

वाडियार राजपरिवार ने 14वीं शताब्दी के बाद से स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघ में शामिल होने तक, आज के कर्नाटक में मैसूर पर शासन किया। वे शुरू में विजयनगर साम्राज्य के अधीनस्थ रहे, बाद में संप्रभु शासक बन गए।

The Wadiyars ruled Mysore in present-day Karnataka from the 14th Century onwards until its accession to the Indian Union after independence. Initially subordinates of the Vijayanagara Empire, they later became sovereign rulers.

कृष्णराज वाडियार के सोने के सिक्के, लगभग 18वीं सदी के अंत से लेकर 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक।

Gold coins of Krishnaraja Wadiyar, circa late-18th to early-19th Cent CE.





वाडियार राजवंश के अधीन मैसूर के आग्नेयास्त्र, तकनीकी प्रगति दर्शाते हुए।

Mysore artillery under Wadiyars, indicating technological advancement.



Wadiyar emblem.
वाडियार राजचिन्ह।



राजा चिक्कादेवराज वाडियार (शासनकाल 1673-1704 सीई) की पेंटिंग, जिनके शासनकाल में मैसूर का बहुत विस्तार हुआ।

Painting of King Chikkadevaraja Wadiyar (reigned 1673-1704 CE), in whose reign the kingdom of Mysore expanded greatly.



मैसूर राजमहल। हालांकि, सबसे पुरानी संरचना राजवंश के पूर्वज, यदुराया द्वारा 14वीं शताब्दी सीई में बनाई गई थी, लेकिन जब आग से पुराना ढांचा नष्ट हो गया तब वर्तमान संरचना 19वीं शताब्दी सीई में बनाई गई थी। भारतीय और यूरोपीय प्रभावों को मिलाकर बनाया गया यह ढांचा, एक समावेशी और उदार एवं लोकतांत्रिक भावना का संकेत देता है।

Mysore Palace. Although the earliest structure was built by the dynasty's ancestor, Yaduraya in the 14th Cent CE, the present structure was built in the 19th Cent CE after a fire destroyed the older structure. Combining Indian and European influences, it indicates a an inclusive and open-minded democratic ethos.



मैसूर राजमहल प्रांगण के मंदिरों, जैसे की इस महालक्ष्मी मंदिर, का निर्माण वाडियार राजाओं ने 14 वीं शताब्दी सी ई से करवाना शुरू किया।

The temples within the Mysore Palace grounds, such as this Mahalakshmi Temple, were built by Wadiyar kings since 14th Cent CE.



माणिक्य राजचिन्ह
Manikya emblem

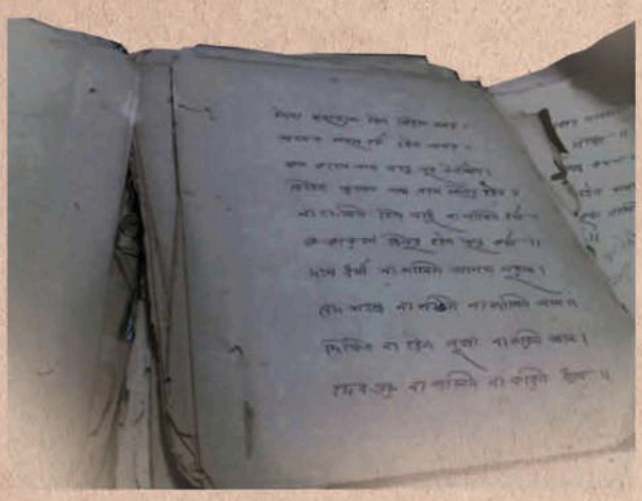


माणिक्य
Manikyas

15वीं से 20वीं शताब्दी ई लगभग 600 वर्षों तक शासन किया
(15th-20th Century CE – reigned for nearly 600 years)

माणिक्य राजवंश ने त्रिपुरा और उत्तर-पूर्वी भारत के अन्य हिस्सों पर शासन किया, जिसे पूर्व ब्रिटिश भारत में 'द किंगडम ऑफ द्विप्रा' के रूप में "जाना जाता है। इनका शासन 15वीं शताब्दी से स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघ में विलय तक अस्तित्व में रहा।

Tha Manikya dynasty ruled Tripura and other portions of North-Eastern India, known as 'the Kingdom of Twipra' in pre-British India, from the 15th Cent CE till its accession to the Indian Union after independence .



श्रीराजमाला , जो कि बंगला में लिखित माणिक्य वंश का इतिहास है, का एक पृष्ठ । इसका प्रारम्भ राजा धर्म माणिक्य ने 15 वीं शताब्दी ई . में कराया था , और अगले शासकों द्वारा इसमें इजाफ़ा किया गया । माणिक्य शासन में बांग्ला को आधिकारिक दर्जा मिलना उसके विकास में मददगार साबित हुआ ।

A page from a manuscript of the Shree Rajmala, a chronicle of the Manikya dynasty, written in Bangla. Commissioned by king Dharma Manikya I in the 15th Cent CE, portions were added to it under subsequent kings. Official status to Bangla under Manikyas aided the vernacular's growth.



राजा विजय माणिक्य II (शासनकाल 1523-1563) का सिक्का । उनके शासनकाल में माणिक्य शासन का बहुत विस्तार हुआ।

Coin of King Vijaya Manikya II (reigned 1523-1563 CE), the greatest of the Manikya rulers. The kingdom greatly expanded in his reign.



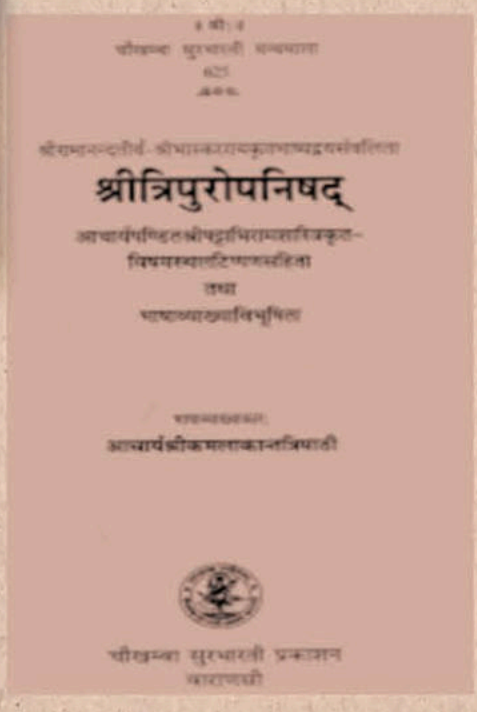
त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, जिसे माताबारी के नाम से भी जाना जाता है, उदयपुर, त्रिपुरा में एक शक्ति पीठ है, जिसे राजा धन्य माणिक्य ने 16वीं शताब्दी में बनवाया था। यह बंगाली एकरत्ना या 'देउल' शैली का अनुसरण करता है, जहां मंदिर में कोई मंडप नहीं होता है, लेकिन भीतर गर्भगृह के साथ केवल केंद्रीय मंदिर (देउल) होता है।

Tripura Sundari Temple, also known as Matabari, at Udaipur, Tripura, a Shakti Peetha, built by king Dhanya Manikya, 16th Cent CE. It follows the Bengali 'Ekratna'or 'Deul' style, where the temple does not contain any mandapa but only the central shrine (deul) with the sanctum within.



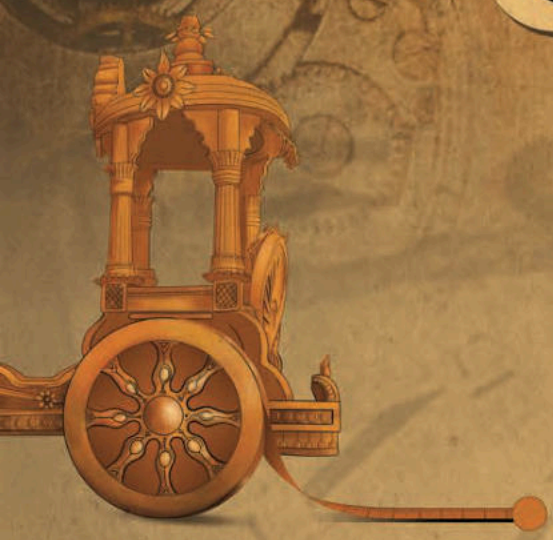
गुनाबती मंदिर परिसर, उदयपुर, त्रिपुरा, राजा गोविंदा माणिक्य की रानी गुनाबती द्वारा 1668-1669 सीई में निर्मित किया गया था। ईंट और टेराकोटा बंगाली स्थापत्य का प्रभाव दिखाते हैं। रानियों द्वारा प्रायोजित इमारतें उनकी महत्ता और साथ ही एक समावेशी और समतावादी लोकाचार को दर्शाती हैं।

Gunabati Temple Complex, Udaipur, Tripura, built by Queen Gunabati, the consort of King Govinda Mankiya, 1668-1669 CE, brick and terracotta, showing Bengali architectural influences. Queens sponsoring buildings shows their prominence, which in turn shows an inclusive and egalitarian ethos.



श्रीत्रिपुरोपनिषद्

त्रिपुरोपनिषद , शाक्त दर्शन का एक प्रमुख ग्रंथ, त्रिपुरा, 15 वीं शताब्दी सी ई ।
Tripuropanishad, a major work in Shakta philosophy, Tripura, 15th Cent CE.





गजपति
Gajapatis

15वीं से 16वीं शताब्दी ई. लगभग 200 वर्षों तक शासन किया
(15th-16th Century CE – reigned for nearly 200 years)

गजपति वंश ने उड़ीसा, पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों और आंध्र प्रदेश पर 15वीं शताब्दी के मध्य से 16वीं शताब्दी के मध्य तक शासन किया। उत्थान के अपने चरम काल में उनका साम्राज्य उत्तर में गंगा से लेकर दक्षिण में कावेरी तक फैला हुआ था।

The Gajapati dynasty ruled Orissa , parts of West Bengal and Andhra Pradesh from mid-15th - mid-16th Cent CE. At its peak, their empire stretched from the Ganga in the North to Kaveri in the South..



प्रतापरूद्र देव ,महानतम गजपति शासकों में से एक, की प्रतिमा, 15वीं शताब्दी के अंत से 16वीं शताब्दी के मध्य तक।

Statue of Prataparudra Deva, among the greatest Gajapati rulers, late-15th to mid-16th Century CE.



गजपति राजवंश के संस्थापक कपिलेंद्र देव की मूर्ति, 15वीं शताब्दी सीई।

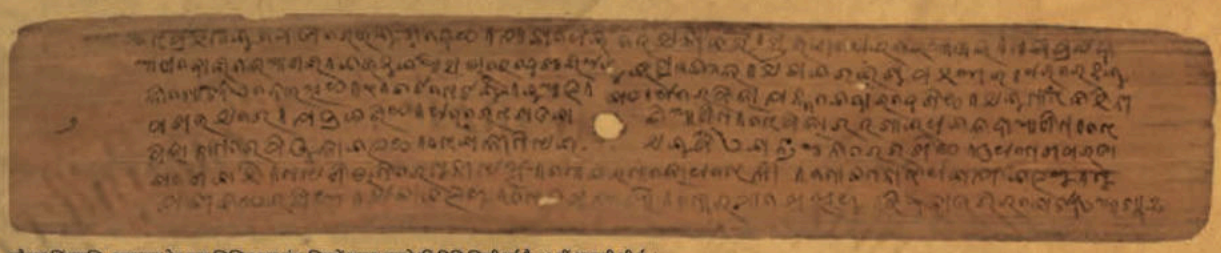
Statue of Kapilendra Deva, the Gajapati dynasty's founder, 15th Cent CE.



कपिलेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर, जिसे राजा कपिलेंद्र देव द्वारा 1434-1466 सीई में निर्मित करवाया गया था, कलिंग शैली में निर्मित ।

Kapileshwara Temple, Bhubaneshwar, built by King Kapilendra Deva, 1434-1466 CE, built in the Kalinga style.





कौतुक चिंतामणि , प्रतापरुद्र देव द्वारा लिखित एक ग्रंथ, जिसमें बारूद बनाने की विधि लिखी हुई है, 16 वीं शताब्दी सी ई ।

Kautuka Chintamani, a text by Prataparudra Deva containing techniques for manufacturing gunpowder, 16th Cent CE.

गजपतियों के तहत, वैष्णव भक्ति संत चैतन्य महाप्रभु ने आध्यात्मिक लोकतंत्र और समतावाद के अपने संदेश को इस तरह से फैलाया – "कृष्ण के संदेश को आप सभी में प्रसारित करें, मैं इस भूमि पर बसने वाले सभी का उद्धार करने का आदेश देता हूं।"

Under Gajapatis, the Vaishnava Bhakti saint Chaitanya Mahaprabhu spread his message of spiritual democracy and egalitarianism through such passages- "Spread Krishna's message to everyone you see, I decree, salvage everyone in this land."



कुरुम्बरा किला, पश्चिम बंगाल, कपिलेंद्र देव द्वारा निर्मित, 15 वीं शताब्दी सीई। ऐसे किले सैन्य दृष्टि से अति महत्वपूर्ण थे।

Kurumbera Fort, West Bengal, built by Kapilendra Deva, 15th Cent CE. Such forts were important military assets.



नरेंद्र सरोवर झील, पुरी, कपिलेंद्र देव द्वारा निर्मित, 15 वीं शताब्दी सीई। ऐसे जलाशय जल संरक्षण के संबंध में एक वैज्ञानिक पर्यावरणीय समझ को दर्शाते हैं।

Narendra Sarovar lake, Puri, built by Kapilendra Deva, 15th Cent CE. Such reservoirs reflect a scientific environmental concern regarding water conservation



राजा कपिलेंद्र देव का लिंगराज मंदिर अभिलेख, 15वीं शताब्दी सीई।

The Lingaraja Temple Inscription of King Kapilendra Deva, 15th Cent CE.



प्रतापरुद्र देव के शासनकाल से बाल गोपाल की मूर्ति का एक हिस्सा, 15 वीं शताब्दी के अंत से 16 वीं शताब्दी के मध्य तक। राजा प्रतापरुद्र वैष्णव पंथ में विश्वास करते थे, वह वैष्णव संत श्री चैतन्य के भी भक्त थे, जो उनके शासनकाल के दौरान उड़ीसा में रहते थे।

A portion of a statue of Bala Gopala from the reign of Prataparudra Deva, late-15th to mid-16th Cent CE. An ardent Vaishnava, he was also a devotee of the Vaishnava saint Shree Chaitanya, who lived in Orissa during his reign.



संगमा, एक चित्र
sangamas emblem, an illustration



सालुवास और तुलुवास
Saluvas and Tuluvas

15वीं से 16वीं शताब्दी ई. लगभग 200 वर्षों तक शासन किया
(15th-16th Century CE – reigned for nearly 200 years)

विजयनगर साम्राज्य के एक शासक वंश, सलुव, पुराने संगमा वंश के उत्तराधिकारी बने। प्रारंभ में संगमा वंश के सामंत थे, और उन्होंने 1485 सीई में सत्ता पर कब्जा कर लिया, और 1505 सीई तक शासन किया, जब तुलुव वंश सत्ता में आया, जो शक्तिशाली सेनापतियों के वंशज थे। 1570 सीई में तुलुव वंश के पतन ने विजयनगर साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया शुरू की। कृष्णदेव राय इस वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक थे।

The Saluvas, a ruling dynasty of the Vijayanagara Empire, succeeded the older Sangama dynasty. Initially noblemen of the Sangamas, they seized power in 1485 CE, and ruled till 1505 CE, when the Tuluva dynasty came to power. From a lineage of powerful generals, the collapse of the Tuluva dynasty in 1570 CE began the process of disintegration of the Vijayanagara Empire. Krishnadeva Raya was the most famous ruler of this dynasty.



सालुवा नरसिम्हा (लगभग 15वीं सदी के अंत में) के तहत जारी किया गया तुम्बारागुडी टैंक ताम्रपत्र शिलालेख। सामाजिक दृष्टि से वंचित नाइयों, मैला ढोने वालों, कुम्हारों, लुहारों आदि को दान का उल्लेख एक लोकतांत्रिक, समावेशी और समतावादी लोकाचार को इंगित करता है।

Tumbaragudi Tank Copperplate Inscription issued under Saluva Narasimha (circa late-15th Cent CE). The mention of endowments to barbers, scavengers, potters, ironsmiths etc, socially disadvantaged, indicates a democratic, inclusive and egalitarian ethos.

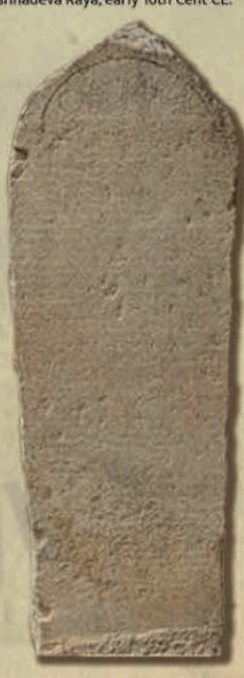


कृष्णदेव राय के स्वर्ण 'पैगोडा' सिक्के, 16वीं शताब्दी सीई की शुरुआत में।
Gold 'pagoda' coins of Krishnadeva Raya, early 16th Cent CE.



कृष्णदेव राय की उनकी रानियों चिन्नादेवी और थिरुमालादेवी के साथ मूर्ति, 16वीं शताब्दी ई.। मनुचरित्रमु और अत्ताथवनव्यवाहर तंत्र जैसे ग्रंथ उसके शासन के तहत लोकतांत्रिक प्रणाली तथा स्थानीय स्वशासन के बारे में महत्वपूर्ण विवरण देते हैं।

Sculpture of Krishnadeva Raya with his queens Chinnadevi and Thirumaladevi, 16th Cent CE. Texts such as Manucharitramu and Attathavanavyavahara Tantra give important details regarding democratic local self-governance under his rule.



कृष्णदेव राय का कन्नड़ शिलालेख, कृष्ण मंदिर, हम्पी, 1513 सीई, जो गजपति सेनाओं पर उनकी जीत का वर्णन करते हुए, उनके अधीन विजयनगर की सैन्य शक्ति को साबित करता है।

Kannada inscription of Krishnadeva Raya, Krishna Temple, Hampi, 1513 CE, describing his victory over the Gajapati armies, proving the military prowess of Vijayanagara under him.



कृष्णदेव राय द्वारा अपने दरबार में बैठे तेलुगु कविता के 'अष्टदिग्गज' या 'आठ महान' को दर्शाती एक मूर्ति। उनका शासनकाल तेलुगु कविता का स्वर्ण युग था, और राजा स्वयं एक कुशल लेखक थे, जो तेलुगु और संस्कृत दोनों में लिखते थे।

A sculpture depicting the 'Ashtadiggajas' or 'The Eight Greats' of Telugu poetry patronized by Krishnadeva Raya seated in his court. His reign was the golden age of Telugu poetry, and the king was an accomplished author himself, writing in both Telugu and Sanskrit.



कृष्णदेव राय द्वारा कर्नाटक के हम्पी के पास निर्मित अनंतसयन मंदिर। उन्होंने पूरे दक्षिण भारत में मंदिरों को दान दिया था।
Ananthasayana Temple, near Hampi, Karnataka, built by Krishnadeva Raya. He endowed temples across Southern India.



16 वीं शताब्दी का एक चित्र कृष्णदेव राय की सेना में पुर्तगाली बंदूकवाही एवं तोपची सैनिकों को दर्शाते हुए, वैज्ञानिक मुक्त चिंतन एवं सैन्य तकनीक में मुक्त प्रवाह का सबूत।

16th Cent painting depicting Portuguese artillerymen and gunmen in Krishnadeva Raya's army, a proof of scientific open mindedness and free flow in military technology .





वैष्णव दार्शनिक व्यासतीर्थ (15 वीं से 16 वीं शताब्दी सी ई), जिन्हें कृष्णदेव राय का पराश्रय प्राप्त था, द्वारा लिखित प्रमुख ग्रंथ न्यायामृत , अद्वैत दर्शन के खण्डन में।

Vaishnava philosopher Vyasatirtha (15th-16th Cent CE), patronized by Krishnadeva Raya, whose major work Nyayamrita critiqued Advaita philosophy.



कूच बिहार का राजचिन्ह ।
Emblem of Cooch Behar kingdom.



कोच वंश
Kochs

16वीं से 20वीं शताब्दी ई. लगभग 500 वर्षों तक शासन किया
(16th-20th Century CE – reigned for nearly 500 years)

कोच वंश ने उत्तरी बंगाल और असम में 16 वीं शताब्दी सीई से स्वतंत्रता के बाद भारतीय संघ में अपने राज्य के एकीकरण तक शासन किया। वे तीन शाखाओं में विभाजित थे -- कोच हाजो और खासपुर साम्राज्य -- जो क्रमशः अहोम और कचारी साम्राज्य में समाहित हो गए, और कूच बिहार साम्राज्य, जो सबसे लंबे समय तक जीवित रहा।

The Koch dynasty ruled over areas in Northern Bengal and Assam from 16th Cent CE, till the integration of their kingdom into the Indian Union after independence. They split into three branches- the Koch Hajo and Khaspur kingdoms, which got absorbed into the Ahom and Kachari kingdoms respectively, and the Cooch Behar kingdom, which survived the longest.



मधावदेव , शंकरदेव के शिष्य एवं वैष्णव दार्शनिक, जिन्होने जन्म रहस्य तथा नाम घोषा जैसे ग्रन्थों द्वारा वैष्णव दर्शन को संगठित किया, लगभग 16 वीं शताब्दी सी ई ।

Madhavadeva, disciple of Sankar Deva, Vaishnava philosopher, who consolidated Vaishnava philosophy with such works as 'Janma Rahasya' and 'Nama Ghosha', circa 16th Cent CE.



राजा नरनारायण का सिक्का, 16वीं शताब्दी।
Coin of king Naranarayana, 16th Century CE.



राजा नरनारायण (1554-1587 तक शासन), सबसे महान कोच शासक, जिनके काल में राज्य का बहुत विस्तार हुआ, का एक चित्र।
A portrait of king Naranarayana (reigned 1554-1587), the greatest Koch ruler, who greatly expanded the kingdom.



कामतेश्वरी मंदिर, दिनहाटा, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल, राजा प्राण नारायण द्वारा 1665 ईस्वी में बनवाया गया।

Kamteshwari Temple, Dinhata, Cooch Behar, West Bengal, built by king Pran Narayan in 1665 CE.



18वीं शताब्दी की एक तोप ।
18th Cent Cannon.



विष्णुपुर सतरा, वह जगह जिसके बारे में यह माना जाता है कि यहां वैष्णव भक्ति संत शंकर देव और उनके शिष्य माधव ने 16वीं शताब्दी में समाधि ली थी। कोच राजाओं के अधीन, शंकर देव और उनके शिष्यों ने उत्तरी बंगाल में वैष्णववाद का प्रसार किया। आध्यात्मिक लोकतंत्र का प्रचार करते हुए, उन्होंने ईश्वरीय खोज में उच्च या निम्न-जन्म, विद्वान या आम आदमी के बीच सभी मतभेदों का खंडन किया।

Vishnupur Satra, the spot where the Vaishnava Bhakti saint Sankar Deva and his disciple, Madhava, are believed to have taken Samadhi, 16th Cent CE. Under Koch kings, Sankar Deva and his disciples spread Vaishnavism in Northern Bengal. Preaching spiritual democracy, he disregarded all differences between high or low-born, learned or layman in divine pursuit.





मदुरै और तंजावुर नायकों
Madurai and Thanjavur Nayakas

16वीं से 18वीं शताब्दी ई. लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(16th-18th Century CE – reigned for nearly 300 years)

मदुरै नायकों ने तमिलनाडु में मदुरै और आस-पास के क्षेत्रों पर 16वीं-18 वीं शताब्दी के दौरान शासन किया। प्रारंभ में विजयनगर साम्राज्य के शासक, जोकि बाद में स्वतंत्र शासक बन गए।

The Madurai Nayakas ruled Madurai and adjoining regions in Tamil Nadu early-16th - 18th Cent CE. Initially governors of the Vijayanagara Empire, they later became independent rulers.



16वीं शताब्दी ई.पू. के दौरान मदुरै नायकों का प्रारंभिक सिक्का।
The early coin of Madurai Nayakas, 16th Cent CE.

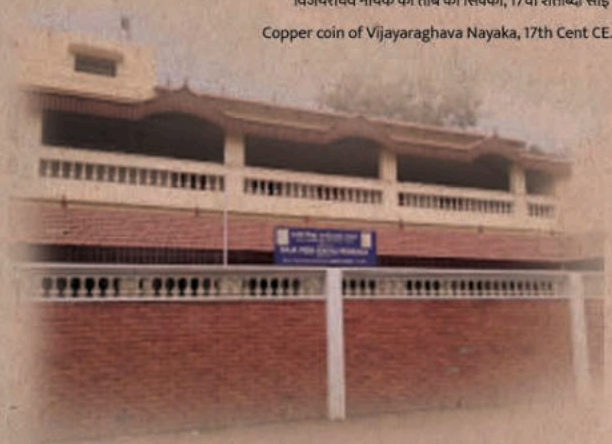




विजयराघव नायक का तांबे का सिक्का, 17वीं शताब्दी सीई
Copper coin of Vijayaraghava Nayaka, 17th Cent CE.

मदुरै में तिरुमाला नायक की एक मूर्ति। उन्होंने 1623 और 1659 के बीच मदुरै पर शासन किया। उनका योगदान मदुरै की कई शानदार इमारतों और मंदिरों में पाया जाता है। वह बीजापुर सल्तनत और अन्य पड़ोसी मुस्लिम राज्यों की सेनाओं से लगातार खतरे को सफलतापूर्वक खदेड़ने में कामयाब रहे।

A statue of Tirumala Nayaka in Madurai. He ruled Madurai between A.D 1623 and 1659. His contributions are found in the many splendid buildings and temples of Madurai. He managed to repulse successfully constant threat from the armies of Bijapur Sultanate and the other neighbouring Muslim kingdoms.



राजवेद काव्य पाठशाला, तमिलनाडु के तंजावुर जिले के कुम्भकोणम में स्थित है। गोविंदा दीक्षित द्वारा 1542 सीई में स्थापित, यह आज भी वैदिक शिक्षा सीखने का एक केंद्र है।

Raja Veda Kavya Patasala, is located at Kumbakonam, Thanjavur district of Tamil Nadu. Established in 1542 CE by Govinda Dikshita, it is even today a centre for learning Vedic education.



नायक दरबारी चित्र,17वीं सदी ई०।
Painting depicting a Nayaka court, 17th Cent CE.



थिरुमाला नायक द्वारा 17वीं शताब्दी में निर्मित, थिरुमलइ नायकर पैलेस, मदुरै, तमिलनाडु।
Thirumalai Nayakar Palace, Madurai, Tamil Nadu, built by Thirumala Nayaka, 17th Cent CE.



प्राचीन चितिरई उत्सव , मदुरै , मीनक्षी और शिव के विवाह के उपलक्ष्य पर । तंजावुर नायक, जोकि शुरू में विजयनगर साम्राज्य के शासक भी थे, ने 15वीं से 18वीं शताब्दी सीई तक तमिलनाडु में तंजावुर पर शासन किया।

Ancient Chithirai Festival, Madurai, celebrating the marriage of Shiva and Meenakshi. The Thanjavur Nayakas, also initially governors of the Vijayanagara Empire, ruled Thanjavur in Tamil Nadu from 15th to 18th Century CE.



उत्तर और पश्चिम के श्रीरंगम मंदिर टावर (गोपुरम) और मंदिर परिसर के अंदर आठवां प्राकार (मंदिर वॉल स्ट्रीट) और कई हॉल (मंडपम) अच्युथप्पा नायक (1560-1614) द्वारा बनाए गए थे।

The Srirangam Temple towers (Gopurams) of the North and West and the eighth Prakara (temple Wall Street) and several Halls (Mandapam) inside the Temple complex were built by Achuthappa Nayak (1560–1614).

श्रीवेङ्कटमखिविरचिता
चतुर्दण्डीप्रकाशिका



रंगनाथस्वामी मंदिर, श्रीरंगम, तमिलनाडु का स्वर्ण विमान, जोकि अच्युथप्पा नायक (शासनकाल 1560-1614 ई०) द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसकी निरंतर चमक और जटिल अलंकरण धातु विज्ञान और धातु शिल्प में हुई प्रगति को प्रदर्शित करते हैं। तंजावुर और मदुरै नायकों ने कई मंदिरों को दान दिया एवं कई प्राचीन मंदिरों का पुनर्निर्माण और जीर्णोद्धार कराया और उनका विस्तार किया।

Golden Vimana of the Ranganathaswamy Temple, Srirangam, Tamil Nadu, presented by Achuthappa Nayaka (reigned 1560-1614 CE). its continuing lustre and intricate ornamentation indicate advances made in both metallurgy and metalcraft. Both the Thanjavur and Madurai Nayakas made grants and donations to several temples, had several ancient temples rebuilt and renovated, and enlarged them.



चतुर्दंडीप्रकाशिका एक संस्कृत ग्रंथ है, जिसे 17वीं शताब्दी के मध्य में विजयराघव नायक (1590-1673) के एक मंत्री संगीतज्ञ वेंकटमाखिन ने लिखा था। इसने भारत की कर्नाटक संगीत परंपरा में रागों को वर्गीकृत और व्यवस्थित करने के लिए एक सैद्धांतिक मेलाकार्टा प्रणाली की शुरुआत की।

The Chaturdandiprakashika is a Sanskrit treatise written by the musicologist Venkatamakhin, a minister to Vijayarāghava Nāyaka (1590s-1673), in the mid-17th century. It introduced a theoretical melakarta system to classify and organise ragas in the Carnatic music tradition of India.

तंजावुर तोप, जोकि सबसे बड़े पूर्व-आधुनिक तोपों में से एक है, इसे रघुनाथ नायक द्वारा 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में स्थापित किया गया था, जो तंजावुर नायकों की सैन्य शक्ति और धातु विज्ञान में हुई प्रगति को दर्शाता है।

Thanjavur Cannon, among the largest pre-modern cannons, installed by Raghunatha Nayaka, early-17th Cent CE, indicating both military prowess of the Thanjavur Nayakas and the advances made in metallurgy .



संगमा, एक चित्र
sangamas emblem, an illustration



अराविडु
Aravidus

16वीं से 17वीं शताब्दी ई. लगभग 100 वर्षों तक शासन किया
(16th-17th Century CE – reigned for nearly 100 years)

16वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के मध्य तक शासन करने वाले अराविडु, विजयनगर साम्राज्य के अंतिम शासक वंश थे। उनके शासन में राजधानी वेल्लोर (वर्तमान तमिलनाडु) चली गई।

The Aravidus, who ruled from the mid-16th to mid-17th Cent CE, were the last ruling dynasty of the Vijayanagar Empire. Under them, the capital moved to Vellore in present-day Tamil Nadu.



अरविडु वंश के पहले शासक तिरुमाला देव राय (1565-1578 ई) का तांबे का सिक्का।

Copper coin of Tirumala Deva Raya (1565-1578 CE), the first ruler of the Aravidu dynasty.



वेंकट राय III का तमिल शिलालेख, स्थानीय भाषाओं के उपयोग को दर्शाता है। 1605, वेल्लोर

Tamil inscription of Venkata Raya III, 1605, Vellore, indicating the use of vernacular languages.



चंद्रगिरि संग्रहालय में वेंकटपतिराय की मूर्ति। वेंकटपति राया (या वेंकट II, 1585-1614 ई०) पेनुकोंडा, चंद्रगिरि और वेल्लोर में मुख्य स्थानों के साथ विजयनगर साम्राज्य के शासक थे। उसके तीन दशकों के शासन काल में साम्राज्य की ताकत और समृद्धि का पुनरुत्थान हुआ। उसने बीजापुर और गोलकुंडा के दक्कन के सुल्तानों से सफलतापूर्वक निपटा।

Statue of Venkatapatiraya in Chandragiri Museum. Venkatapati Raya (or Venkata II, r. 1585–1614 CE) was ruler of Vijayanagar Empire with bases in Penukonda, Chandragiri and Vellore. His reign of three decades saw a revival of the strength and prosperity of the empire. He dealt successfully with the Deccan sultans of Bijapur and Golkonda.



अराविडु की राजधानी वेल्लोर का किला, चिनाई और वास्तुकला का चमत्कार। 16वीं शताब्दी ई.। इसकी विशाल खाई जलाशय निर्माण में प्रवीणता दर्शाती है।

Vellore Fort, the capital of Aravidus from the 16th Cent CE, a marvel of masonry and architecture. Its massive moat indicates their expertise in waterworks.



कर्नाटक में चित्रदुर्ग जिले के होलालकेरे कृष्ण मंदिर में तिरुमलम्बा, कृष्ण देव राय की बेटी और उनके पति आलिया राम राय के चित्र।

Portrait figures in the Holalkere Krishna temple in Chitradurga district in Karnataka, of Tirumalamba, Krishna Deva Raya's daughter, and her husband Aliya Rama Raya.



वेल्लोर का जलकंडेश्वर मंदिर वास्तुकला, चिनाई और पत्थर काटने में हुई प्रगति को चित्रित करता है। मंदिर के गोपुरम (टॉवर), समृद्ध नक्काशीदार पत्थर के खंभे, बड़े लकड़ी के द्वार और आश्चर्यजनक मोनोलिथ और मूर्तियां पर उत्कृष्ट नक्काशी है।

Jalakandeshwarar Temple, Vellore, portraying advances made in architecture, masonry and stone-cutting. The temple has exquisite carvings on its gopuram (tower), richly carved stone pillars, large wooden gates and stunning monoliths and sculptures.



चन्नबासव पुराण, कन्नड़ में विरुपाक्षपंडिता द्वारा 1584 में रचित एक महाकाव्य शतपदी कविता है। यह पुस्तक भगवान शिव के अवतार के रूप में चन्नबासवन्ना की जीवन गाथा का वर्णन करती है।

Channabasava Purana, written in 1584, is an epic shatpadi poem written by Virupakshapandita in Kannada. This book narrates the life story of Channabasavanna as the incarnation of lord Shiva.



मराठा साम्राज्य का ध्वज।
Flag of the Maratha Empire.



मराठा वंश
Marathas

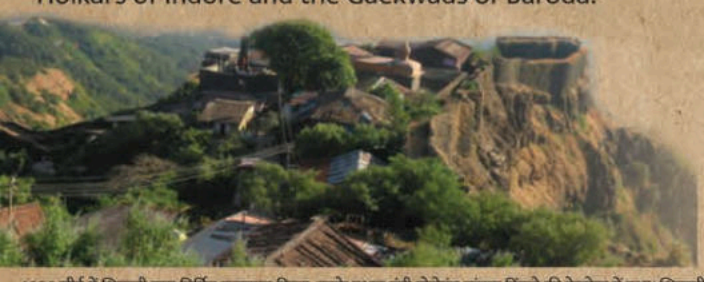
17 वीं से 20 वीं शताब्दी ई. लगभग 400 वर्षों तक शासन किया
(17th-20th Century CE – reigned for nearly 400 years)

मराठा एक मराठी भाषी जातीय समूह थे जो अधिकांशतः भारत के वर्तमान महाराष्ट्र से थे। सार्वभौम मराठा साम्राज्य (स्वराज्य) 1674 सीई में छत्रपति के रूप में शिवाजी के राज्याभिषेक के साथ आरंभ हुा। "रॉयल छाता के रक्षक", संप्रभुता को दर्शाता है। 18वीं शताब्दी में, पेशवा या मंत्री प्रमुखता से ख्याति प्राप्त किय। जबकि 18वीं शताब्दी के अंत में, मराठों द्वारा जीते गए क्षेत्र मराठा सरदारों के संघ में विभाजित हो गए जो पुणे के पेशवा, ग्वालियर के सिंधिया, इंदौर के होल्कर तथा बड़ौदा के गायकवाड़ के रूप में जाने गए।

The Marathas were a Marathi-speaking ethnic group mostly from present-day Maharashtra in India. The sovereign Maratha Kingdom (Swarajya) began in 1674 CE with the coronation of Shivaji as Chhatrapati, "Keeper of the Royal Umbrella", denoting sovereignty. In the 18th Century, the Peshwas or ministers rose to prominence. In the late 18th Century, the territories conquered by the Marathas were divided into a Confederacy of Maratha Chieftains, including the Peshwas of Pune, the Sindhias of Gwalior, the Holkars of Indore and the Gaekwads of Baroda.



महाराष्ट्र के नासिक स्थित त्र्यंबकेश्वर शैव मंदिर और इससे जुड़ा पवित्र तालाब। इस मंदिर की वर्तमान संरचना 18वीं शताब्दी ई. में पेशवा बालाजी बाजी राव द्वारा कराई गई थी।
Triambakeshwar Shiva Temple, Nashik District, Maharashtra, and its attached sacred pond, 18th Cent C.E. The temple's present structure was built by Peshwa Balaji Baji Rao. This pond is the source of the Godavari River.



1656 सीई में शिवाजी द्वारा निर्मित प्रतापगढ़ किला, उनके प्रधान मंत्री मोरोपंत त्र्यंबक पिंगले की देखरेख में हुआ। शिवाजी और बीजापुर के जनरल अफजल खान के बीच ऐतिहासिक मुठभेड़ का स्थल यही था। मराठा किलों के निर्माण में उन्नत वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग चिनाई करने वालों और वास्तुकारों द्वारा किया गया उन्होंने इन किलों को अभेद्य बना दिया।
The Pratapgad Fort, built by Shivaji in 1656 CE, supervised by his prime minister Moropant Triambak Pingle, the site of the historic encounter between Shivaji and the Bijapur general Afzal Khan. In the construction of Maratha forts, advanced scientific knowledge was utilised by the mesons and architects, which made these forts impregnable.



शिवाजी का शाही मुहर। मुहर घोषणा करती है: "शाह के पुत्र शिव की यह मुहर, लोगों के कल्याण के लिए चमकती है और इसका उद्देश्य चंद्रमा के पहले चरण की तरह ब्रह्मांड से बढ़ते सम्मान को प्राप्त करना है।"
Royal seal of Shivaji. The seal proclaims: "This seal of Shiva, son of Shah, shines forth for the welfare of the people and is meant to command increasing respect from the universe like the first phase of the moon."

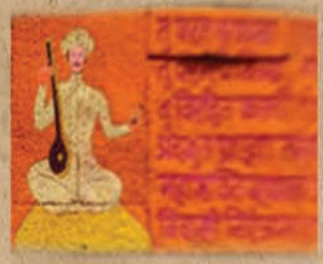


समर्थ रामदास (1608 - 1681 ई०), एक गहरी आध्यात्मिकता, परमात्मा के प्रति समर्पण और एक अनुशासित, सांसारिक, व्यावहारिक जीवन शैली की वकालत करते हैं। रामदास ने अपने दासबोध में महाराष्ट्र धर्म के प्रसार की पुरजोर वकालत की है।
Samarth Ramdas (c. 1608 - c. 1681 CE) advocates a deep spirituality, devotion to the divine, and a disciplined, earthy, practical lifestyle. Ramdas, in his Dasbodh, vigorously advocates the spread of Maharashtra Dharma.



17वीं शताब्दी ई. के शिवाजी के सोने के सिक्के। अग्रभाग पर नागरी कथा तीन पंक्तियों में 'श्री राजा शिव' जबकि विपरीत भाग पर नागरी कथा दो पंक्तियों में 'छत्र पति'।
Gold coins of Shivaji's, 17th Cent C.E. Obverse- Nagari legend in three lines 'Shri Raja Shiv'; reverse- Nagari legend in two lines 'Chhatra Pati'.

संत तुकाराम ने अभंग की रचना की, जो आदिलशाही सल्तनत के अधीन अकाल और दुर्दशा और लोगों की पीड़ा का एक विस्तृत स्पेक्ट्रम देता है।
Saint Tukaram composed Abhangas which give a wide spectrum of famine and plight and sufferings of people under the Adilshahi Sultanate.



सदा माझे डोळे जडो तुझे मूर्ती ।
रखुमाईच्या पती सोयरिया ॥१॥
गोड तुझें रूप गोड तुझें नाम ।
देई मज प्रेम सर्व काळ ॥ध्रु॥







तोप लंबी दूरी की बड़ी-कैलिबर फील्ड बंदूकें थीं जिनका इस्तेमाल ज़मीनी लड़ाई में किया जाता था। पट्टा दोधारी संकरी सीधी तलवारें थीं। जमदादा लोहे के बने थे और नुकीले आकार के थे। तोपखाने के बढ़ते उपयोग के साथ साथ एक अलग विभाग जिसे तोपखाना के नाम से स्थापित किया गया। मराठा हथियारों से पता चलता है कि उनकेपास अत्यधिक कुशल हथियार थे और समकालीन युद्ध के आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल करते थे जो यूरोपीय हथियारों को टक्कर देने में सक्षम थे। मराठों ने इन हथियारों को बनाने में जो वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल किया यह दर्शाता है की वे धातु विज्ञान के प्रभावशाली ज्ञाता थे।
Topha were long-range large-calibre field guns used in field engagement. Patta were double-edged narrow straight swords. Jamadada were made of Iron and shaped like fangs. With the increasing use of the artillery, a separate department called tophakhānā came to be established. The Maratha weapons show that they had highly skilled weaponry and used modern weapons of war that rivalled European weapons. The Marathas used sciettntific methods in manufacturing these weapons and had impressive metallurgical knowledge.

मराठा एडमिरल कान्होजी आंग्रे, जिन्होंने जंजीरा के सिद्दी, अंग्रेजी, डच, पुर्तगाली और फ्रांसीसी से कोंकण का बचाव किया और समुद्र पर संप्रभुता स्थापित की।
Kanhoji Angre, the Maratha Admiral who defended Konkan from the Siddi of Janjira, English, Dutch, Portuguese and French naval interests establishing sovereignty over sea.



बॉम्बे (मुम्बई) में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शुरू किए गए युद्ध में मराठों द्वारा उनकी की छोटी पनडुब्बियों पर हमला करके अपने नियंत्रण में ले लिया गया।
Mahratta grabs and gallivats attacking the British East India Company's sloop of war launched at Bombay.

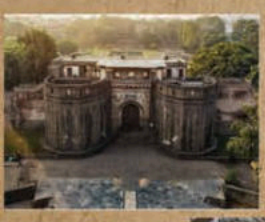




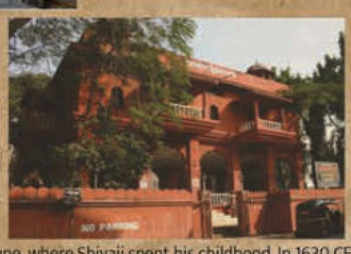
A council of eight ministers of Chhatrapati Shivaji

Ashta Pradhan was a council of eight ministers that administered the Maratha empire. The council was formed in 1674 by founding Emperor ***Chhatrapati Shivaji***. The body discharged the functions of a modern council of ministers; this is regarded as one of the first successful instances of ministerial delegation in India.

The roots of which can be traced back to the ancient Indian system of 'Bara-Balutedar' i.e. Twelve Tradesmen. This system comprised of a group of men pursuing a hereditary profession and getting compensated for their services with the village produce under a complex barter system. Each tradesman was responsible for one particular task that he had been assigned through his forefathers.
These twelve professions were typically, Sonar (goldsmith), Kumbhar (potter), Sutar (carpenter), Lohar (blacksmith), Nhwavi (barber), Parit (washer), Chambhar (cobbler), Teli (oil churner), Shimpi (tailor), Gavandi (mason), Vinkar (weaver), and Gurav (temple caretaker). Each village had a combination of twelve such tradesmen who ensured the self-sufficiency of the village community.

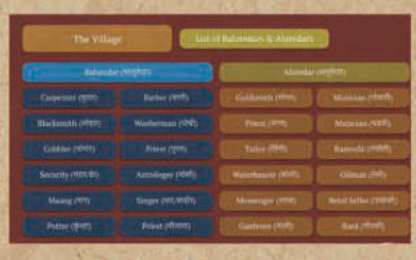


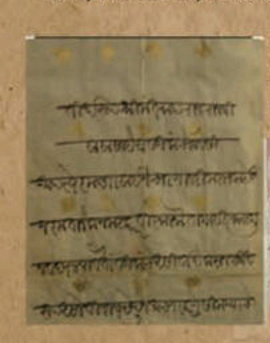
पेशवा बाजी राव प्रथम द्वारा 1732 ई. में निर्मित शनिवार वाडा महल।
Shaniwar Wada, built by Peshwa Baji Rao I in 1732 CE



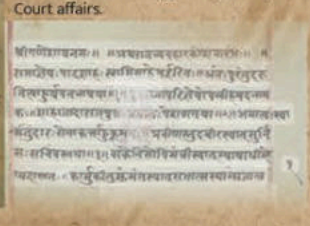
लाल महल, पुणे, जहाँ शिवाजी ने अपना बचपन बिताया। 1630 ई० में शिवाजी के पिता शाहजी भोसले ने इसे अपनी पत्नी जीजाबाई और बेटे के लिए बनवाया था।
The Lal Mahal, Pune, where Shivaji spent his childhood. In 1630 CE, Shivaji's father, Shahji Bhosle, built it for his wife, Jijabai and his son.

जिसकी जड़ें 'बारा-बलुतेदार' यानी बारह ट्रेडमैन की प्राचीन भारतीय प्रणाली में देखी जा सकती हैं। इस प्रणाली में एक वंशानुगत पेशे को अपनाने वाले पुरुषों का एक समूह शामिल था और एक जटिल वस्तु विनिमय प्रणाली के तहत गाँव की उपज के साथ अपनी सेवाओं के लिए मुआवजा प्राप्त कर रहा था। प्रत्येक व्यापारी एक विशेष कार्य के लिए जिम्मेदार था जो उसे उसके पूर्वजों द्वारा उसे सौंपा गया था।
आम तौर पर यह बारह कार्य थे: सोनार (सुनार), कुम्हार (कुम्हार), सुथार (बढ़ई), लोहार (लोहार), न्हावी (नाई), परित (धोबी), चंभार (मोची), तेली (तेल निकालने वाला), शिंपी (दर्जी)), गावंडी (राजमिस्त्री), विंकर (बुनकर), और गुरव (मंदिर के कार्यवाहक)। प्रत्येक गाँव में ऐसे बारह व्यापारी होते थे जो ग्राम समुदाय की आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करते थे।





प्रतिदिन के न्यायालयीन मामलों के लिए संस्कृत शब्दावली के शब्दकोष 'राजवाहवर्कोश' के पृष्ठ।
Folios from 'Rajavahvarkosh', a dictionary of Sanskrit terminology for day to day Court affairs.







गलबत और गुरब में युद्धपोतों की आवश्यक विशेषताएं थीं। चूंकि ये पोत अपनी लंबाई के अनुपात में व्यापक थे, इसलिए उनमें स्थिरता अधिक थी। स्टीयरिंग ने स्टर्न पोस्ट के साथ एक पतवार को लटकाया। एक युद्धपोत के पतवार को लोहे के बोल्ट से सुरक्षित किया गया था, हालांकि सिला हुआ तख़्ता आम था। इन युद्धपोतों के लिए सागौन की लकड़ी पसंद की जाती थी। पतवार को नारियल की जटा और उंडी या मछली के तेल से सुरक्षित किया जाता था।
The Galbat and Ghurab had the essential features of warships. As these vessels were broader in proportion to their length, they had greater stability. Steering entailed a rudder slung along the stern post. The hull of a warship was secured by iron bolts, although sewn planking was common. Teak was the wood of choice for these warships. Hull was secured with coconut coir and undi or fish oil.





राज दरभंगा का शाही प्रतीक चिन्ह, एक चित्र
Raj Darbhangas insignia, an illustration

राज दरभंगा राजवंश

Raj Darbhanga

16वीं से 20वीं शताब्दी ई लगभग 300 वर्षों तक शासन किया
(16th - 20th Century CE- reigned for nearly 300 years)

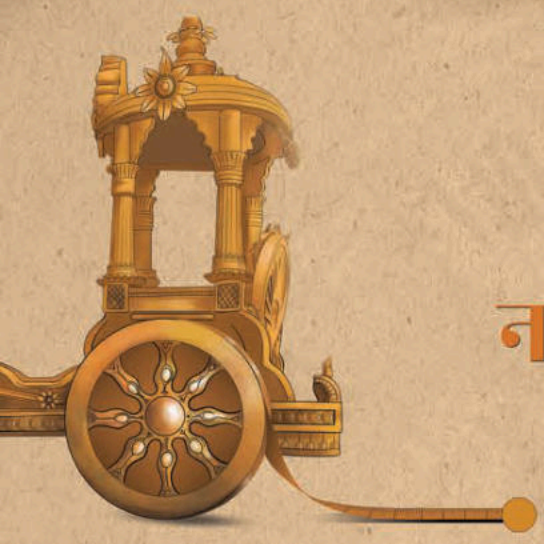
दरभंगा राज, जिसे राज दरभंगा और खंडवाला राजवंश (1557- 1947 C.E.) के नाम से भी जाना जाताहै, ये क्षेत्र अब भारत और नेपाल के बीच विभाजित है। वे मैथिली संस्कृति और मैथिली भाषा के संरक्षक थे।।

The Darbhanga Raj, also known as Raj Darbhanga and the Khandwala dynasty (1557- 1947 C.E.) and they ruled the territories that were part of the Mithila region, now divided between India and Nepal. They were patrons of Maithili culture & Maithli Language.



पुराने दरभंगा किले के खंडहर।
Ruins of the Old Darbhanga Fort.

राज दरभंगा का शाही प्रतीक चिन्ह।
Royal insignia of Raj Darbhangas.



नारायण राजवंश

Narayans



18वीं से 20वीं शताब्दी ई लगभग 250 वर्षों तक शासन किया
(18th - 20th Century CE- reigned for nearly 250 years)

नारायण वंश बनारस या वाराणसी का शासक परिवार था। 18वीं शताब्दी ई में महाराजा बलवंत सिंह जो अवध के गवर्नर थे अवध से अलग होकर बनारस के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

The Narayan dynasty was the ruling family of Benares or Varanasi. In the 18th century CE, Maharaja Balwant Singh seceded from the governorate of Awadh to found the independent kingdom of Benares.



वाराणसी का रामनगर किला जिसे 1750 ई में महाराजा बलवंत सिंह द्वारा निर्मित कराया गया था। यह मुगल और राजपुताना स्थापत्य शैली का सम्मिश्रण है।

The Ramnagar Fort, Varanasi, was built in 1750 C.E. by Maharaja Balwant Singh, blending Mughal and Rajputana architectural styles.



रत्न जड़ित सिंहासन तथा बनारस के राजा का पदचिह्न।
ये 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में धातु-शिल्प में विकास को प्रदर्शित करते हैं।

Jewel-studded throne and footrest of the king of Benares, late-19th Century, exhibiting developments in metal craft.